भृगु जन्म पत्रिका

Name - sample

Date - 11/11/2011 Time - 11:11:00

POB - khatu (rajasthan) INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

Acko Astro

www.ackoastro.com, ackoastro@gmail.com

Contact = +91 8657171000

© Mindsutra's StarLight Premium 11

श्री गणेशाय नमः

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्रीपुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

मुख्य विवरण

लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	11 नवम्बर 2011
जन्म समय	11:11:00
जन्म दिन	शुक्रवार
जन्म स्थान	khatu
राज्य	rajasthan
देश	INDIA
अक्षांश	025:45:00 N
रेखांश	084:10:00 E
स्थानीय समय संस्कार	00:06:40 hrs
स्थानीय समय	11:17:40 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	00:00:00
सांपातिक काल	14:37:47 hrs
इष्ट काल	12: 29: 52 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	2068
शक संवत	1933
संवत्सर	खर
ऋतु	शरद
मास	अग्रहन
पक्ष	कृष्ण
वार	शुक्रवार
तिथि	प्रतिपदा
नक्षत्र (पद)	कृतिका (1)
योग	वारियन
करन	बल्लव

अवकहड़ा चक्र

पाया	लौह
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुश्पद
योनि	मेष (स्त्री)
गण	राक्षस
नाड़ी	अन्त
रज्जु	नाभि
तत्व	पृथ्वी
तत्वाधिपति	बुध
विहग	भारधंक
नाड़ी पद	अन्त
वेध	विशाखा
आद्याक्षर	अ
दशा बैलेंस	सूर्य – 5व00मा024दि0
वर्तमान दशा	चन्द्रमा–बुध–गुरू
भयात	10: 20: 16 Ghati
भभोग	66: 41: 54 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	तुला
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	वृश्चिक
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	024:01:22
देकानेट	2
फेस	IV
सूर्योदय	06:11:12AM
सूर्यास्त	05:03:49PM
जन्मदिन का ग्रह	शुक्र
जन्मसमय का ग्रह	मंगल

लग्न मकर	राशि मेष	नक्षत्र – पद कृतिका – 1
लग्नाधिपति शनि	राशिपति मंगल	नक्षत्रपति सूर्य

नक्षत्र विवरण

नक्षत्र	कृतिका	चरण	1
अधिपति	सूर्य ☉	भाव में	दशम् शुभ
देवता	अग्नि	दिशा	पूर्व
तत्व	पृथ्वी	गोत्र	अंगिरा
प्रभाव	कार्यनाश	पशु	मेष (स्त्री)
पौधे	गूलर, औदुम्बर	पक्षी	मयूर _मोर
कार्य पद्धति	सक्रिय	गुण	रजस

लग्न और राशि विवरण

लग्न विवरण

लग्न	मकर ♑
अधिपति	शनि ♄
तत्व	पृथ्वी
स्वभाव	चर
भाव में	नवम् शुभ
लिंग	स्त्री
के साथ भावेश	

राशि विवरण

राशि	मेष ♈
अधिपति	मंगल ♂
तत्व	अग्नि
स्वभाव	चर
भाव में	अष्टम् अशुभ
लिंग	पुरुष
के साथ भावेश	

राशि देवता	हनुमान जी
मंत्र	**Om Hanumate Namah**
	ॐ हनुमते नमः

इन राशि देवता के मंत्रों का जाप प्रत्येक राशि के इष्टदेवों का आशीर्वाद प्राप्त करने, सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने एवं बाधाओं को दूर करने तथा अच्छे भाग्य को आकर्षित करने के लिए किया जा सकता है।

तत्व — अग्नि

आप आम तौर पर उत्साही, भावुक और आवेगी होते हैं। आप ऊर्जावान हैं, अपनी भावनाओं से प्रेरित हैं और पहल करना पसंद करते हैं। आप अक्सर मिलनसार होते हैं और ध्यान का केंद्र बने रहने का आनंद लेते हैं। आप साहसी भी हैं और अपने कार्यों में काफी प्रतिस्पर्धी हो सकते हैं।

स्वभाव — चर

आप आम तौर पर आरंभकर्ता, नेता और लक्ष्य-उन्मुख होते हैं। आप परिवर्तन और प्रगति की इच्छा से प्रेरित होते हैं, अक्सर नए अवसरों और अनुभवों की तलाश में रहते हैं। आप सक्रिय रहते हैं और अपने कार्यों में काफी मुखर हो सकते हैं। आप साहसी और दृढ़ निश्चयी हैं, आपको प्रतिस्पर्धी क्षेत्रों, खेलों या ऐसे व्यवसायों में सफलता मिल सकती है जिनमें शारीरिक गतिविधि और उच्च ऊर्जा शामिल है।

घात चक्र

कार्तिक अशुभ मास	रविवार अशुभ वार	1 अशुभ प्रहर
मेष अशुभ राशि	मेष अशुभ लग्न	1, 6, 11 अशुभ तिथि
माघ अशुभ नक्षत्र	विषकुम्भ अशुभ योग	बावा अशुभ करन

शुभ बिन्दु

2 मूलांक	8 भाग्यांक	1, 4 मित्रांक
3, 6 शत्रु अंक	17, 19, 22, 26, 28, 31, 35, 37 शुभ वर्ष	शुक्रवार, शनिवार, बुधवार शुभ दिन
शुक्र, शनि, बुध शुभ ग्रह	गुरू, सूर्य अशुभ ग्रह	कर्क, तुला, धनु, कुम्भ मित्र राशि
मेष, कर्क, कन्या, वृश्चिक मित्र लग्न	नीलम शुभ रत्न	नीली, जमुनिया, लाजवर्त शुभ उपरत्न
पन्ना भाग्य रत्न	नरसिंह अनुकूल देवता	लोहा शुभ धातु
श्याम शुभ रंग	पश्चिम दिशा	संध्या शुभ समय
कुलथी, कस्तुरी, कृष्ण गाय, जता शुभ पदार्थ	उड़द शुभ अन्न	तेल शुभ द्रव्य

ग्रह स्थिति (पराशरी)

सूर्य

तुला
24:26:58
विशाखा (2)
सम राशि

चन्द्रमा

मेष
28:44:27
कृतिका (1)
नीच राशि

मंगल

सिहं
06:00:11
मघा (2)
सम राशि

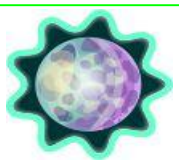

बुध

वृश्चिक
16:48:17
ज्येष्ठा (1)
मित्र राशि

गुरू (व.)

मेष
09:30:47
अश्विनी (3)
स्व नक्षत्र

शुक्र

वृश्चिक
16:59:33
ज्येष्ठा (1)
मित्र राशि

शनि

कन्या
29:33:02
चित्रा (2)
सम राशि

राहु

वृश्चिक
21:38:24
ज्येष्ठा (2)
मित्र राशि

केतु

वृष
21:38:24
रोहिणी (4)
नीच राशि

हर्षल (व.)

मीन
06:57:48
उत्तरभाद्र (2)
नीच राशि

नेपच्यून

कुम्भ
04:06:38
धनिष्ठा (4)
सम राशि

प्लूटो

धनु
11:38:00
मूला (4)
सम राशि

लग्न

मकर
02:50:12
उत्तराषाढ़ (2)
---

1 0वां कस्प

तुला
17:51:40
स्वाति (4)

ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह	व/अ	राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC लग्न		♑ मकर	02:50:12	उत्तराषाढ़ (21)	2		
☉ सूर्य		♎ तुला	24:26:58	विशाखा (16)	2	भ्रात्रि	नीच राशि
☽ चन्द्रमा		♈ मेष	28:44:27	कृतिका (3)	1	अमात्य	सम राशि
♂ मंगल		♌ सिहं	06:00:11	मघा (10)	2	दारा	मित्र राशि
☿ बुध		♏ वृश्चिक	16:48:17	ज्येष्ठा (18)	1	अपत्या	स्व नक्षत्र
♃ गुरू	व.	♈ मेष	09:30:47	अश्विनी (1)	3	ज्ञाति	मित्र राशि
♀ शुक्र		♏ वृश्चिक	16:59:33	ज्येष्ठा (18)	1	मात्रि	सम राशि
♄ शनि		♍ कन्या	29:33:02	चित्रा (14)	2	आत्म	मित्र राशि
☊ राहु		♏ वृश्चिक	21:38:24	ज्येष्ठा (18)	2		नीच राशि
☋ केतु		♉ वृष	21:38:24	रोहिणी (4)	4		नीच राशि
♅ हर्षल	व.	♓ मीन	06:57:48	उत्तरभाद्र (26)	2		सम राशि
♆ नेपच्यून		♒ कुम्भ	04:06:38	धनिष्ठा (23)	4		सम राशि
♇ प्लूटो		♐ धनु	11:38:00	मूला (19)	4		सम राशि

नोट : – (व.) – वक्री, (अ.) – अस्त

लग्न कुण्डली

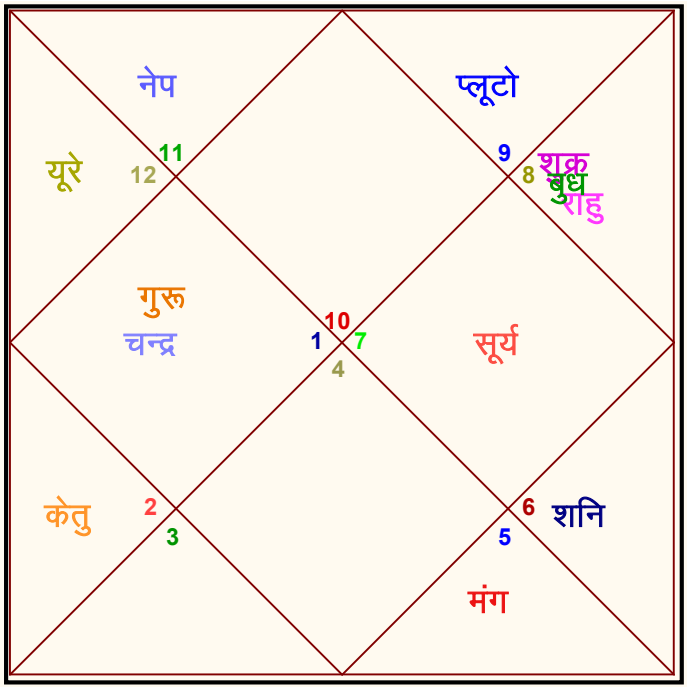

नवांश कुण्डली

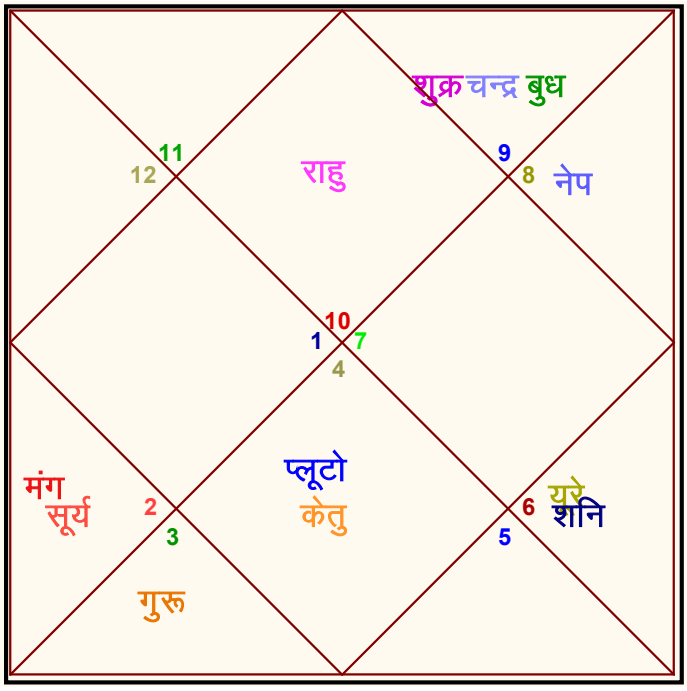

षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)

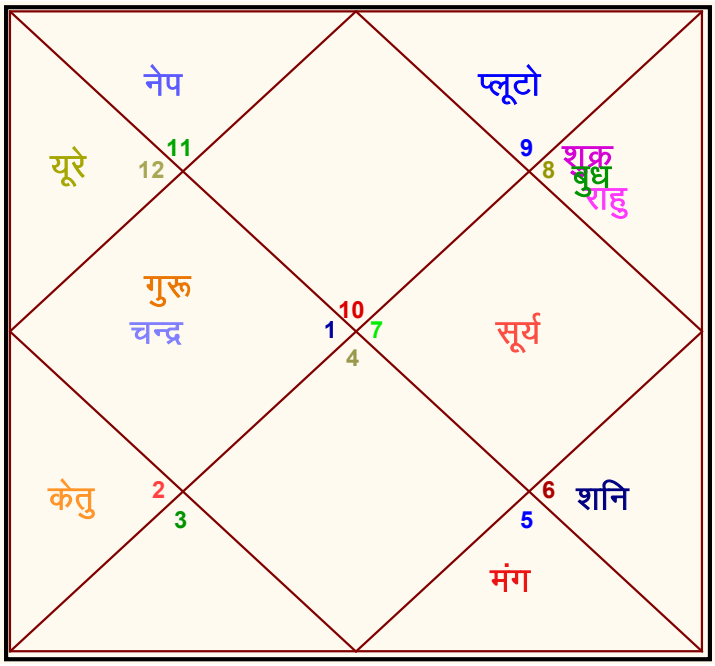

जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)

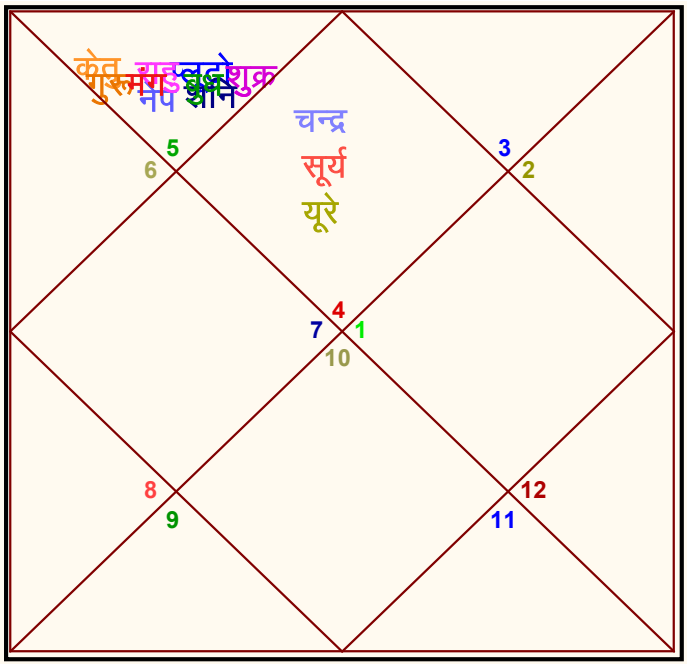

होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुंडली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)

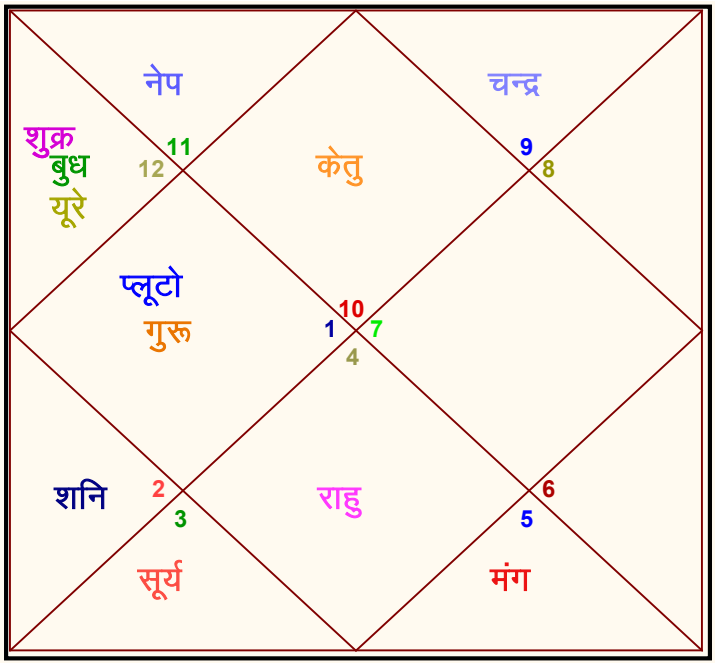

द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई–बहनों, चचेरे भाई–बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थांश कुण्डली (डी 4)

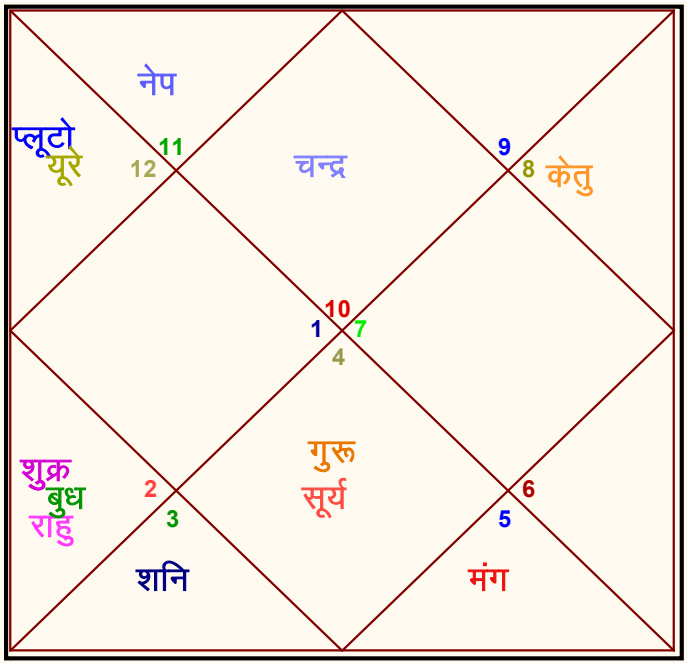

चतुर्थांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7.5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और ऑटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)

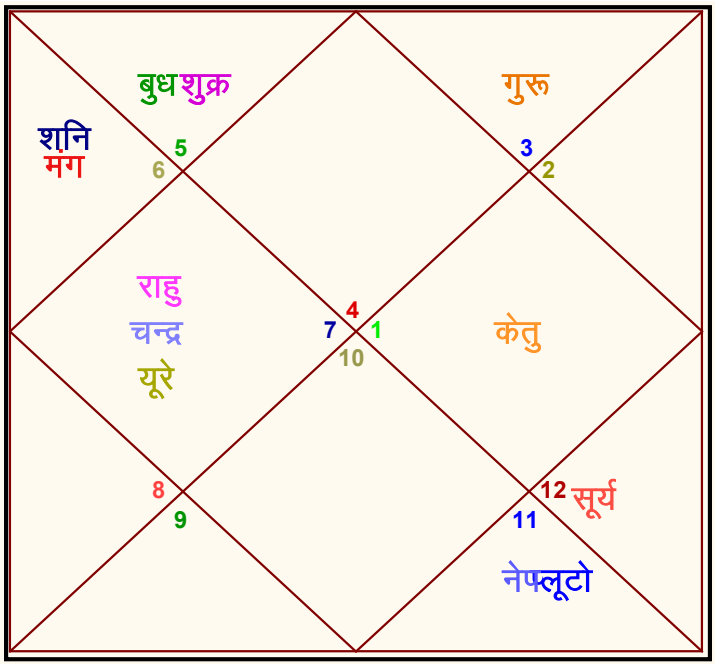

सप्तांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)

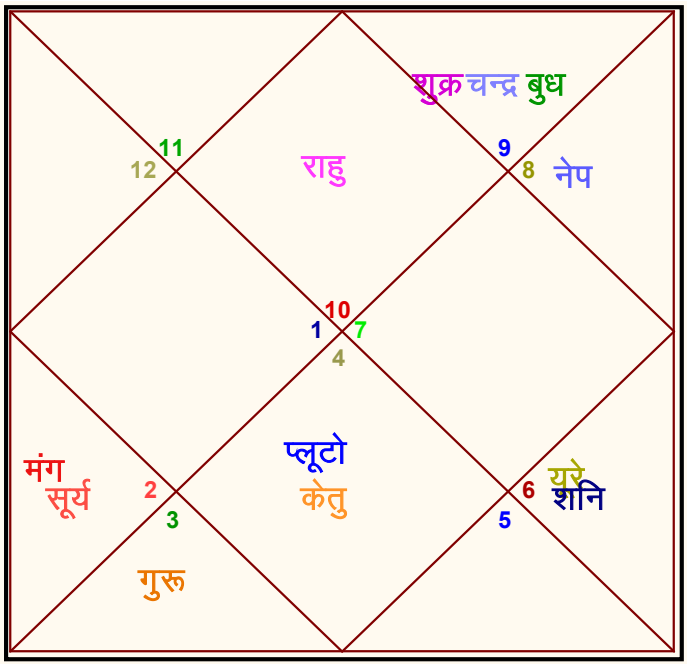

नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)

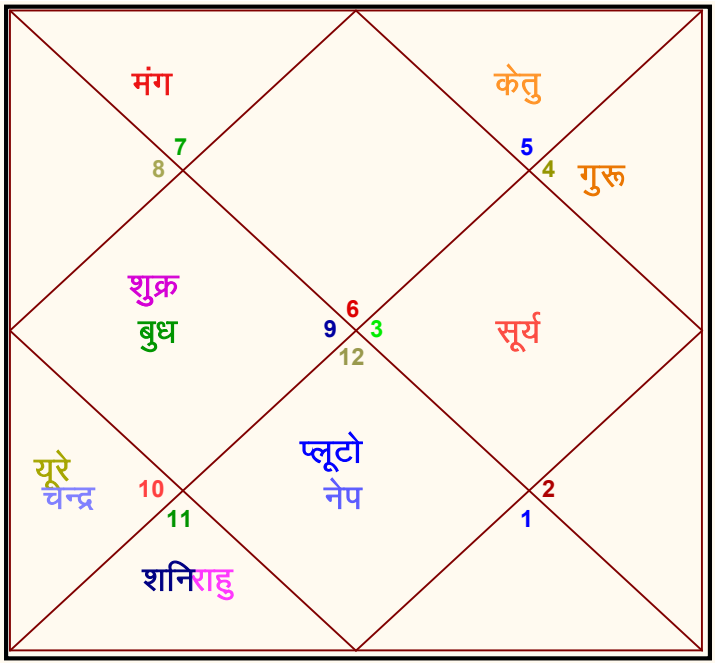

दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समग्र व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ–साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)

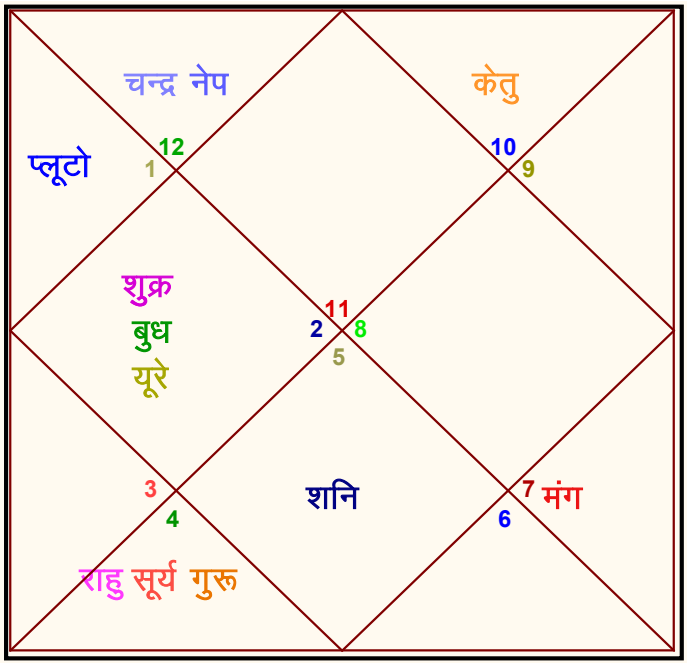

द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता–पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता–पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

षोडशांश कुण्डली (डी 16)

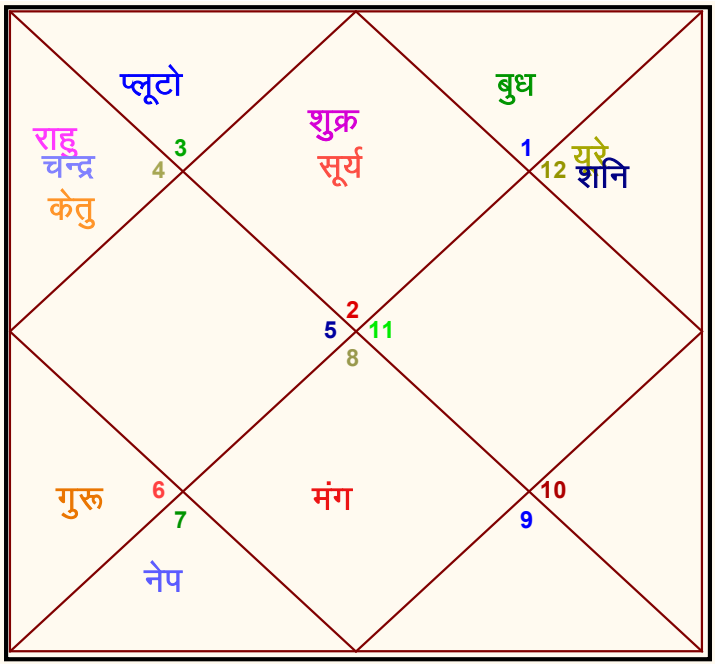

षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के ऑटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)

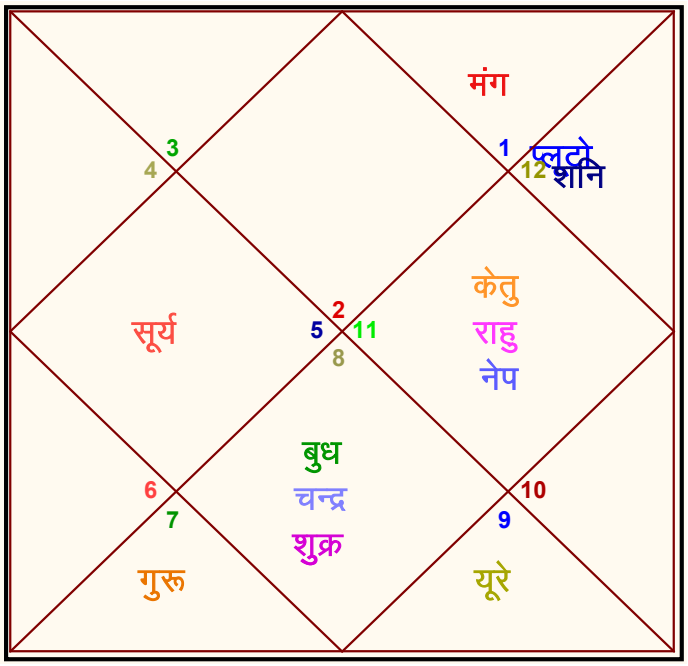

विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतर्रात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चर्तुविंशांश कुण्डली (डी 24)

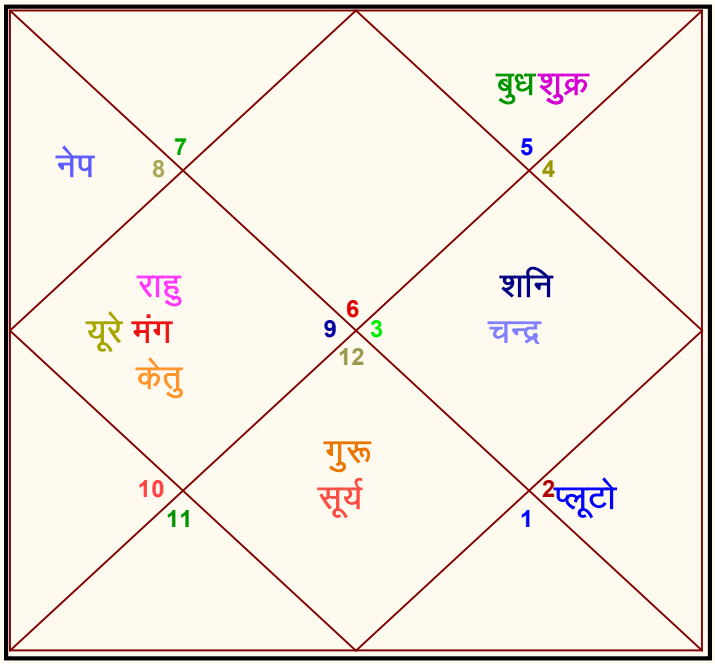

चर्तुविंशांश कुण्डली एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)

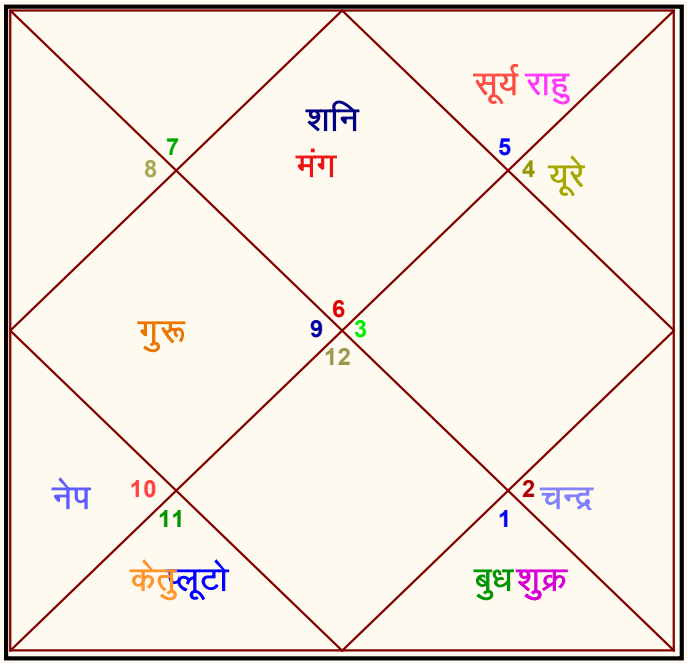

सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

त्रिंशांश कुण्डली (डी 30)

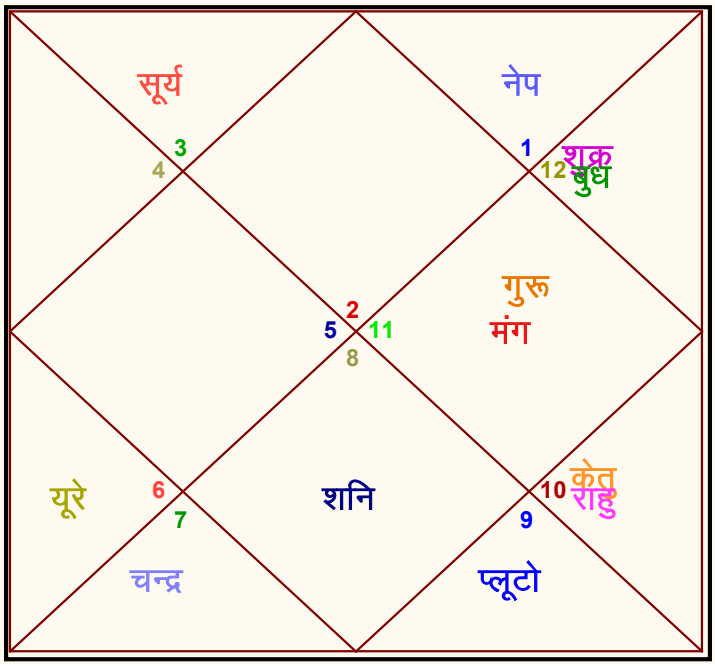

त्रिशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)

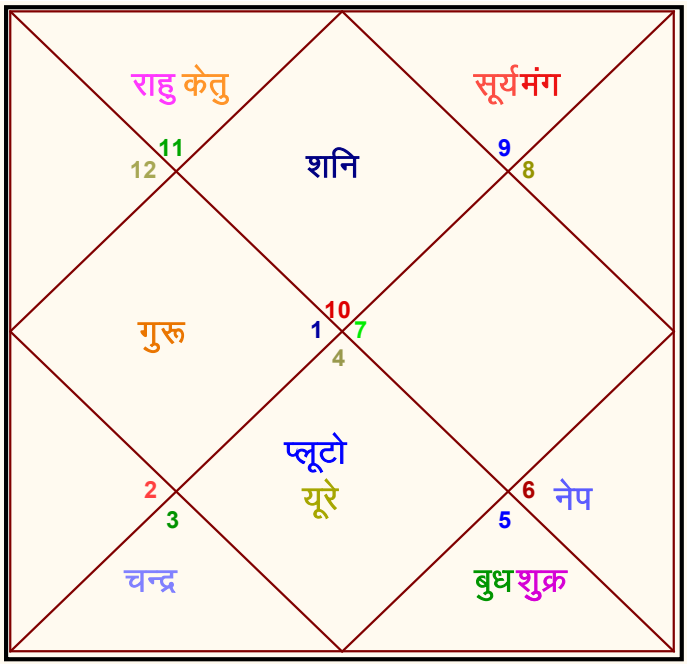

खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ–साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)

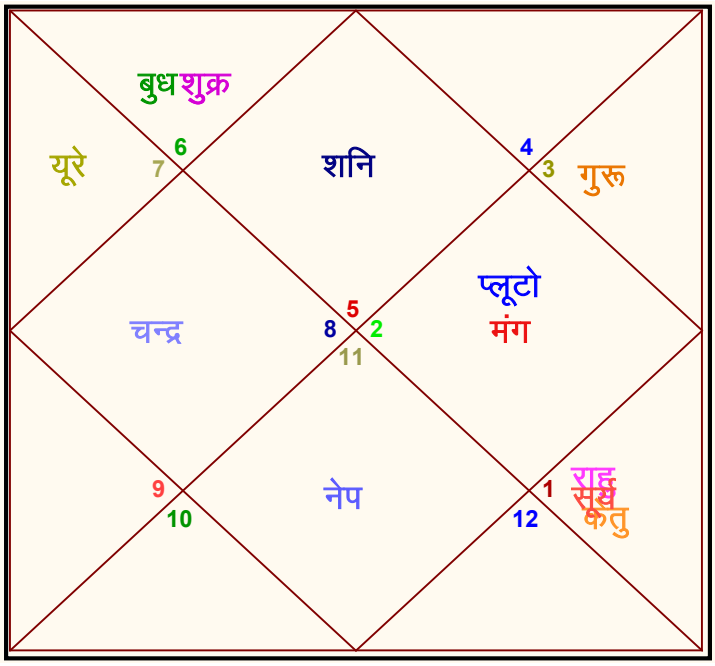

अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्रा.तिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)

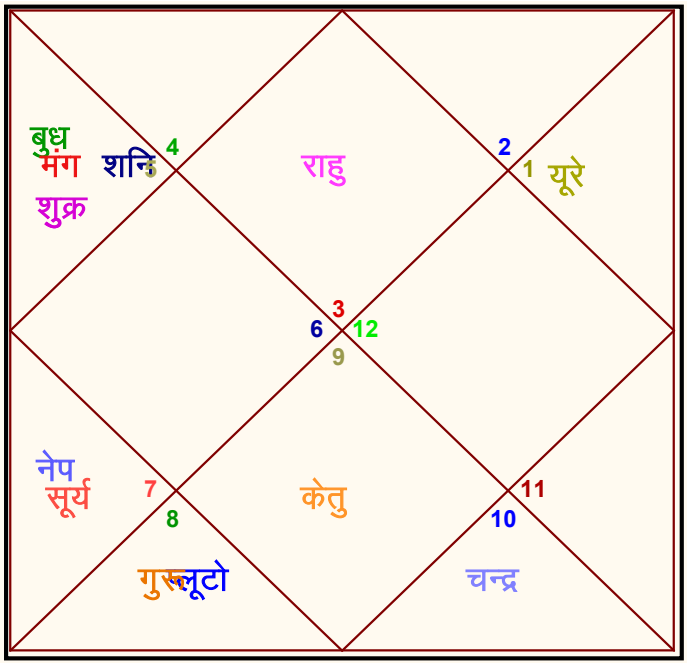

षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षोडश वर्ग कुण्डली

पंचमांश कुण्डली (डी 5)

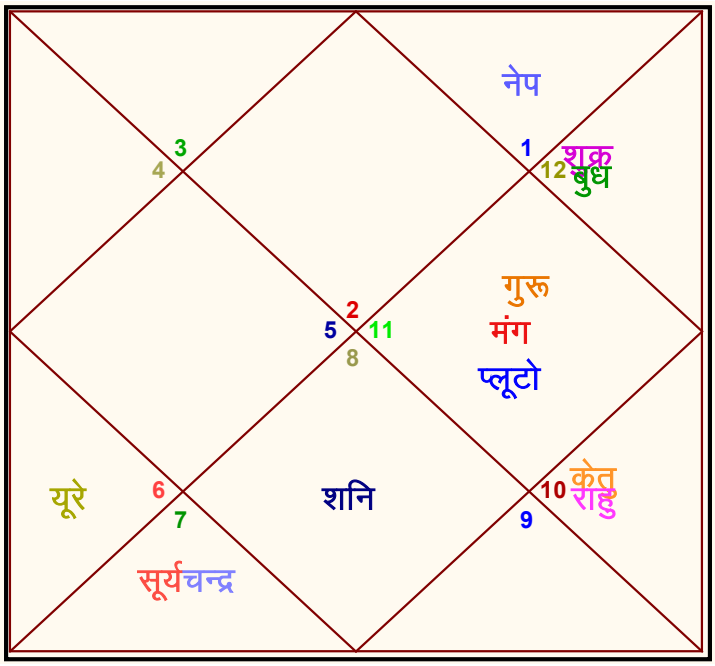

पंचांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 5 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 6 डिग्री में मापता है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। यह मुख्य रूप से जीवन के विभिन्न पहलुओं में किसी व्यक्ति की छिपी हुई प्रतिभा और क्षमता में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह उन ज्योतिषियों के लिए उपयोगी जानकारी हो सकती है जो लोगों को उनके विशेष कौशल और गुणों की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने में मार्गदर्शन करते हैं।

षष्टमांश कुण्डली (डी 6)

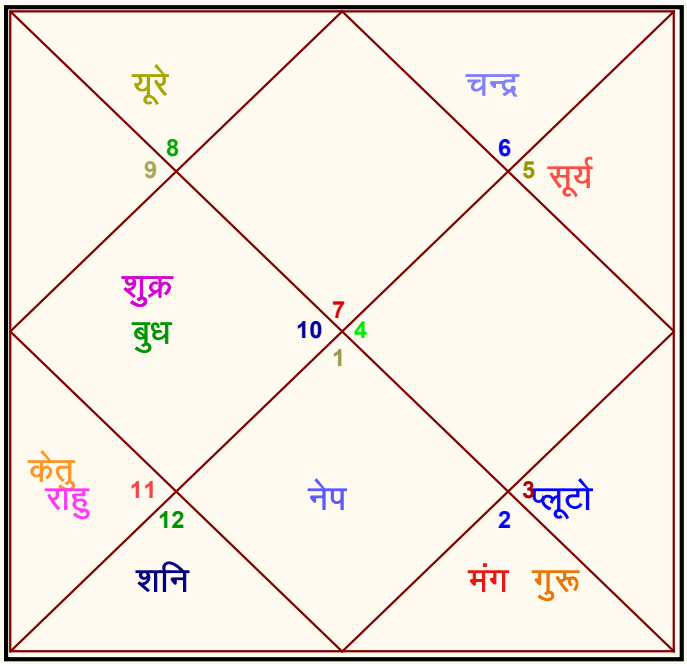

षष्टांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 6 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 5 डिग्री है। इस कुण्डली का पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। इसका प्राथमिक उद्देश्य किसी व्यक्ति की छिपी हुई शक्तियों और जीवन के कई हिस्सों में खामियों को प्रकट करना है। षष्टांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनकी क्षमता की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने के साथ–साथ समस्याओं पर काबू पाने में मार्गदर्शन करने में सहायता कर सकता है।

अष्टमांश कुण्डली (डी 8)

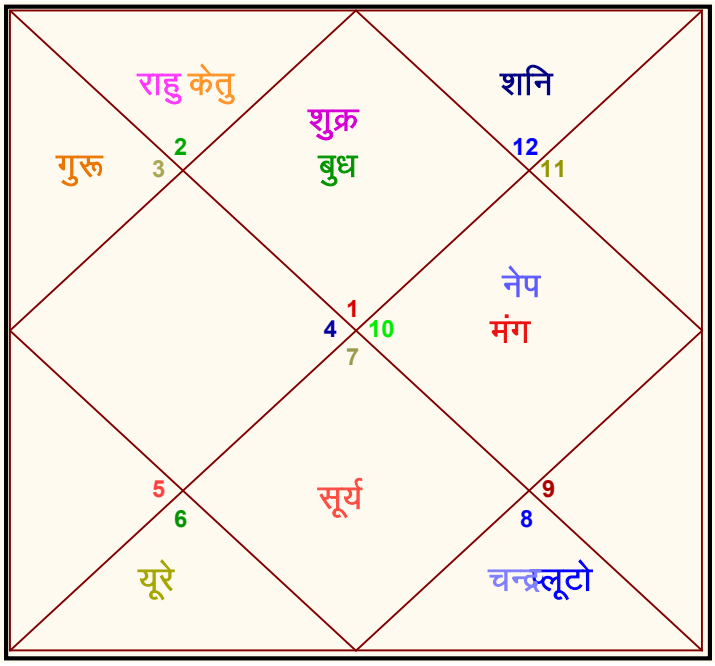

अष्टांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 8 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.75 डिग्री है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में शायद ही कभी उपयोग किया जाता है और वर्तमान अभ्यास में इसका बहुत कम उपयोग होता है। यह आमतौर पर किसी व्यक्ति की विशिष्ट विशेषताओं और उनके जीवन पथ से जुड़ी विशेषताओं का पता लगाने के लिए उपयोग किया जाता है। अष्टांश कुण्डली ज्योतिषियों को लोगों को उनके जीवन के कई पहलुओं को समझने और सुधारने में मदद करने के लिए अधिक जानकारी दे सकता है।

एकादशांश कुण्डली (डी 11)

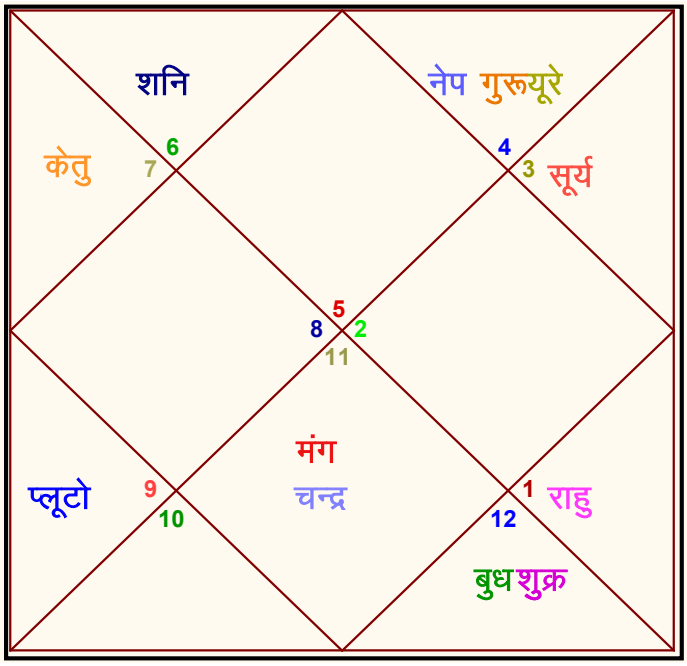

एकादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 11 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 2.73 डिग्री के आसपास फैला हुआ है। हांलाकि यह प्रायः पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में नियोजित नहीं होता है, यह वर्तमान अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। सामान्यतः इसका उपयोग किसी व्यक्ति की उपलब्धियों और जीवन के कई पहलुओं में सफलता, विशेष रूप से उनकी नौकरी और करियर में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। एकादशांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनके चुने हुए क्षेत्र में उनकी अधिकतम क्षमता तक पहुंचने में सहायता करने के लिए उपयोगी जानकारी प्रदान कर सकता है।

सर्वाष्टकवर्ग (337)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄ शनि	4	2	4	4	3	4	5	3	1	4	3	2	39
♃ गुरू	5	5	4	5	6	4	4	6	4	4	6	3	56
♂ मंगल	3	2	5	2	2	6	2	2	2	3	4	6	39
☉ सूर्य	6	4	5	3	4	5	5	3	3	3	3	4	48
♀ शुक्र	5	4	4	5	5	4	1	5	5	6	4	4	52
☿ बुध	4	3	5	4	4	7	3	6	2	4	6	6	54
☽ चन्द्रमा	4	4	4	4	3	4	4	4	2	6	5	5	49
योग	31	24	31	27	27	34	24	29	19	30	31	30	337

ग्रहों के बल का मूल्यांकन

- ग्रहों के बल का मूल्यांकन
- घटनाओं की भविष्यवाणी
- अनुकूल समय की पहचान
- उपाचारीय ज्योतिष

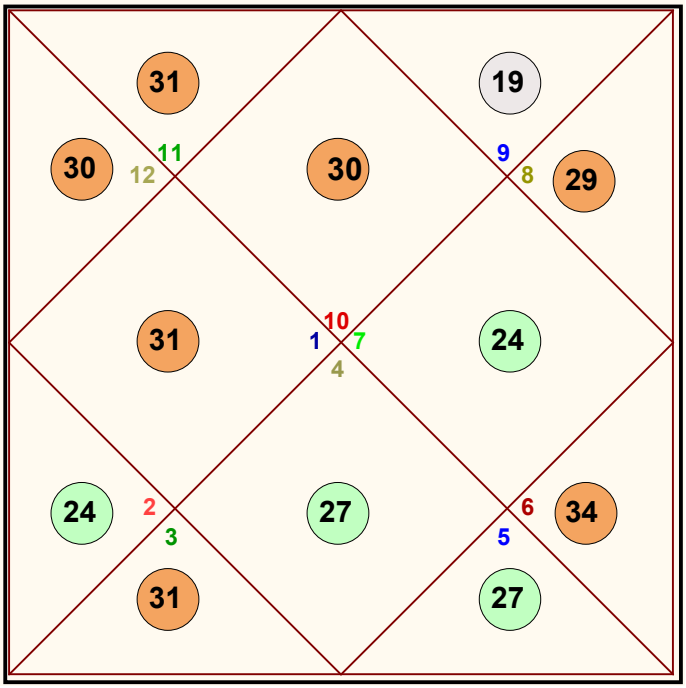

Legends :

शुभ　　मिश्रित　　अशुभ

सर्वाष्टकवर्ग योग

काहल योग : आपकी जन्म कुण्डली के सार्वष्टक वर्ग के तीसरे भाग (नौवें से बारहवें भाव राशि तक) में बहुत अधिक शुभ बिन्दु हैं। इस कारण आपकी कुण्ड़ली में काहल योग है। आप अपने जीवन के पहले चरण (लगभग 24वर्ष तक) में कम, दूसरे चरण (24से 48 वर्ष तक) अधिक और तीसरे चरण (लगभग 48 से 72वर्ष) में सबसे अधिक सुख प्राप्त करेंगे।

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄ शनि	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
♃ गुरू	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
♂ मंगल	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
☉ सूर्य	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
♀ शुक्र	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	3
☿ बुध	1	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1	7
☽ चन्द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
AC लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
योग	6	4	5	3	4	5	5	3	3	3	3	4	48

सूर्य का कारकत्व

- आत्मा एवं स्व
- अधिकार और नेतृत्व
- स्वास्थ्य और जीवन शक्ति
- पिता और पितातुल्य व्यक्ति
- कैरियर और सफलता

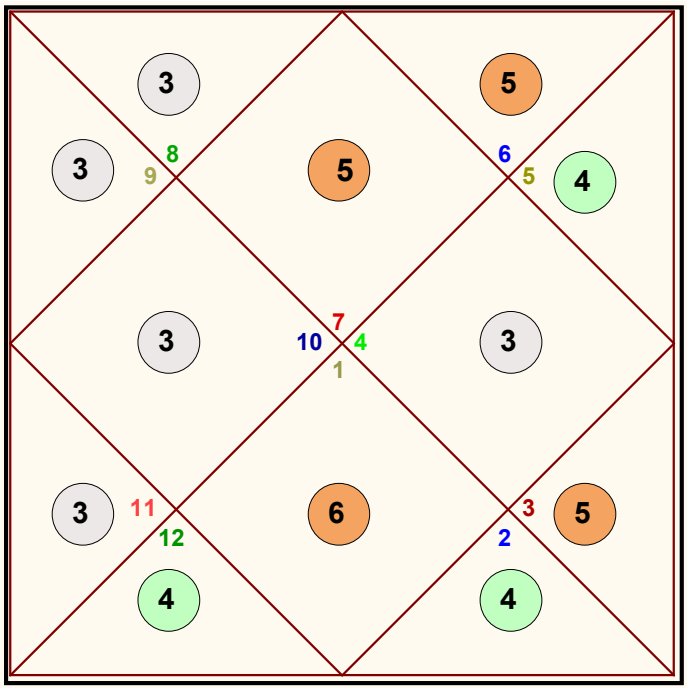

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

चन्द्रमा भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄	शनि	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	4
♃	गुरू	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	7
♂	मंगल	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	7
☉	सूर्य	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	6
♀	शुक्र	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
☿	बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
☽	चन्द्रमा	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	6
AC	लग्न	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
योग		4	4	4	4	3	4	4	4	2	6	5	5	49

चन्द्रमा का कारकत्व

- मन और भावनाएँ
- माँ और मातातुल्य स्त्री
- घर और पारिवारिक जीवन
- कल्पना और रचनात्मकता
- विकास और पोषण

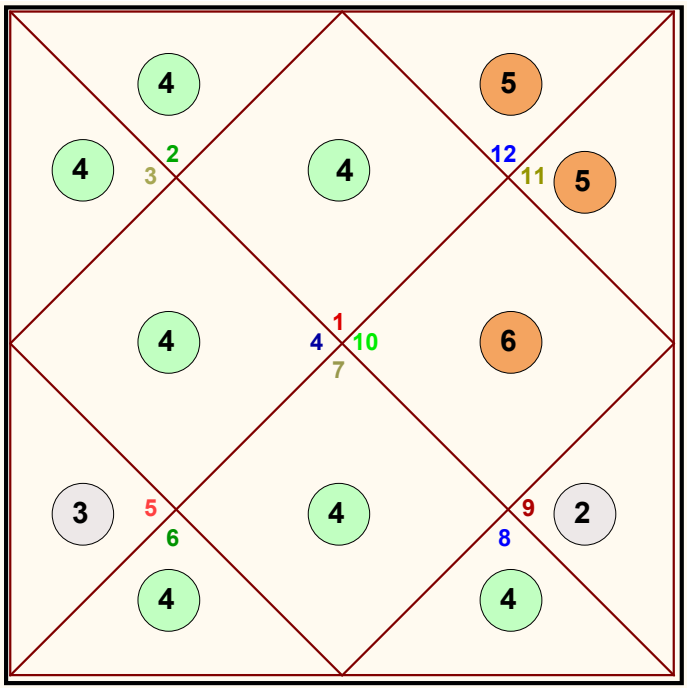

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄	शनि	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	7
♃	गुरू	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	4
♂	मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
☉	सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	5
♀	शुक्र	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	4
☿	बुध	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
☽	चन्द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
AC	लग्न	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
योग		3	2	5	2	2	6	2	2	2	3	4	6	39

मंगल का कारकत्व

- ऊर्जा और क्रिया
- जुनून और संचालन
- आक्रामकता और संघर्ष
- नेतृत्व और उद्यमशीलता
- अभियांत्रिकी और तकनीकी कौशल

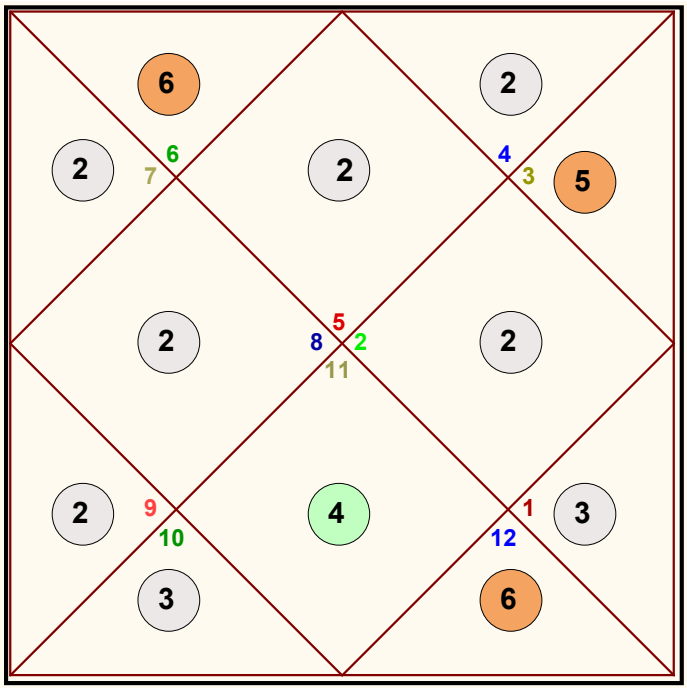

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

बुध भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄	शनि	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
♃	गुरू	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
♂	मंगल	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
☉	सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	1	5
♀	शुक्र	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	8
☿	बुध	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	1	8
☽	चन्द्रमा	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	6
AC	लग्न	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
योग		4	3	5	4	4	7	3	6	2	4	6	6	54

बुध का कारकत्व

- बुद्धि और संचार
- वाणिज्य और व्यवसाय
- अधिगम और शिक्षा
- यात्रा और संचालन
- रचनात्मकता और कला

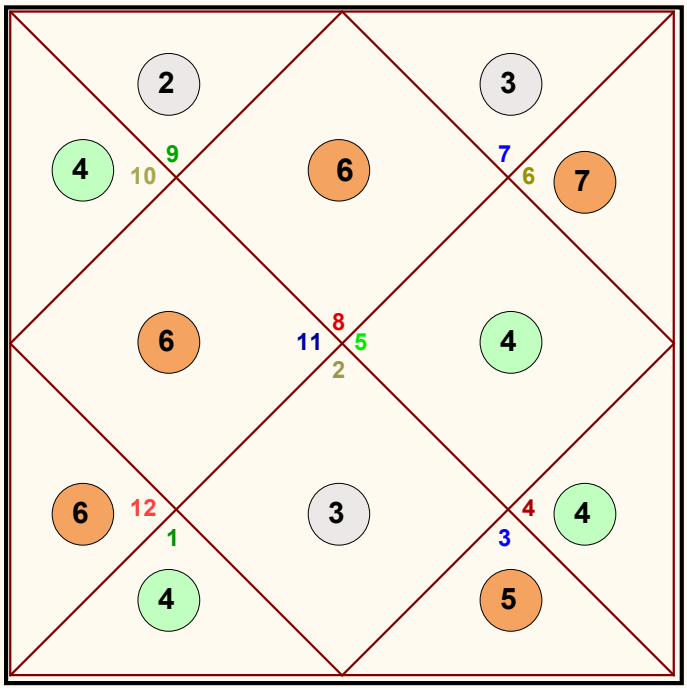

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

गुरू भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄	शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
♃	गुरू	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
♂	मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
☉	सूर्य	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	9
♀	शुक्र	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	6
☿	बुध	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
☽	चन्द्रमा	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	5
AC	लग्न	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
योग		5	5	4	5	6	4	4	6	4	4	6	3	56

गुरू का कारकत्व

- बुद्धि और ज्ञान
- विकास और विस्तार
- नेतृत्व और अधिकार
- संतान और परिवार
- आध्यात्मिकता और धर्म

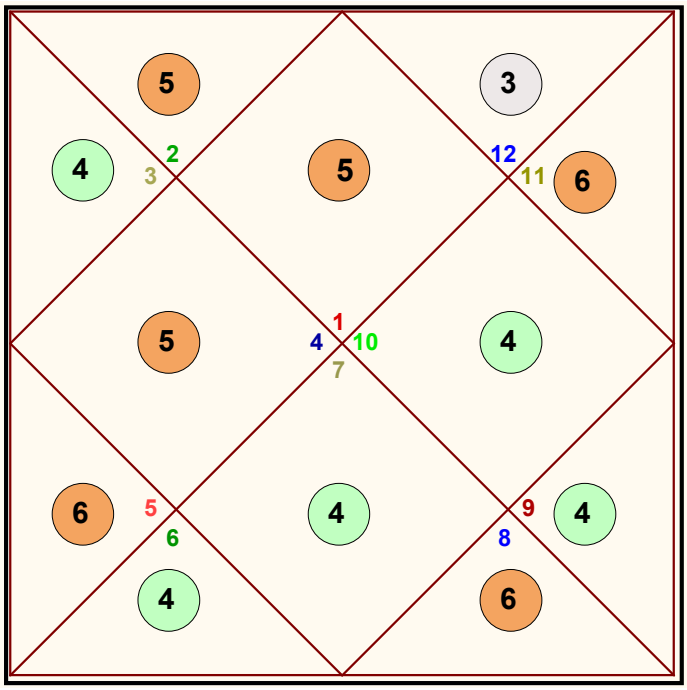

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄ शनि	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	7
♃ गुरू	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
♂ मंगल	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
☉ सूर्य	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	0	3
♀ शुक्र	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	9
☿ बुध	1	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	1	5
☽ चन्द्रमा	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	9
AC लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
योग	5	4	4	5	5	4	1	5	5	6	4	4	52

शुक्र का कारकत्व

- प्रेम और रोमांच
- विवाह और साझेदारी
- कला और सौंदर्यशास्त्र
- विलासिता और सुखसुविधा
- वित्त और धन

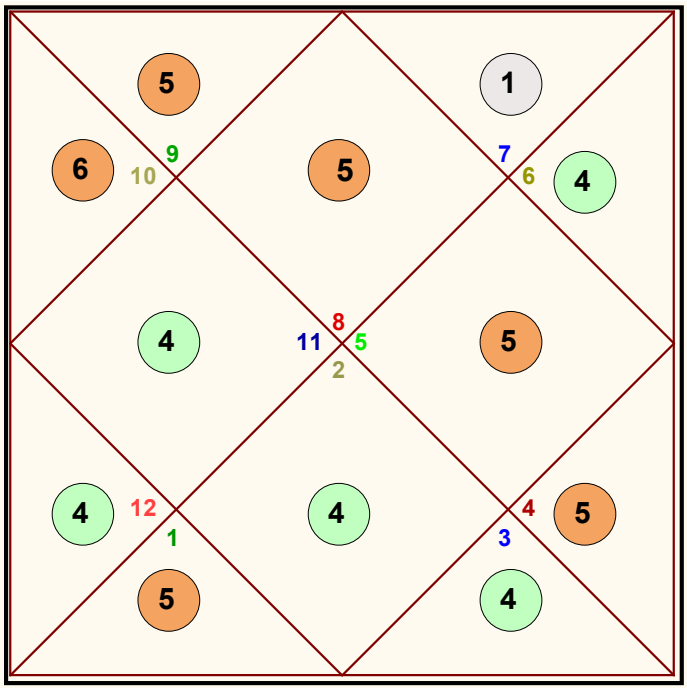

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

शनि भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄	शनि	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	4
♃	गुरू	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
♂	मंगल	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
☉	सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
♀	शुक्र	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3
☿	बुध	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	6
☽	चन्द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
AC	लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	6
योग		4	2	4	4	3	4	5	3	1	4	3	2	39

शनि का कारकत्व

- कठिन परिश्रम और अनुशासन
- बाधाएं और चुनौतियां
- समय और कर्म
- अधिकार और नेतृत्व
- आध्यात्मिकता और वैराग्य

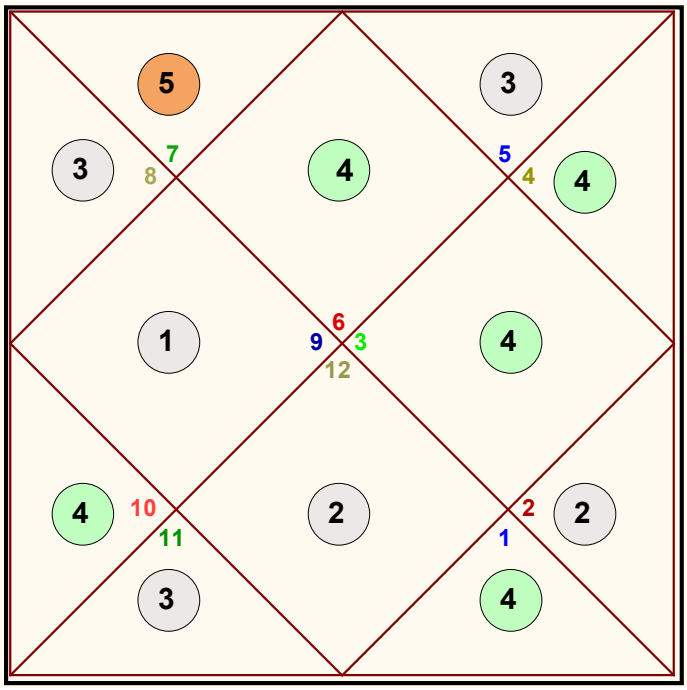

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

राहु भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄	शनि	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
♃	गुरू	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
♂	मंगल	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
☉	सूर्य	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
♀	शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	7
☿	बुध	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
☽	चन्द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	5
AC	लग्न	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
योग		2	2	6	4	4	5	3	4	5	5	5	4	49

राहु का कारकत्व

- आकांक्षा और सनक
- महत्वाकांक्षा और सफलता
- भ्रम और धोखा
- विदेश भूमि और यात्रा
- आध्यात्मिकता और प्रबोधन

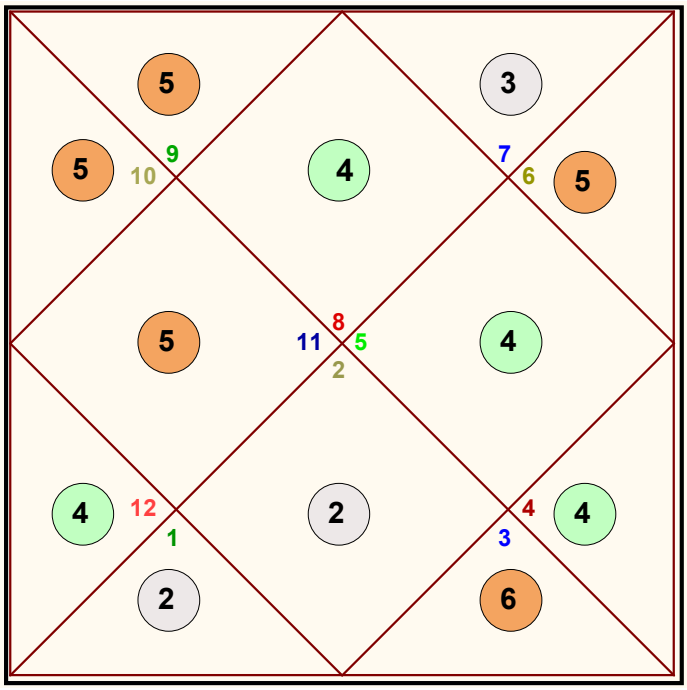

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

सर्वाष्टक वर्ग के महत्वपूर्ण बिन्दु

लग्न कुण्डली

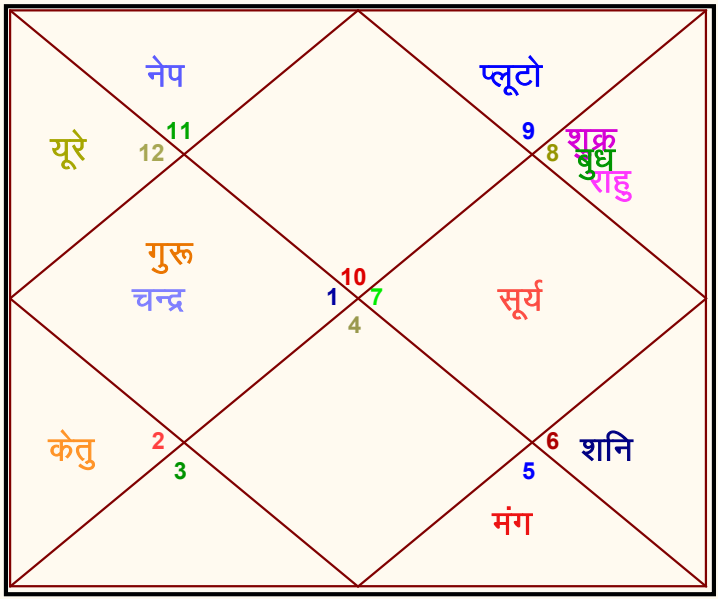

सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली

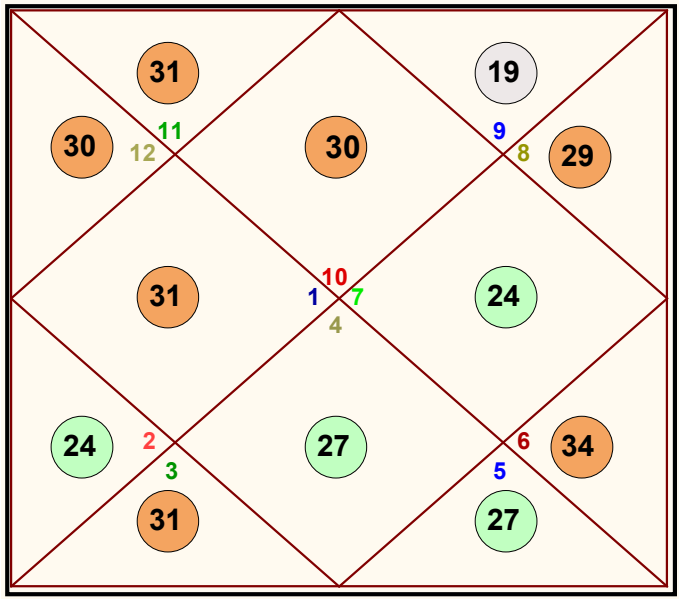

तत्व चक्र

सर्वाष्टक वर्ग बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नि त्रिकोन	84.25	77	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोन	84.25	88	दक्षिण
वायु त्रिकोन	84.25	86	पश्चिम
जल त्रिकोन	84.25	86	उत्तर

(विशेष– सबसे ज्यादा बिन्दु सबसे शुभ दिशा को इंगित करता है (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर)। अगर दोनो भागों के बिन्दुओं की संख्या बराबर या आसपास हैं तो शुभ दिशा (उपू०, दपू०, उप० और दप०) होगी।)

भुवन चक्र

सर्वाष्टक वर्ग बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
केन्द्र भाव–राशि	112.33	112	मेहनत और लगन
पनफरा भाव–राशि	112.33	111	आर्थिक स्थिति
अपोक्लिम् भाव–राशि	112.33	114	वित्त हानि

दिशा चक्र

भाग	सर्वाष्टक बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
बन्धुक	भाग्य त्रिकोन	84.25	88	बन्धु –बान्धवो से सहायता
सेवक	कर्म त्रिकोन	84.25	86	नौकरी से अर्जन
पोषक	लाभ त्रिकोन	84.25	86	लाभ और धन
घातक	व्यय त्रिकोन	84.25	77	दुर्भाग्य और हानि

लग्न कुण्डली

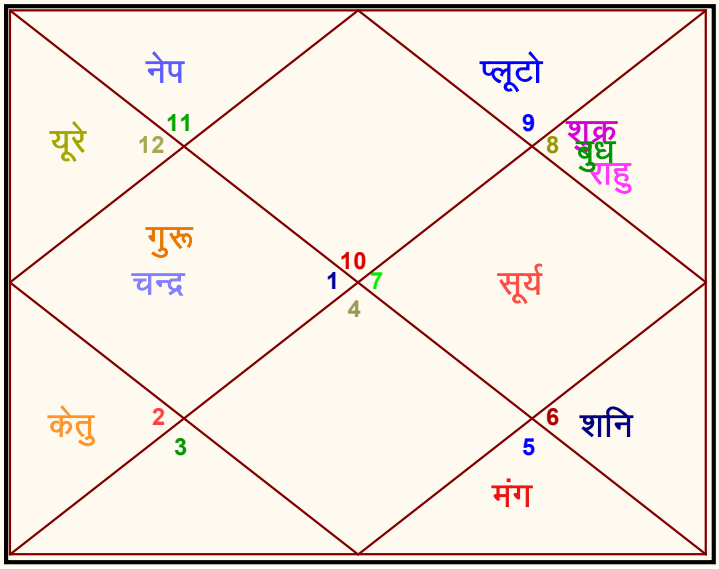

सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली

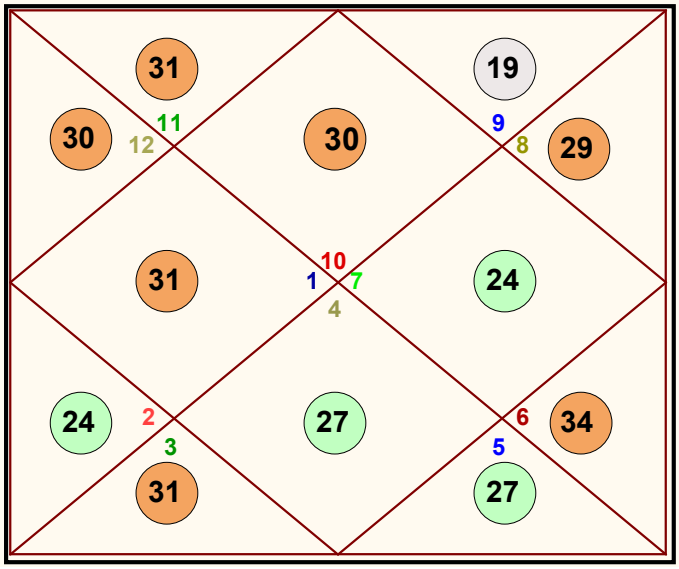

जीवन के महत्वपूर्ण कालखण्डो का अवलोकन

भाग	समयावधि	राशि		स. व. बिन्दु	योग	टिप्पणी
1st	0 - 24 Years	♑	मकर	30	122	असाधारण
		♒	कुम्भ	31		
		♓	मीन	30		
		♈	मेष	31		
2nd	25-48 Years	♉	वृष	24	109	अच्छा
		♊	मिथुन	31		
		♋	कर्क	27		
		♌	सिहं	27		
3rd	> 48 Years	♍	कन्या	34	106	अच्छा
		♎	तुला	24		
		♏	वृश्चिक	29		
		♐	धनु	19		

1 - 105	106 - 118	> 118
खराब	अच्छा	असाधारण

कष्ट तुल्य भाव

भाव	राशि		स. व. बिन्दु	योग	टिप्पणी
6	♊	मिथुन	31	77	< 84 Good
8	♌	सिहं	27		
12	♐	धनु	19		> 84 Not Good

सुदर्शन चक्र

वैदिक ज्योतिष्ष में सुदर्शन चक्र एक महत्वपूर्ण उपकरण है जो किसी व्यक्ति के जीवन के तीन प्राथमिक पहलुओं, सूर्य (आत्मा), चंद्रमा (मन), और लग्न (शरीर) का प्रतिनिधित्व करने वाला एक व्यापक .ष्टिकोण प्रदान करता है। यह जन्म कुंडली के एकी.त विश्लेष्षण की अनुमति देता है, सटीक भविष्ष्यवाणियों और व्यापक समझ में सहायता प्रदान करता है। यह तीन अलगअलग .ष्टिकोणों से गोचर का विश्लेष्षण करके घटनाओं के समय निर्धारण में भी मदद करता है। अंत में, यह समय अवधि की समग्र गुणवत्ता और किसी व्यक्ति के जीवन पर उनके प्रभावों को प्रकट करता है।

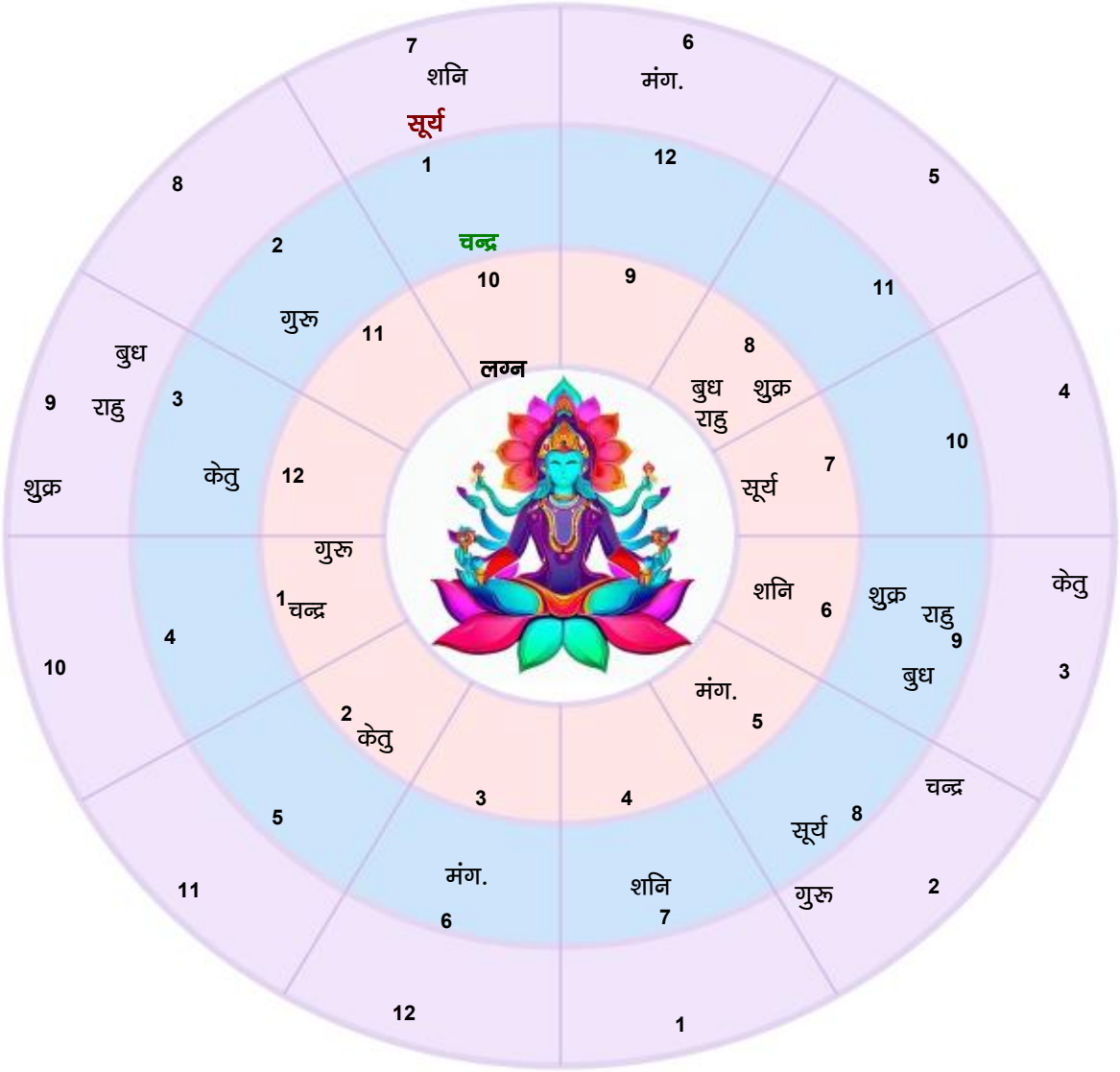

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़गें।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र वुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होगें। यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सुर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

षडबल और भावबल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उच्च बल	04.82	58.58	02.67	39.40	31.50	16.66	53.18
सप्त वर्ग बल	67.50	52.50	120.00	78.75	37.50	71.25	112.50
युग्म अयुग्म बल	15.00	00.00	15.00	15.00	30.00	15.00	00.00
केन्द्रादी बल	60.00	60.00	30.00	30.00	60.00	30.00	15.00
द्रेक्कन बल	00.00	15.00	15.00	15.00	15.00	00.00	00.00
स्थान बल	**147.32**	**186.08**	**182.67**	**178.15**	**174.00**	**132.91**	**180.68**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	89.28	139.91	190.28	107.97	105.46	99.94	188.21
दिग बल	**57.80**	**56.37**	**36.05**	**44.66**	**27.77**	**09.71**	**31.10**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	165.15	112.75	120.16	127.59	79.36	19.42	103.65
नतोन्नत बल	57.75	02.25	02.25	57.75	00.00	57.75	02.25
पक्ष बल	01.43	58.57	01.43	01.43	58.57	58.57	01.43
त्रिभाग बल	60.00	00.00	00.00	00.00	60.00	00.00	00.00
वर्ष बल	00.00	00.00	00.00	00.00	15.00	00.00	00.00
मास बल	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	45.00	00.00
होरा बल	60.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
अयन बल	07.86	06.48	43.92	57.12	45.38	01.88	40.94
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	**187.04**	**97.29**	**47.60**	**116.30**	**178.95**	**163.20**	**44.62**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	167.00	97.29	71.05	103.84	159.77	163.20	66.59
चेष्टा बल	**07.86**	**58.57**	**30.00**	**45.00**	**60.00**	**45.00**	**30.00**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	15.72	195.23	75.00	90.00	120.00	150.00	75.00
नैसर्गिक बल	**60.00**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**08.57**
द्रिक बल	**-08.08**	**-18.63**	**05.51**	**-18.21**	**-24.66**	**-18.21**	**06.67**
कुल षड्बल	**451.94**	**431.12**	**318.97**	**391.61**	**450.36**	**375.47**	**301.64**
षड्बल (रूप में)	**7.53**	**7.19**	**5.32**	**6.53**	**7.51**	**6.26**	**5.03**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	115.88	119.75	106.32	93.24	115.48	113.78	100.55
तुलनात्मक स्थिति	**1**	**3**	**6**	**4**	**2**	**5**	**7**
इष्ट फल	**08.17**	**58.57**	**08.95**	**42.11**	**43.48**	**27.38**	**39.94**
कष्ट फल	**51.83**	**01.43**	**51.05**	**17.89**	**16.52**	**32.62**	**20.06**
दिप्ति बल	**100.00**	**58.57**	**26.15**	**47.90**	**55.02**	**28.78**	**08.30**

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
भावाधिपति बल	301.64	301.64	450.36	318.97	375.47	391.61	431.12	451.94	391.61	375.47	318.97	450.36
भाव दिग्बल	30.00	50.00	50.00	00.00	10.00	10.00	30.00	40.00	20.00	30.00	20.00	50.00
भाव दृष्टिबल	03.91	12.64	05.60	-22.01	06.55	-06.32	-15.17	04.91	33.33	-15.23	-13.40	-15.88
भावबल योग	**335.55**	**364.28**	**505.96**	**296.96**	**392.03**	**395.29**	**445.95**	**496.85**	**444.94**	**390.24**	**325.57**	**484.47**
भावबल (रूप में)	**5.59**	**6.07**	**8.43**	**4.95**	**6.53**	**6.59**	**7.43**	**8.28**	**7.42**	**6.50**	**5.43**	**8.07**
तुलनात्मक स्थिति	**10**	**9**	**1**	**12**	**7**	**6**	**4**	**2**	**5**	**8**	**11**	**3**

विंशोत्तरी दशा (1)

Sun (5 y.0 m.24 d.)

दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (024:01:22)

अयनांश

सूर्य (6 वर्ष)

11/11/2011 To 05/12/2016

10th भाव नीच विशेष	तुला राशि विशा. (2) नक्षत्र	मित्र संबंध 8 भावपति
सूर्य	-------	-------
चन्द्रमा	-------	-------
मंगल	29-01-2012	00.00
राहु	24-12-2012	00.22
गुरू	12-10-2013	01.12
शनि	23-09-2014	01.92
बुध	31-07-2015	02.87
केतु	05-12-2015	03.72
शुक्र	05-12-2016	04.07

चन्द्रमा (10 वर्ष)

05/12/2016 To 05/12/2026

4th भाव विशेष	मेष राशि कृति. (1) नक्षत्र	शत्रु संबंध 7 भावपति
चन्द्रमा	05-10-2017	05.07
मंगल	06-05-2018	05.90
राहु	05-11-2019	06.48
गुरू	07-03-2021	07.98
शनि	05-10-2022	09.32
बुध	06-03-2024	10.90
केतु	05-10-2024	12.32
शुक्र	06-06-2026	12.90
सूर्य	05-12-2026	14.57

मंगल (7 वर्ष)

05/12/2026 To 05/12/2033

8th भाव विशेष	सिहं राशि मघा (2) नक्षत्र	सम संबंध 4 , 11 भावपति
मंगल	03-05-2027	15.07
राहु	21-05-2028	15.48
गुरू	27-04-2029	16.53
शनि	06-06-2030	17.46
बुध	03-06-2031	18.57
केतु	30-10-2031	19.56
शुक्र	30-12-2032	19.97
सूर्य	06-05-2033	21.13
चन्द्रमा	05-12-2033	21.48

राहु (18 वर्ष)

05/12/2033 To 05/12/2051

11th भाव नीच विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (2) नक्षत्र	शत्रु संबंध भावपति
राहु	17-08-2036	22.07
गुरू	11-01-2039	24.77
शनि	17-11-2041	27.17
बुध	05-06-2044	30.02
केतु	24-06-2045	32.57
शुक्र	24-06-2048	33.62
सूर्य	19-05-2049	36.62
चन्द्रमा	17-11-2050	37.52
मंगल	05-12-2051	39.02

गुरू (16 वर्ष)

05/12/2051 To 05/12/2067

4th भाव वक्री विशेष	मेष राशि अशि. (3) नक्षत्र	मित्र संबंध 12 , 3 भावपति
गुरू	23-01-2054	40.07
शनि	05-08-2056	42.20
बुध	11-11-2058	44.73
केतु	18-10-2059	47.00
शुक्र	18-06-2062	47.93
सूर्य	06-04-2063	50.60
चन्द्रमा	05-08-2064	51.40
मंगल	12-07-2065	52.73
राहु	05-12-2067	53.67

शनि (19 वर्ष)

05/12/2067 To 05/12/2086

9th भाव विशेष	कन्या राशि चित्रा (2) नक्षत्र	मित्र संबंध 1 , 2 भावपति
शनि	08-12-2070	56.07
बुध	18-08-2073	59.08
केतु	26-09-2074	61.77
शुक्र	26-11-2077	62.88
सूर्य	08-11-2078	66.04
चन्द्रमा	08-06-2080	66.99
मंगल	18-07-2081	68.58
राहु	24-05-2084	69.68
गुरू	05-12-2086	72.53

विंशोत्तरी दशा (2)

बुध (17 वर्ष)

05/12/2086 To 05/12/2103

11th भाव स्वनक्षत्र विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	सम संबंन्ध 6 , 9 भावपति
बुध	03-05-2089	75.07
केतु	30-04-2090	77.48
शुक्र	28-02-2093	78.47
सूर्य	05-01-2094	81.30
चन्द्रमा	06-06-2095	82.15
मंगल	02-06-2096	83.57
राहु	21-12-2098	84.56
गुरू	28-03-2101	87.11
शनि	05-12-2103	89.38

केतु (7 वर्ष)

05/12/2103 To 05/12/2110

5th भाव नीच विशेष	वृष राशि रोहि. (4) नक्षत्र	सम संबंन्ध भावपति
केतु	03-05-2104	92.07
शुक्र	03-07-2105	92.48
सूर्य	08-11-2105	93.64
चन्द्रमा	09-06-2106	93.99
मंगल	05-11-2106	94.58
राहु	23-11-2107	94.98
गुरू	30-10-2108	96.03
शनि	08-12-2109	96.97
बुध	05-12-2110	98.08

शुक्र (20 वर्ष)

05/12/2110 To 05/12/2130

11th भाव विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	शत्रु संबंन्ध 5 , 10 भावपति
शुक्र	06-04-2114	99.07
सूर्य	06-04-2115	102.40
चन्द्रमा	05-12-2116	103.40
मंगल	04-02-2118	105.07
राहु	04-02-2121	106.23
गुरू	05-10-2123	109.23
शनि	05-12-2126	111.90
बुध	05-10-2129	115.07
केतु	05-12-2130	117.90

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	चन्द्रमा	05:12:2016 (17:39:34)	05:12:2026 (19:18:58)
अन्तर्रदशा	बुध	05:10:2022 (23:18:58)	06:03:2024 (05:39:34)
प्रत्यन्तर्रदशा	गुरू	07:10:2023 (05:43:58)	15:12:2023 (04:23:58)
सूक्ष्मदशा	शुक्र	10:11:2023 (03:16:38)	21:11:2023 (15:03:18)
प्राणदशा	चन्द्रमा	12:11:2023 (15:01:45)	13:11:2023 (14:00:38)

नोट : – सभी दिए गये समय दशा के समाप्ति काल के हैं।

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

सूर्य दशा

(11:11:2011 To 05:12:2016)

सूर्य अन्तर

सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--

चन्द्रमा अन्तर

चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--

मंगल अन्तर

(11:11:2011 To 29:01:2012)

मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	26-11-2011	00.00
बुध	14-12-2011	00.04
केतु	22-12-2011	00.09
शुक्र	12-01-2012	00.11
सूर्य	18-01-2012	00.17
चन्द्रमा	29-01-2012	00.19

राहु अन्तर

(29:01:2012 To 24:12:2012)

राहु	19-03-2012	00.22
गुरू	01-05-2012	00.35
शनि	23-06-2012	00.47
बुध	08-08-2012	00.61
केतु	28-08-2012	00.74
शुक्र	21-10-2012	00.79
सूर्य	07-11-2012	00.94
चन्द्रमा	04-12-2012	00.99
मंगल	24-12-2012	01.06

गुरू अन्तर

(24:12:2012 To 12:10:2013)

गुरू	31-01-2013	01.12
शनि	19-03-2013	01.22
बुध	29-04-2013	01.35
केतु	16-05-2013	01.46
शुक्र	04-07-2013	01.51
सूर्य	18-07-2013	01.64
चन्द्रमा	12-08-2013	01.68
मंगल	29-08-2013	01.75
राहु	12-10-2013	01.80

शनि अन्तर

(12:10:2013 To 23:09:2014)

शनि	05-12-2013	01.92
बुध	24-01-2014	02.07
केतु	13-02-2014	02.20
शुक्र	12-04-2014	02.26
सूर्य	29-04-2014	02.42
चन्द्रमा	28-05-2014	02.46
मंगल	17-06-2014	02.54
राहु	08-08-2014	02.60
गुरू	23-09-2014	02.74

बुध अन्तर

(23:09:2014 To 31:07:2015)

बुध	06-11-2014	02.87
केतु	24-11-2014	02.99
शुक्र	15-01-2015	03.04
सूर्य	31-01-2015	03.18
चन्द्रमा	25-02-2015	03.22
मंगल	16-03-2015	03.29
राहु	01-05-2015	03.34
गुरू	11-06-2015	03.47
शनि	31-07-2015	03.58

केतु अन्तर

(31:07:2015 To 05:12:2015)

केतु	07-08-2015	03.72
शुक्र	28-08-2015	03.74
सूर्य	04-09-2015	03.80
चन्द्रमा	14-09-2015	03.81
मंगल	22-09-2015	03.84
राहु	11-10-2015	03.86
गुरू	28-10-2015	03.92
शनि	17-11-2015	03.96
बुध	05-12-2015	04.02

शुक्र अन्तर

(05:12:2015 To 05:12:2016)

शुक्र	04-02-2016	04.07
सूर्य	23-02-2016	04.23
चन्द्रमा	24-03-2016	04.28
मंगल	14-04-2016	04.37
राहु	08-06-2016	04.43
गुरू	27-07-2016	04.58
शनि	23-09-2016	04.71
बुध	14-11-2016	04.87
केतु	05-12-2016	05.01

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(05:12:2016 To 05:12:2026)

चन्द्रमा अन्तर

(05:12:2016 To 05:10:2017)

चन्द्रमा	31-12-2016	05.07
मंगल	17-01-2017	05.14
राहु	04-03-2017	05.18
गुरू	14-04-2017	05.31
शनि	01-06-2017	05.42
बुध	14-07-2017	05.55
केतु	01-08-2017	05.67
शुक्र	20-09-2017	05.72
सूर्य	05-10-2017	05.86

मंगल अन्तर

(05:10:2017 To 06:05:2018)

मंगल	18-10-2017	05.90
राहु	19-11-2017	05.93
गुरू	17-12-2017	06.02
शनि	20-01-2018	06.10
बुध	19-02-2018	06.19
केतु	04-03-2018	06.27
शुक्र	08-04-2018	06.31
सूर्य	19-04-2018	06.41
चन्द्रमा	06-05-2018	06.43

राहु अन्तर

(06:05:2018 To 05:11:2019)

राहु	28-07-2018	06.48
गुरू	09-10-2018	06.71
शनि	03-01-2019	06.91
बुध	22-03-2019	07.15
केतु	23-04-2019	07.36
शुक्र	23-07-2019	07.45
सूर्य	19-08-2019	07.70
चन्द्रमा	04-10-2019	07.77
मंगल	05-11-2019	07.90

गुरू अन्तर

(05:11:2019 To 07:03:2021)

गुरू	09-01-2020	07.98
शनि	26-03-2020	08.16
बुध	03-06-2020	08.37
केतु	02-07-2020	08.56
शुक्र	21-09-2020	08.64
सूर्य	15-10-2020	08.86
चन्द्रमा	25-11-2020	08.93
मंगल	24-12-2020	09.04
राहु	07-03-2021	09.12

शनि अन्तर

(07:03:2021 To 05:10:2022)

शनि	06-06-2021	09.32
बुध	27-08-2021	09.57
केतु	30-09-2021	09.79
शुक्र	04-01-2022	09.88
सूर्य	02-02-2022	10.15
चन्द्रमा	22-03-2022	10.23
मंगल	25-04-2022	10.36
राहु	20-07-2022	10.45
गुरू	05-10-2022	10.69

बुध अन्तर

(05:10:2022 To 06:03:2024)

बुध	18-12-2022	10.90
केतु	17-01-2023	11.10
शुक्र	13-04-2023	11.18
सूर्य	09-05-2023	11.42
चन्द्रमा	21-06-2023	11.49
मंगल	21-07-2023	11.61
राहु	07-10-2023	11.69
गुरू	15-12-2023	11.90
शनि	06-03-2024	12.09

केतु अन्तर

(06:03:2024 To 05:10:2024)

केतु	18-03-2024	12.32
शुक्र	23-04-2024	12.35
सूर्य	03-05-2024	12.45
चन्द्रमा	21-05-2024	12.48
मंगल	03-06-2024	12.53
राहु	05-07-2024	12.56
गुरू	02-08-2024	12.65
शनि	05-09-2024	12.73
बुध	05-10-2024	12.82

शुक्र अन्तर

(05:10:2024 To 06:06:2026)

शुक्र	15-01-2025	12.90
सूर्य	14-02-2025	13.18
चन्द्रमा	06-04-2025	13.26
मंगल	11-05-2025	13.40
राहु	11-08-2025	13.50
गुरू	31-10-2025	13.75
शनि	04-02-2026	13.97
बुध	01-05-2026	14.23
केतु	06-06-2026	14.47

सूर्य अन्तर

(06:06:2026 To 05:12:2026)

सूर्य	15-06-2026	14.57
चन्द्रमा	30-06-2026	14.59
मंगल	11-07-2026	14.63
राहु	07-08-2026	14.66
गुरू	31-08-2026	14.74
शनि	29-09-2026	14.80
बुध	25-10-2026	14.88
केतु	05-11-2026	14.95
शुक्र	05-12-2026	14.98

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(05:12:2026 To 05:12:2033)

मंगल अन्तर

(05:12:2026 To 03:05:2027)

मंगल	14-12-2026	15.07
राहु	05-01-2027	15.09
गुरू	25-01-2027	15.15
शनि	18-02-2027	15.21
बुध	11-03-2027	15.27
केतु	20-03-2027	15.33
शुक्र	13-04-2027	15.35
सूर्य	21-04-2027	15.42
चन्द्रमा	03-05-2027	15.44

राहु अन्तर

(03:05:2027 To 21:05:2028)

राहु	30-06-2027	15.48
गुरू	20-08-2027	15.63
शनि	20-10-2027	15.77
बुध	13-12-2027	15.94
केतु	04-01-2028	16.09
शुक्र	08-03-2028	16.15
सूर्य	28-03-2028	16.32
चन्द्रमा	29-04-2028	16.38
मंगल	21-05-2028	16.46

गुरू अन्तर

(21:05:2028 To 27:04:2029)

गुरू	06-07-2028	16.53
शनि	29-08-2028	16.65
बुध	16-10-2028	16.80
केतु	05-11-2028	16.93
शुक्र	01-01-2029	16.98
सूर्य	18-01-2029	17.14
चन्द्रमा	15-02-2029	17.19
मंगल	07-03-2029	17.26
राहु	27-04-2029	17.32

शनि अन्तर

(27:04:2029 To 06:06:2030)

शनि	30-06-2029	17.46
बुध	27-08-2029	17.63
केतु	19-09-2029	17.79
शुक्र	26-11-2029	17.86
सूर्य	16-12-2029	18.04
चन्द्रमा	19-01-2030	18.10
मंगल	11-02-2030	18.19
राहु	13-04-2030	18.25
गुरू	06-06-2030	18.42

बुध अन्तर

(06:06:2030 To 03:06:2031)

बुध	27-07-2030	18.57
केतु	17-08-2030	18.71
शुक्र	17-10-2030	18.77
सूर्य	04-11-2030	18.93
चन्द्रमा	04-12-2030	18.98
मंगल	25-12-2030	19.06
राहु	17-02-2031	19.12
गुरू	06-04-2031	19.27
शनि	03-06-2031	19.40

केतु अन्तर

(03:06:2031 To 30:10:2031)

केतु	11-06-2031	19.56
शुक्र	06-07-2031	19.58
सूर्य	14-07-2031	19.65
चन्द्रमा	26-07-2031	19.67
मंगल	04-08-2031	19.70
राहु	26-08-2031	19.73
गुरू	15-09-2031	19.79
शनि	09-10-2031	19.84
बुध	30-10-2031	19.91

शुक्र अन्तर

(30:10:2031 To 30:12:2032)

शुक्र	09-01-2032	19.97
सूर्य	30-01-2032	20.16
चन्द्रमा	06-03-2032	20.22
मंगल	31-03-2032	20.32
राहु	03-06-2032	20.38
गुरू	30-07-2032	20.56
शनि	05-10-2032	20.72
बुध	05-12-2032	20.90
केतु	30-12-2032	21.07

सूर्य अन्तर

(30:12:2032 To 06:05:2033)

सूर्य	05-01-2033	21.13
चन्द्रमा	16-01-2033	21.15
मंगल	23-01-2033	21.18
राहु	11-02-2033	21.20
गुरू	28-02-2033	21.25
शनि	21-03-2033	21.30
बुध	08-04-2033	21.36
केतु	15-04-2033	21.40
शुक्र	06-05-2033	21.43

चन्द्रमा अन्तर

(06:05:2033 To 05:12:2033)

चन्द्रमा	24-05-2033	21.48
मंगल	06-06-2033	21.53
राहु	07-07-2033	21.57
गुरू	05-08-2033	21.65
शनि	08-09-2033	21.73
बुध	08-10-2033	21.82
केतु	20-10-2033	21.91
शुक्र	25-11-2033	21.94
सूर्य	05-12-2033	22.04

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(05:12:2033 To 05:12:2051)

राहु अन्तर

(05:12:2033 To 17:08:2036)

राहु	02-05-2034	22.07
गुरू	11-09-2034	22.47
शनि	14-02-2035	22.83
बुध	03-07-2035	23.26
केतु	30-08-2035	23.64
शुक्र	10-02-2036	23.80
सूर्य	30-03-2036	24.25
चन्द्रमा	21-06-2036	24.38
मंगल	17-08-2036	24.61

गुरू अन्तर

(17:08:2036 To 11:01:2039)

गुरू	13-12-2036	24.77
शनि	30-04-2037	25.09
बुध	01-09-2037	25.47
केतु	23-10-2037	25.81
शुक्र	18-03-2038	25.95
सूर्य	30-04-2038	26.35
चन्द्रमा	12-07-2038	26.47
मंगल	01-09-2038	26.67
राहु	11-01-2039	26.81

शनि अन्तर

(11:01:2039 To 17:11:2041)

शनि	25-06-2039	27.17
बुध	19-11-2039	27.62
केतु	19-01-2040	28.02
शुक्र	10-07-2040	28.19
सूर्य	01-09-2040	28.66
चन्द्रमा	27-11-2040	28.81
मंगल	26-01-2041	29.04
राहु	01-07-2041	29.21
गुरू	17-11-2041	29.64

बुध अन्तर

(17:11:2041 To 05:06:2044)

बुध	29-03-2042	30.02
केतु	22-05-2042	30.38
शुक्र	24-10-2042	30.53
सूर्य	10-12-2042	30.95
चन्द्रमा	25-02-2043	31.08
मंगल	21-04-2043	31.29
राहु	07-09-2043	31.44
गुरू	09-01-2044	31.82
शनि	05-06-2044	32.16

केतु अन्तर

(05:06:2044 To 24:06:2045)

केतु	28-06-2044	32.57
शुक्र	31-08-2044	32.63
सूर्य	19-09-2044	32.80
चन्द्रमा	21-10-2044	32.86
मंगल	12-11-2044	32.94
राहु	09-01-2045	33.00
गुरू	01-03-2045	33.16
शनि	01-05-2045	33.30
बुध	24-06-2045	33.47

शुक्र अन्तर

(24:06:2045 To 24:06:2048)

शुक्र	24-12-2045	33.62
सूर्य	16-02-2046	34.12
चन्द्रमा	19-05-2046	34.27
मंगल	21-07-2046	34.52
राहु	02-01-2047	34.69
गुरू	28-05-2047	35.14
शनि	17-11-2047	35.54
बुध	20-04-2048	36.02
केतु	24-06-2048	36.44

सूर्य अन्तर

(24:06:2048 To 19:05:2049)

सूर्य	10-07-2048	36.62
चन्द्रमा	06-08-2048	36.66
मंगल	26-08-2048	36.74
राहु	14-10-2048	36.79
गुरू	27-11-2048	36.92
शनि	18-01-2049	37.04
बुध	06-03-2049	37.19
केतु	25-03-2049	37.31
शुक्र	19-05-2049	37.37

चन्द्रमा अन्तर

(19:05:2049 To 17:11:2050)

चन्द्रमा	03-07-2049	37.52
मंगल	04-08-2049	37.64
राहु	25-10-2049	37.73
गुरू	06-01-2050	37.95
शनि	03-04-2050	38.15
बुध	19-06-2050	38.39
केतु	21-07-2050	38.60
शुक्र	21-10-2050	38.69
सूर्य	17-11-2050	38.94

मंगल अन्तर

(17:11:2050 To 05:12:2051)

मंगल	09-12-2050	39.02
राहु	05-02-2051	39.08
गुरू	28-03-2051	39.24
शनि	28-05-2051	39.38
बुध	21-07-2051	39.54
केतु	12-08-2051	39.69
शुक्र	15-10-2051	39.75
सूर्य	03-11-2051	39.93
चन्द्रमा	05-12-2051	39.98

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गुरू दशा

(05:12:2051 To 05:12:2067)

गुरू अन्तर

(05:12:2051 To 23:01:2054)

गुरू	18-03-2052	40.07
शनि	20-07-2052	40.35
बुध	08-11-2052	40.69
केतु	23-12-2052	40.99
शुक्र	02-05-2053	41.12
सूर्य	10-06-2053	41.47
चन्द्रमा	14-08-2053	41.58
मंगल	28-09-2053	41.76
राहु	23-01-2054	41.88

शनि अन्तर

(23:01:2054 To 05:08:2056)

शनि	18-06-2054	42.20
बुध	27-10-2054	42.60
केतु	20-12-2054	42.96
शुक्र	23-05-2055	43.11
सूर्य	09-07-2055	43.53
चन्द्रमा	24-09-2055	43.66
मंगल	17-11-2055	43.87
राहु	04-04-2056	44.02
गुरू	05-08-2056	44.40

बुध अन्तर

(05:08:2056 To 11:11:2058)

बुध	01-12-2056	44.73
केतु	18-01-2057	45.05
शुक्र	05-06-2057	45.19
सूर्य	16-07-2057	45.56
चन्द्रमा	23-09-2057	45.68
मंगल	11-11-2057	45.87
राहु	15-03-2058	46.00
गुरू	03-07-2058	46.34
शनि	11-11-2058	46.64

केतु अन्तर

(11:11:2058 To 18:10:2059)

केतु	01-12-2058	47.00
शुक्र	27-01-2059	47.05
सूर्य	13-02-2059	47.21
चन्द्रमा	13-03-2059	47.26
मंगल	02-04-2059	47.33
राहु	23-05-2059	47.39
गुरू	07-07-2059	47.53
शनि	30-08-2059	47.65
बुध	18-10-2059	47.80

शुक्र अन्तर

(18:10:2059 To 18:06:2062)

शुक्र	28-03-2060	47.93
सूर्य	16-05-2060	48.38
चन्द्रमा	05-08-2060	48.51
मंगल	01-10-2060	48.73
राहु	24-02-2061	48.89
गुरू	04-07-2061	49.29
शनि	05-12-2061	49.64
बुध	22-04-2062	50.07
केतु	18-06-2062	50.44

सूर्य अन्तर

(18:06:2062 To 06:04:2063)

सूर्य	03-07-2062	50.60
चन्द्रमा	27-07-2062	50.64
मंगल	13-08-2062	50.71
राहु	26-09-2062	50.75
गुरू	04-11-2062	50.87
शनि	20-12-2062	50.98
बुध	30-01-2063	51.11
केतु	16-02-2063	51.22
शुक्र	06-04-2063	51.27

चन्द्रमा अन्तर

(06:04:2063 To 05:08:2064)

चन्द्रमा	17-05-2063	51.40
मंगल	14-06-2063	51.51
राहु	26-08-2063	51.59
गुरू	30-10-2063	51.79
शनि	15-01-2064	51.97
बुध	24-03-2064	52.18
केतु	22-04-2064	52.37
शुक्र	12-07-2064	52.44
सूर्य	05-08-2064	52.67

मंगल अन्तर

(05:08:2064 To 12:07:2065)

मंगल	25-08-2064	52.73
राहु	15-10-2064	52.79
गुरू	30-11-2064	52.93
शनि	23-01-2065	53.05
बुध	12-03-2065	53.20
केतु	01-04-2065	53.33
शुक्र	28-05-2065	53.39
सूर्य	14-06-2065	53.54
चन्द्रमा	12-07-2065	53.59

राहु अन्तर

(12:07:2065 To 05:12:2067)

राहु	21-11-2065	53.67
गुरू	18-03-2066	54.03
शनि	03-08-2066	54.35
बुध	05-12-2066	54.73
केतु	25-01-2067	55.07
शुक्र	20-06-2067	55.21
सूर्य	03-08-2067	55.61
चन्द्रमा	15-10-2067	55.73
मंगल	05-12-2067	55.93

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(05:12:2067 To 05:12:2086)

शनि अन्तर

(05:12:2067 To 08:12:2070)		
शनि	28-05-2068	56.07
बुध	31-10-2068	56.54
केतु	03-01-2069	56.97
शुक्र	05-07-2069	57.14
सूर्य	29-08-2069	57.65
चन्द्रमा	28-11-2069	57.80
मंगल	31-01-2070	58.05
राहु	15-07-2070	58.22
गुरू	08-12-2070	58.67

बुध अन्तर

(08:12:2070 To 18:08:2073)		
बुध	27-04-2071	59.08
केतु	23-06-2071	59.46
शुक्र	04-12-2071	59.61
सूर्य	22-01-2072	60.06
चन्द्रमा	13-04-2072	60.20
मंगल	09-06-2072	60.42
राहु	04-11-2072	60.58
गुरू	15-03-2073	60.98
शनि	18-08-2073	61.34

केतु अन्तर

(18:08:2073 To 26:09:2074)		
केतु	10-09-2073	61.77
शुक्र	17-11-2073	61.83
सूर्य	07-12-2073	62.02
चन्द्रमा	10-01-2074	62.07
मंगल	02-02-2074	62.16
राहु	04-04-2074	62.23
गुरू	28-05-2074	62.39
शनि	31-07-2074	62.54
बुध	26-09-2074	62.72

शुक्र अन्तर

(26:09:2074 To 26:11:2077)		
शुक्र	07-04-2075	62.88
सूर्य	04-06-2075	63.40
चन्द्रमा	08-09-2075	63.56
मंगल	15-11-2075	63.83
राहु	06-05-2076	64.01
गुरू	08-10-2076	64.48
शनि	09-04-2077	64.91
बुध	20-09-2077	65.41
केतु	26-11-2077	65.86

सूर्य अन्तर

(26:11:2077 To 08:11:2078)		
सूर्य	14-12-2077	66.04
चन्द्रमा	11-01-2078	66.09
मंगल	01-02-2078	66.17
राहु	25-03-2078	66.22
गुरू	10-05-2078	66.37
शनि	04-07-2078	66.49
बुध	22-08-2078	66.64
केतु	11-09-2078	66.78
शुक्र	08-11-2078	66.83

चन्द्रमा अन्तर

(08:11:2078 To 08:06:2080)		
चन्द्रमा	26-12-2078	66.99
मंगल	29-01-2079	67.12
राहु	25-04-2079	67.22
गुरू	12-07-2079	67.45
शनि	11-10-2079	67.66
बुध	01-01-2080	67.92
केतु	04-02-2080	68.14
शुक्र	10-05-2080	68.23
सूर्य	08-06-2080	68.50

मंगल अन्तर

(08:06:2080 To 18:07:2081)		
मंगल	02-07-2080	68.58
राहु	01-09-2080	68.64
गुरू	25-10-2080	68.81
शनि	28-12-2080	68.95
बुध	23-02-2081	69.13
केतु	19-03-2081	69.29
शुक्र	25-05-2081	69.35
सूर्य	15-06-2081	69.54
चन्द्रमा	18-07-2081	69.59

राहु अन्तर

(18:07:2081 To 24:05:2084)		
राहु	21-12-2081	69.68
गुरू	09-05-2082	70.11
शनि	21-10-2082	70.49
बुध	17-03-2083	70.94
केतु	17-05-2083	71.35
शुक्र	06-11-2083	71.51
सूर्य	28-12-2083	71.99
चन्द्रमा	24-03-2084	72.13
मंगल	24-05-2084	72.37

गुरू अन्तर

(24:05:2084 To 05:12:2086)		
गुरू	25-09-2084	72.53
शनि	18-02-2085	72.87
बुध	29-06-2085	73.27
केतु	22-08-2085	73.63
शुक्र	23-01-2086	73.78
सूर्य	11-03-2086	74.20
चन्द्रमा	27-05-2086	74.33
मंगल	20-07-2086	74.54
राहु	05-12-2086	74.69

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(05:12:2086 To 05:12:2103)

बुध अन्तर

(05:12:2086 To 03:05:2089)

बुध	09-04-2087	75.07
केतु	30-05-2087	75.41
शुक्र	24-10-2087	75.55
सूर्य	07-12-2087	75.95
चन्द्रमा	18-02-2088	76.07
मंगल	09-04-2088	76.27
राहु	20-08-2088	76.41
गुरू	15-12-2088	76.77
शनि	03-05-2089	77.09

केतु अन्तर

(03:05:2089 To 30:04:2090)

केतु	24-05-2089	77.48
शुक्र	24-07-2089	77.53
सूर्य	11-08-2089	77.70
चन्द्रमा	10-09-2089	77.75
मंगल	01-10-2089	77.83
राहु	24-11-2089	77.89
गुरू	12-01-2090	78.04
शनि	10-03-2090	78.17
बुध	30-04-2090	78.33

शुक्र अन्तर

(30:04:2090 To 28:02:2093)

शुक्र	20-10-2090	78.47
सूर्य	10-12-2090	78.94
चन्द्रमा	07-03-2091	79.08
मंगल	06-05-2091	79.32
राहु	08-10-2091	79.48
गुरू	23-02-2092	79.91
शनि	05-08-2092	80.28
बुध	30-12-2092	80.73
केतु	28-02-2093	81.13

सूर्य अन्तर

(28:02:2093 To 05:01:2094)

सूर्य	16-03-2093	81.30
चन्द्रमा	11-04-2093	81.34
मंगल	29-04-2093	81.41
राहु	14-06-2093	81.46
गुरू	26-07-2093	81.59
शनि	13-09-2093	81.70
बुध	27-10-2093	81.84
केतु	14-11-2093	81.96
शुक्र	05-01-2094	82.01

चन्द्रमा अन्तर

(05:01:2094 To 06:06:2095)

चन्द्रमा	17-02-2094	82.15
मंगल	19-03-2094	82.27
राहु	05-06-2094	82.35
गुरू	12-08-2094	82.56
शनि	02-11-2094	82.75
बुध	15-01-2095	82.98
केतु	14-02-2095	83.18
शुक्र	11-05-2095	83.26
सूर्य	06-06-2095	83.50

मंगल अन्तर

(06:06:2095 To 02:06:2096)

मंगल	27-06-2095	83.57
राहु	20-08-2095	83.62
गुरू	07-10-2095	83.77
शनि	04-12-2095	83.91
बुध	24-01-2096	84.06
केतु	14-02-2096	84.20
शुक्र	15-04-2096	84.26
सूर्य	03-05-2096	84.43
चन्द्रमा	02-06-2096	84.48

राहु अन्तर

(02:06:2096 To 21:12:2098)

राहु	20-10-2096	84.56
गुरू	21-02-2097	84.94
शनि	19-07-2097	85.28
बुध	28-11-2097	85.68
केतु	21-01-2098	86.05
शुक्र	25-06-2098	86.19
सूर्य	11-08-2098	86.62
चन्द्रमा	27-10-2098	86.75
मंगल	21-12-2098	86.96

गुरू अन्तर

(21:12:2098 To 28:03:2101)

गुरू	10-04-2099	87.11
शनि	19-08-2099	87.41
बुध	14-12-2099	87.77
केतु	31-01-2100	88.09
शुक्र	18-06-2100	88.22
सूर्य	30-07-2100	88.60
चन्द्रमा	06-10-2100	88.71
मंगल	24-11-2100	88.90
राहु	28-03-2101	89.04

शनि अन्तर

(28:03:2101 To 05:12:2103)

शनि	30-08-2101	89.38
बुध	17-01-2102	89.80
केतु	15-03-2102	90.18
शुक्र	26-08-2102	90.34
सूर्य	14-10-2102	90.79
चन्द्रमा	04-01-2103	90.92
मंगल	02-03-2103	91.15
राहु	27-07-2103	91.30
गुरू	05-12-2103	91.71

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

केतु दशा

(05:12:2103 To 05:12:2110)

केतु अन्तर
(05:12:2103 To 03:05:2104)

केतु	14-12-2103	92.07
शुक्र	08-01-2104	92.09
सूर्य	15-01-2104	92.16
चन्द्रमा	28-01-2104	92.18
मंगल	06-02-2104	92.21
राहु	28-02-2104	92.24
गुरू	19-03-2104	92.30
शनि	12-04-2104	92.35
बुध	03-05-2104	92.42

शुक्र अन्तर
(03:05:2104 To 03:07:2105)

शुक्र	13-07-2104	92.48
सूर्य	03-08-2104	92.67
चन्द्रमा	08-09-2104	92.73
मंगल	03-10-2104	92.83
राहु	06-12-2104	92.89
गुरू	01-02-2105	93.07
शनि	09-04-2105	93.22
बुध	08-06-2105	93.41
केतु	03-07-2105	93.57

सूर्य अन्तर
(03:07:2105 To 08:11:2105)

सूर्य	10-07-2105	93.64
चन्द्रमा	20-07-2105	93.66
मंगल	28-07-2105	93.69
राहु	16-08-2105	93.71
गुरू	02-09-2105	93.76
शनि	22-09-2105	93.81
बुध	10-10-2105	93.86
केतु	18-10-2105	93.91
शुक्र	08-11-2105	93.93

चन्द्रमा अन्तर
(08:11:2105 To 09:06:2106)

चन्द्रमा	26-11-2105	93.99
मंगल	08-12-2105	94.04
राहु	09-01-2106	94.07
गुरू	06-02-2106	94.16
शनि	12-03-2106	94.24
बुध	11-04-2106	94.33
केतु	24-04-2106	94.41
शुक्र	29-05-2106	94.45
सूर्य	09-06-2106	94.55

मंगल अन्तर
(09:06:2106 To 05:11:2106)

मंगल	18-06-2106	94.58
राहु	10-07-2106	94.60
गुरू	30-07-2106	94.66
शनि	22-08-2106	94.71
बुध	12-09-2106	94.78
केतु	21-09-2106	94.84
शुक्र	16-10-2106	94.86
सूर्य	23-10-2106	94.93
चन्द्रमा	05-11-2106	94.95

राहु अन्तर
(05:11:2106 To 23:11:2107)

राहु	01-01-2107	94.98
गुरू	21-02-2107	95.14
शनि	23-04-2107	95.28
बुध	16-06-2107	95.45
केतु	09-07-2107	95.60
शुक्र	11-09-2107	95.66
सूर्य	30-09-2107	95.83
चन्द्रमा	01-11-2107	95.88
मंगल	23-11-2107	95.97

गुरू अन्तर
(23:11:2107 To 30:10:2108)

गुरू	08-01-2108	96.03
शनि	02-03-2108	96.16
बुध	19-04-2108	96.31
केतु	09-05-2108	96.44
शुक्र	05-07-2108	96.49
सूर्य	22-07-2108	96.65
चन्द्रमा	19-08-2108	96.69
मंगल	08-09-2108	96.77
राहु	30-10-2108	96.83

शनि अन्तर
(30:10:2108 To 08:12:2109)

शनि	02-01-2109	96.97
बुध	28-02-2109	97.14
केतु	24-03-2109	97.30
शुक्र	30-05-2109	97.36
सूर्य	19-06-2109	97.55
चन्द्रमा	23-07-2109	97.60
मंगल	16-08-2109	97.70
राहु	15-10-2109	97.76
गुरू	08-12-2109	97.93

बुध अन्तर
(08:12:2109 To 05:12:2110)

बुध	29-01-2110	98.08
केतु	19-02-2110	98.22
शुक्र	20-04-2110	98.27
सूर्य	08-05-2110	98.44
चन्द्रमा	07-06-2110	98.49
मंगल	28-06-2110	98.57
राहु	22-08-2110	98.63
गुरू	09-10-2110	98.78
शनि	05-12-2110	98.91

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(05:12:2110 To 05:12:2130)

शुक्र अन्तर

(05:12:2110 To 06:04:2114)

शुक्र	26-06-2111	99.07
सूर्य	26-08-2111	99.62
चन्द्रमा	05-12-2111	99.79
मंगल	14-02-2112	100.07
राहु	15-08-2112	100.26
गुरू	25-01-2113	100.76
शनि	06-08-2113	101.21
बुध	25-01-2114	101.73
केतु	06-04-2114	102.21

सूर्य अन्तर

(06:04:2114 To 06:04:2115)

सूर्य	24-04-2114	102.40
चन्द्रमा	25-05-2114	102.45
मंगल	15-06-2114	102.53
राहु	09-08-2114	102.59
गुरू	26-09-2114	102.74
शनि	23-11-2114	102.88
बुध	14-01-2115	103.03
केतु	04-02-2115	103.18
शुक्र	06-04-2115	103.23

चन्द्रमा अन्तर

(06:04:2115 To 05:12:2116)

चन्द्रमा	27-05-2115	103.40
मंगल	01-07-2115	103.54
राहु	30-09-2115	103.64
गुरू	21-12-2115	103.89
शनि	26-03-2116	104.11
बुध	20-06-2116	104.37
केतु	26-07-2116	104.61
शुक्र	05-11-2116	104.71
सूर्य	05-12-2116	104.98

मंगल अन्तर

(05:12:2116 To 04:02:2118)

मंगल	30-12-2116	105.07
राहु	04-03-2117	105.13
गुरू	30-04-2117	105.31
शनि	06-07-2117	105.47
बुध	05-09-2117	105.65
केतु	29-09-2117	105.82
शुक्र	09-12-2117	105.88
सूर्य	31-12-2117	106.08
चन्द्रमा	04-02-2118	106.14

राहु अन्तर

(04:02:2118 To 04:02:2121)

राहु	18-07-2118	106.23
गुरू	11-12-2118	106.68
शनि	03-06-2119	107.08
बुध	05-11-2119	107.56
केतु	08-01-2120	107.98
शुक्र	09-07-2120	108.16
सूर्य	02-09-2120	108.66
चन्द्रमा	02-12-2120	108.81
मंगल	04-02-2121	109.06

गुरू अन्तर

(04:02:2121 To 05:10:2123)

गुरू	14-06-2121	109.23
शनि	15-11-2121	109.59
बुध	02-04-2122	110.01
केतु	29-05-2122	110.39
शुक्र	07-11-2122	110.54
सूर्य	26-12-2122	110.99
चन्द्रमा	17-03-2123	111.12
मंगल	12-05-2123	111.34
राहु	05-10-2123	111.50

शनि अन्तर

(05:10:2123 To 05:12:2126)

शनि	06-04-2124	111.90
बुध	17-09-2124	112.40
केतु	24-11-2124	112.85
शुक्र	04-06-2125	113.03
सूर्य	01-08-2125	113.56
चन्द्रमा	05-11-2125	113.72
मंगल	12-01-2126	113.98
राहु	04-07-2126	114.17
गुरू	05-12-2126	114.64

बुध अन्तर

(05:12:2126 To 05:10:2129)

बुध	01-05-2127	115.07
केतु	30-06-2127	115.47
शुक्र	19-12-2127	115.63
सूर्य	09-02-2128	116.11
चन्द्रमा	06-05-2128	116.25
मंगल	05-07-2128	116.48
राहु	08-12-2128	116.65
गुरू	25-04-2129	117.07
शनि	05-10-2129	117.45

केतु अन्तर

(05:10:2129 To 05:12:2130)

केतु	30-10-2129	117.90
शुक्र	09-01-2130	117.97
सूर्य	31-01-2130	118.16
चन्द्रमा	07-03-2130	118.22
मंगल	01-04-2130	118.32
राहु	04-06-2130	118.39
गुरू	31-07-2130	118.56
शनि	06-10-2130	118.72
बुध	05-12-2130	118.90

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

8 अष्टोत्तरी दशा

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 024:01:22) : शुक्र : 19 व0 10 मा0 28

आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का क्रितिकादी सिद्धान्त प्र ावी हो रहा है।

राहु लग्न में स्थित नहीं है, और लग्नाधिपति से केन्द्र या त्रिकोन में स्थित है। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।

कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में उपस्थित है।

शुक्र (21 वर्ष)

11/11/2011 To 10/10/2031

11th भाव	वृश्चिक राशि	सम संबंन्ध
विशेष	ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	5 , 10 भावपति

शुक्र	09-11-2014	00.00
सूर्य	09-01-2016	02.99
चन्द्रमा	09-12-2018	04.16
मंगल	30-06-2020	07.08
बुध	20-10-2023	08.63
शनि	29-09-2025	11.94
गुरू	10-06-2029	13.88
राहु	10-10-2031	17.58

सूर्य (6 वर्ष)

10/10/2031 To 10/10/2037

10th भाव	तुला राशि	सम संबंन्ध
नीच विशेष	विशा. (2) नक्षत्र	8 भावपति

सूर्य	08-02-2032	19.91
चन्द्रमा	09-12-2032	20.24
मंगल	21-05-2033	21.08
बुध	30-04-2034	21.52
शनि	19-11-2034	22.47
गुरू	09-12-2035	23.02
राहु	09-08-2036	24.08
शुक्र	10-10-2037	24.74

चन्द्रमा (15 वर्ष)

10/10/2037 To 09/10/2052

4th भाव	मेष राशि	शत्रु संबंन्ध
विशेष	कृति. (1) नक्षत्र	7 भावपति

चन्द्रमा	09-11-2039	25.91
मंगल	19-12-2040	27.99
बुध	30-04-2043	29.11
शनि	19-09-2044	31.47
गुरू	10-05-2047	32.86
राहु	09-01-2049	35.49
शुक्र	09-12-2051	37.16
सूर्य	09-10-2052	40.08

मंगल (8 वर्ष)

09/10/2052 To 09/10/2060

8th भाव	सिहं राशि	मित्र संबंन्ध
विशेष	मघा (2) नक्षत्र	4 , 11 भावपति

मंगल	14-05-2053	40.91
बुध	16-08-2054	41.50
शनि	14-05-2055	42.76
गुरू	09-10-2056	43.50
राहु	30-08-2057	44.91
शुक्र	21-03-2059	45.80
सूर्य	30-08-2059	47.36
चन्द्रमा	09-10-2060	47.80

बुध (17 वर्ष)

09/10/2060 To 10/10/2077

11th भाव	वृश्चिक राशि	सम संबंन्ध
स्वनक्षत्र विशेष	ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	6 , 9 भावपति

बुध	13-06-2063	48.91
शनि	09-01-2065	51.59
गुरू	05-01-2068	53.16
राहु	26-11-2069	56.15
शुक्र	17-03-2073	58.04
सूर्य	25-02-2074	61.35
चन्द्रमा	06-07-2076	62.29
मंगल	10-10-2077	64.65

शनि (10 वर्ष)

10/10/2077 To 10/10/2087

9th भाव	कन्या राशि	मित्र संबंन्ध
विशेष	चित्रा (2) नक्षत्र	1 , 2 भावपति

शनि	12-09-2078	65.91
गुरू	16-06-2080	66.84
राहु	27-07-2081	68.60
शुक्र	07-07-2083	69.71
सूर्य	26-01-2084	71.65
चन्द्रमा	17-06-2085	72.21
मंगल	14-03-2086	73.60
बुध	10-10-2087	74.34

गुरू (19 वर्ष)

10/10/2087 To 10/10/2106

4th भाव	मेष राशि	मित्र संबंन्ध
वक्री विशेष	अश्वि. (3) नक्षत्र	12 , 3 भावपति

गुरू	12-02-2091	75.91
राहु	24-03-2093	79.25
शुक्र	03-12-2096	81.36
सूर्य	23-12-2097	85.06
चन्द्रमा	13-08-2100	86.11
मंगल	09-01-2102	88.75
बुध	05-01-2105	90.16
शनि	10-10-2106	93.15

राहु (12 वर्ष)

10/10/2106 To 10/10/2118

11th भाव	वृश्चिक राशि	शत्रु संबंन्ध
नीच विशेष	ज्येष्ठा (2) नक्षत्र	भावपति

राहु	08-02-2108	94.91
शुक्र	10-06-2110	96.24
सूर्य	08-02-2111	98.58
चन्द्रमा	09-10-2112	99.24
मंगल	30-08-2113	100.91
बुध	20-07-2115	101.80
शनि	30-08-2116	103.69
गुरू	10-10-2118	104.80

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(11:11:2011 To 10:10:2031)

शुक्र अन्तर

(11:11:2011 To 09:11:2014)

शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	11-05-2012	00.00
मंगल	30-08-2012	00.50
बुध	22-04-2013	00.80
शनि	07-09-2013	01.44
गुरू	27-05-2014	01.82
राहु	09-11-2014	02.54

सूर्य अन्तर

(09:11:2014 To 09:01:2016)

सूर्य	03-12-2014	02.99
चन्द्रमा	31-01-2015	03.06
मंगल	03-03-2015	03.22
बुध	09-05-2015	03.31
शनि	18-06-2015	03.49
गुरू	01-09-2015	03.60
राहु	18-10-2015	03.80
शुक्र	09-01-2016	03.93

चन्द्रमा अन्तर

(09:01:2016 To 09:12:2018)

चन्द्रमा	05-06-2016	04.16
मंगल	23-08-2016	04.57
बुध	07-02-2017	04.78
शनि	17-05-2017	05.24
गुरू	20-11-2017	05.51
राहु	18-03-2018	06.02
शुक्र	11-10-2018	06.35
सूर्य	09-12-2018	06.92

मंगल अन्तर

(09:12:2018 To 30:06:2020)

मंगल	20-01-2019	07.08
बुध	20-04-2019	07.19
शनि	11-06-2019	07.44
गुरू	19-09-2019	07.58
राहु	21-11-2019	07.86
शुक्र	11-03-2020	08.03
सूर्य	12-04-2020	08.33
चन्द्रमा	30-06-2020	08.42

बुध अन्तर

(30:06:2020 To 20:10:2023)

बुध	06-01-2021	08.63
शनि	28-04-2021	09.15
गुरू	26-11-2021	09.46
राहु	09-04-2022	10.04
शुक्र	30-11-2022	10.41
सूर्य	05-02-2023	11.05
चन्द्रमा	22-07-2023	11.23
मंगल	20-10-2023	11.69

शनि अन्तर

(20:10:2023 To 29:09:2025)

शनि	24-12-2023	11.94
गुरू	28-04-2024	12.12
राहु	16-07-2024	12.46
शुक्र	01-12-2024	12.68
सूर्य	10-01-2025	13.06
चन्द्रमा	18-04-2025	13.16
मंगल	10-06-2025	13.43
बुध	29-09-2025	13.58

गुरू अन्तर

(29:09:2025 To 10:06:2029)

गुरू	25-05-2026	13.88
राहु	21-10-2026	14.53
शुक्र	11-07-2027	14.94
सूर्य	24-09-2027	15.66
चन्द्रमा	29-03-2028	15.87
मंगल	07-07-2028	16.38
बुध	05-02-2029	16.65
शनि	10-06-2029	17.24

राहु अन्तर

(10:06:2029 To 10:10:2031)

राहु	12-09-2029	17.58
शुक्र	25-02-2030	17.84
सूर्य	13-04-2030	18.29
चन्द्रमा	10-08-2030	18.42
मंगल	12-10-2030	18.74
बुध	23-02-2031	18.92
शनि	13-05-2031	19.28
गुरू	10-10-2031	19.50

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(10:10:2031 To 10:10:2037)

सूर्य अन्तर

(10:10:2031 To 08:02:2032)

सूर्य	16-10-2031	19.91
चन्द्रमा	02-11-2031	19.93
मंगल	11-11-2031	19.98
बुध	30-11-2031	20.00
शनि	12-12-2031	20.05
गुरू	02-01-2032	20.08
राहु	16-01-2032	20.14
शुक्र	08-02-2032	20.18

चन्द्रमा अन्तर

(08:02:2032 To 09:12:2032)

चन्द्रमा	22-03-2032	20.24
मंगल	13-04-2032	20.36
बुध	31-05-2032	20.42
शनि	29-06-2032	20.55
गुरू	21-08-2032	20.63
राहु	24-09-2032	20.78
शुक्र	22-11-2032	20.87
सूर्य	09-12-2032	21.03

मंगल अन्तर

(09:12:2032 To 21:05:2033)

मंगल	21-12-2032	21.08
बुध	16-01-2033	21.11
शनि	31-01-2033	21.18
गुरू	28-02-2033	21.22
राहु	18-03-2033	21.30
शुक्र	19-04-2033	21.35
सूर्य	28-04-2033	21.44
चन्द्रमा	21-05-2033	21.46

बुध अन्तर

(21:05:2033 To 30:04:2034)

बुध	14-07-2033	21.52
शनि	15-08-2033	21.67
गुरू	14-10-2033	21.76
राहु	22-11-2033	21.92
शुक्र	28-01-2034	22.03
सूर्य	16-02-2034	22.21
चन्द्रमा	05-04-2034	22.27
मंगल	30-04-2034	22.40

शनि अन्तर

(30:04:2034 To 19:11:2034)

शनि	19-05-2034	22.47
गुरू	24-06-2034	22.52
राहु	16-07-2034	22.62
शुक्र	25-08-2034	22.68
सूर्य	05-09-2034	22.79
चन्द्रमा	03-10-2034	22.82
मंगल	18-10-2034	22.89
बुध	19-11-2034	22.93

गुरू अन्तर

(19:11:2034 To 09:12:2035)

गुरू	26-01-2035	23.02
राहु	10-03-2035	23.21
शुक्र	24-05-2035	23.33
सूर्य	14-06-2035	23.53
चन्द्रमा	07-08-2035	23.59
मंगल	04-09-2035	23.74
बुध	04-11-2035	23.81
शनि	09-12-2035	23.98

राहु अन्तर

(09:12:2035 To 09:08:2036)

राहु	05-01-2036	24.08
शुक्र	22-02-2036	24.15
सूर्य	06-03-2036	24.28
चन्द्रमा	09-04-2036	24.32
मंगल	27-04-2036	24.41
बुध	05-06-2036	24.46
शनि	27-06-2036	24.57
गुरू	09-08-2036	24.63

शुक्र अन्तर

(09:08:2036 To 10:10:2037)

शुक्र	31-10-2036	24.74
सूर्य	24-11-2036	24.97
चन्द्रमा	22-01-2037	25.04
मंगल	23-02-2037	25.20
बुध	01-05-2037	25.28
शनि	09-06-2037	25.47
गुरू	23-08-2037	25.58
राहु	10-10-2037	25.78

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(10:10:2037 To 09:10:2052)

चन्द्रमा अन्तर

(10:10:2037 To 09:11:2039)

चन्द्रमा	23-01-2038	25.91
मंगल	20-03-2038	26.20
बुध	18-07-2038	26.35
शनि	27-09-2038	26.68
गुरू	07-02-2039	26.88
राहु	03-05-2039	27.24
शुक्र	28-09-2039	27.47
सूर्य	09-11-2039	27.88

मंगल अन्तर

(09:11:2039 To 19:12:2040)

मंगल	09-12-2039	27.99
बुध	11-02-2040	28.08
शनि	20-03-2040	28.25
गुरू	30-05-2040	28.35
राहु	14-07-2040	28.55
शुक्र	01-10-2040	28.67
सूर्य	24-10-2040	28.89
चन्द्रमा	19-12-2040	28.95

बुध अन्तर

(19:12:2040 To 30:04:2043)

बुध	04-05-2041	29.11
शनि	23-07-2041	29.48
गुरू	22-12-2041	29.70
राहु	27-03-2042	30.11
शुक्र	11-09-2042	30.37
सूर्य	29-10-2042	30.83
चन्द्रमा	25-02-2043	30.96
मंगल	30-04-2043	31.29

शनि अन्तर

(30:04:2043 To 19:09:2044)

शनि	16-06-2043	31.47
गुरू	13-09-2043	31.60
राहु	09-11-2043	31.84
शुक्र	15-02-2044	31.99
सूर्य	15-03-2044	32.26
चन्द्रमा	24-05-2044	32.34
मंगल	01-07-2044	32.53
बुध	19-09-2044	32.64

गुरू अन्तर

(19:09:2044 To 10:05:2047)

गुरू	08-03-2045	32.86
राहु	23-06-2045	33.32
शुक्र	27-12-2045	33.61
सूर्य	19-02-2046	34.13
चन्द्रमा	02-07-2046	34.27
मंगल	12-09-2046	34.64
बुध	10-02-2047	34.83
शनि	10-05-2047	35.25

राहु अन्तर

(10:05:2047 To 09:01:2049)

राहु	17-07-2047	35.49
शुक्र	12-11-2047	35.68
सूर्य	16-12-2047	36.00
चन्द्रमा	10-03-2048	36.10
मंगल	24-04-2048	36.33
बुध	29-07-2048	36.45
शनि	23-09-2048	36.71
गुरू	09-01-2049	36.87

शुक्र अन्तर

(09:01:2049 To 09:12:2051)

शुक्र	04-08-2049	37.16
सूर्य	02-10-2049	37.73
चन्द्रमा	27-02-2050	37.89
मंगल	17-05-2050	38.30
बुध	31-10-2050	38.51
शनि	07-02-2051	38.97
गुरू	13-08-2051	39.24
राहु	09-12-2051	39.75

सूर्य अन्तर

(09:12:2051 To 09:10:2052)

सूर्य	26-12-2051	40.08
चन्द्रमा	07-02-2052	40.12
मंगल	29-02-2052	40.24
बुध	17-04-2052	40.30
शनि	15-05-2052	40.43
गुरू	08-07-2052	40.51
राहु	11-08-2052	40.66
शुक्र	09-10-2052	40.75

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(09:10:2052 To 09:10:2060)

मंगल अन्तर

(09:10:2052 To 14:05:2053)

मंगल	25-10-2052	40.91
बुध	29-11-2052	40.96
शनि	19-12-2052	41.05
गुरू	26-01-2053	41.10
राहु	19-02-2053	41.21
शुक्र	02-04-2053	41.27
सूर्य	14-04-2053	41.39
चन्द्रमा	14-05-2053	41.42

बुध अन्तर

(14:05:2053 To 16:08:2054)

बुध	25-07-2053	41.50
शनि	06-09-2053	41.70
गुरू	26-11-2053	41.82
राहु	16-01-2054	42.04
शुक्र	15-04-2054	42.18
सूर्य	11-05-2054	42.42
चन्द्रमा	13-07-2054	42.49
मंगल	16-08-2054	42.67

शनि अन्तर

(16:08:2054 To 14:05:2055)

शनि	10-09-2054	42.76
गुरू	28-10-2054	42.83
राहु	27-11-2054	42.96
शुक्र	19-01-2055	43.04
सूर्य	03-02-2055	43.19
चन्द्रमा	12-03-2055	43.23
मंगल	01-04-2055	43.33
बुध	14-05-2055	43.39

गुरू अन्तर

(14:05:2055 To 09:10:2056)

गुरू	12-08-2055	43.50
राहु	08-10-2055	43.75
शुक्र	16-01-2056	43.91
सूर्य	14-02-2056	44.18
चन्द्रमा	25-04-2056	44.26
मंगल	03-06-2056	44.46
बुध	23-08-2056	44.56
शनि	09-10-2056	44.78

राहु अन्तर

(09:10:2056 To 30:08:2057)

राहु	14-11-2056	44.91
शुक्र	17-01-2057	45.01
सूर्य	04-02-2057	45.18
चन्द्रमा	21-03-2057	45.23
मंगल	14-04-2057	45.36
बुध	04-06-2057	45.42
शनि	04-07-2057	45.56
गुरू	30-08-2057	45.64

शुक्र अन्तर

(30:08:2057 To 21:03:2059)

शुक्र	18-12-2057	45.80
सूर्य	19-01-2058	46.10
चन्द्रमा	08-04-2058	46.19
मंगल	20-05-2058	46.40
बुध	17-08-2058	46.52
शनि	09-10-2058	46.77
गुरू	17-01-2059	46.91
राहु	21-03-2059	47.18

सूर्य अन्तर

(21:03:2059 To 30:08:2059)

सूर्य	30-03-2059	47.36
चन्द्रमा	21-04-2059	47.38
मंगल	03-05-2059	47.44
बुध	29-05-2059	47.47
शनि	13-06-2059	47.54
गुरू	11-07-2059	47.59
राहु	29-07-2059	47.66
शुक्र	30-08-2059	47.71

चन्द्रमा अन्तर

(30:08:2059 To 09:10:2060)

चन्द्रमा	25-10-2059	47.80
मंगल	24-11-2059	47.95
बुध	27-01-2060	48.04
शनि	05-03-2060	48.21
गुरू	15-05-2060	48.31
राहु	30-06-2060	48.51
शुक्र	17-09-2060	48.63
सूर्य	09-10-2060	48.85

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(09:10:2060 To 10:10:2077)

बुध अन्तर

(09:10:2060 To 13:06:2063)

बुध	12-03-2061	48.91
शनि	11-06-2061	49.33
गुरू	30-11-2061	49.58
राहु	18-03-2062	50.05
शुक्र	24-09-2062	50.35
सूर्य	17-11-2062	50.87
चन्द्रमा	02-04-2063	51.02
मंगल	13-06-2063	51.39

शनि अन्तर

(13:06:2063 To 09:01:2065)

शनि	05-08-2063	51.59
गुरू	15-11-2063	51.73
राहु	17-01-2064	52.01
शुक्र	08-05-2064	52.18
सूर्य	09-06-2064	52.49
चन्द्रमा	28-08-2064	52.58
मंगल	10-10-2064	52.80
बुध	09-01-2065	52.91

गुरू अन्तर

(09:01:2065 To 05:01:2068)

गुरू	20-07-2065	53.16
राहु	18-11-2065	53.69
शुक्र	18-06-2066	54.02
सूर्य	18-08-2066	54.60
चन्द्रमा	17-01-2067	54.77
मंगल	07-04-2067	55.18
बुध	26-09-2067	55.40
शनि	05-01-2068	55.87

राहु अन्तर

(05:01:2068 To 26:11:2069)

राहु	22-03-2068	56.15
शुक्र	04-08-2068	56.36
सूर्य	11-09-2068	56.73
चन्द्रमा	16-12-2068	56.83
मंगल	05-02-2069	57.10
बुध	25-05-2069	57.24
शनि	28-07-2069	57.53
गुरू	26-11-2069	57.71

शुक्र अन्तर

(26:11:2069 To 17:03:2073)

शुक्र	18-07-2070	58.04
सूर्य	23-09-2070	58.68
चन्द्रमा	10-03-2071	58.87
मंगल	07-06-2071	59.33
बुध	14-12-2071	59.57
शनि	04-04-2072	60.09
गुरू	03-11-2072	60.40
राहु	17-03-2073	60.98

सूर्य अन्तर

(17:03:2073 To 25:02:2074)

सूर्य	06-04-2073	61.35
चन्द्रमा	23-05-2073	61.40
मंगल	18-06-2073	61.53
बुध	11-08-2073	61.60
शनि	12-09-2073	61.75
गुरू	12-11-2073	61.84
राहु	20-12-2073	62.00
शुक्र	25-02-2074	62.11

चन्द्रमा अन्तर

(25:02:2074 To 06:07:2076)

चन्द्रमा	25-06-2074	62.29
मंगल	28-08-2074	62.62
बुध	10-01-2075	62.79
शनि	31-03-2075	63.17
गुरू	30-08-2075	63.38
राहु	03-12-2075	63.80
शुक्र	19-05-2076	64.06
सूर्य	06-07-2076	64.52

मंगल अन्तर

(06:07:2076 To 10:10:2077)

मंगल	10-08-2076	64.65
बुध	21-10-2076	64.75
शनि	03-12-2076	64.94
गुरू	22-02-2077	65.06
राहु	14-04-2077	65.28
शुक्र	12-07-2077	65.42
सूर्य	07-08-2077	65.67
चन्द्रमा	10-10-2077	65.74

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(10:10:2077 To 10:10:2087)

शनि अन्तर

(10:10:2077 To 12:09:2078)

शनि	10-11-2077	65.91
गुरू	08-01-2078	66.00
राहु	15-02-2078	66.16
शुक्र	22-04-2078	66.26
सूर्य	10-05-2078	66.44
चन्द्रमा	26-06-2078	66.49
मंगल	21-07-2078	66.62
बुध	12-09-2078	66.69

गुरू अन्तर

(12:09:2078 To 16:06:2080)

गुरू	03-01-2079	66.84
राहु	16-03-2079	67.15
शुक्र	19-07-2079	67.34
सूर्य	23-08-2079	67.68
चन्द्रमा	21-11-2079	67.78
मंगल	07-01-2080	68.03
बुध	17-04-2080	68.16
शनि	16-06-2080	68.43

राहु अन्तर

(16:06:2080 To 27:07:2081)

राहु	31-07-2080	68.60
शुक्र	18-10-2080	68.72
सूर्य	10-11-2080	68.94
चन्द्रमा	05-01-2081	69.00
मंगल	04-02-2081	69.15
बुध	09-04-2081	69.23
शनि	17-05-2081	69.41
गुरू	27-07-2081	69.51

शुक्र अन्तर

(27:07:2081 To 07:07:2083)

शुक्र	12-12-2081	69.71
सूर्य	21-01-2082	70.09
चन्द्रमा	29-04-2082	70.19
मंगल	21-06-2082	70.46
बुध	10-10-2082	70.61
शनि	15-12-2082	70.91
गुरू	19-04-2083	71.09
राहु	07-07-2083	71.44

सूर्य अन्तर

(07:07:2083 To 26:01:2084)

सूर्य	18-07-2083	71.65
चन्द्रमा	15-08-2083	71.68
मंगल	30-08-2083	71.76
बुध	01-10-2083	71.80
शनि	20-10-2083	71.89
गुरू	25-11-2083	71.94
राहु	17-12-2083	72.04
शुक्र	26-01-2084	72.10

चन्द्रमा अन्तर

(26:01:2084 To 17:06:2085)

चन्द्रमा	05-04-2084	72.21
मंगल	13-05-2084	72.40
बुध	01-08-2084	72.50
शनि	17-09-2084	72.72
गुरू	16-12-2084	72.85
राहु	10-02-2085	73.09
शुक्र	19-05-2085	73.25
सूर्य	17-06-2085	73.52

मंगल अन्तर

(17:06:2085 To 14:03:2086)

मंगल	07-07-2085	73.60
बुध	18-08-2085	73.65
शनि	12-09-2085	73.77
गुरू	30-10-2085	73.84
राहु	29-11-2085	73.97
शुक्र	20-01-2086	74.05
सूर्य	04-02-2086	74.19
चन्द्रमा	14-03-2086	74.23

बुध अन्तर

(14:03:2086 To 10:10:2087)

बुध	12-06-2086	74.34
शनि	05-08-2086	74.58
गुरू	14-11-2086	74.73
राहु	17-01-2087	75.01
शुक्र	08-05-2087	75.18
सूर्य	09-06-2087	75.49
चन्द्रमा	28-08-2087	75.58
मंगल	10-10-2087	75.79

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गुरू दशा

(10:10:2087 To 10:10:2106)

गुरू अन्तर

(10:10:2087 To 12:02:2091)

गुरू	12-05-2088	75.91
राहु	24-09-2088	76.50
शुक्र	20-05-2089	76.87
सूर्य	27-07-2089	77.52
चन्द्रमा	12-01-2090	77.71
मंगल	13-04-2090	78.17
बुध	22-10-2090	78.42
शनि	12-02-2091	78.94

राहु अन्तर

(12:02:2091 To 24:03:2093)

राहु	08-05-2091	79.25
शुक्र	05-10-2091	79.49
सूर्य	17-11-2091	79.90
चन्द्रमा	03-03-2092	80.02
मंगल	29-04-2092	80.31
बुध	29-08-2092	80.47
शनि	08-11-2092	80.80
गुरू	24-03-2093	80.99

शुक्र अन्तर

(24:03:2093 To 03:12:2096)

शुक्र	11-12-2093	81.36
सूर्य	24-02-2094	82.08
चन्द्रमा	31-08-2094	82.29
मंगल	08-12-2094	82.80
बुध	09-07-2095	83.08
शनि	11-11-2095	83.66
गुरू	05-07-2096	84.00
राहु	03-12-2096	84.65

सूर्य अन्तर

(03:12:2096 To 23:12:2097)

सूर्य	24-12-2096	85.06
चन्द्रमा	16-02-2097	85.12
मंगल	16-03-2097	85.26
बुध	16-05-2097	85.34
शनि	20-06-2097	85.51
गुरू	27-08-2097	85.61
राहु	09-10-2097	85.79
शुक्र	23-12-2097	85.91

चन्द्रमा अन्तर

(23:12:2097 To 13:08:2100)

चन्द्रमा	06-05-2098	86.11
मंगल	16-07-2098	86.48
बुध	15-12-2098	86.68
शनि	14-03-2099	87.09
गुरू	30-08-2099	87.34
राहु	15-12-2099	87.80
शुक्र	21-06-2100	88.09
सूर्य	13-08-2100	88.61

मंगल अन्तर

(13:08:2100 To 09:01:2102)

मंगल	20-09-2100	88.75
बुध	10-12-2100	88.86
शनि	27-01-2101	89.08
गुरू	27-04-2101	89.21
राहु	23-06-2101	89.46
शुक्र	01-10-2101	89.61
सूर्य	29-10-2101	89.89
चन्द्रमा	09-01-2102	89.97

बुध अन्तर

(09:01:2102 To 05:01:2105)

बुध	30-06-2102	90.16
शनि	09-10-2102	90.63
गुरू	19-04-2103	90.91
राहु	18-08-2103	91.43
शुक्र	17-03-2104	91.77
सूर्य	17-05-2104	92.35
चन्द्रमा	16-10-2104	92.51
मंगल	05-01-2105	92.93

शनि अन्तर

(05:01:2105 To 10:10:2106)

शनि	06-03-2105	93.15
गुरू	27-06-2105	93.31
राहु	06-09-2105	93.62
शुक्र	09-01-2106	93.82
सूर्य	14-02-2106	94.16
चन्द्रमा	14-05-2106	94.26
मंगल	30-06-2106	94.50
बुध	10-10-2106	94.63

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(10:10:2106 To 10:10:2118)

राहु अन्तर

(10:10:2106 To 08:02:2108)

राहु	03-12-2106	94.91
शुक्र	07-03-2107	95.06
सूर्य	03-04-2107	95.32
चन्द्रमा	10-06-2107	95.39
मंगल	16-07-2107	95.58
बुध	01-10-2107	95.68
शनि	15-11-2107	95.89
गुरू	08-02-2108	96.01

शुक्र अन्तर

(08:02:2108 To 10:06:2110)

शुक्र	23-07-2108	96.24
सूर्य	09-09-2108	96.70
चन्द्रमा	05-01-2109	96.83
मंगल	09-03-2109	97.15
बुध	22-07-2109	97.32
शनि	08-10-2109	97.69
गुरू	07-03-2110	97.91
राहु	10-06-2110	98.32

सूर्य अन्तर

(10:06:2110 To 08:02:2111)

सूर्य	23-06-2110	98.58
चन्द्रमा	27-07-2110	98.61
मंगल	14-08-2110	98.71
बुध	22-09-2110	98.76
शनि	14-10-2110	98.86
गुरू	26-11-2110	98.92
राहु	23-12-2110	99.04
शुक्र	08-02-2111	99.11

चन्द्रमा अन्तर

(08:02:2111 To 09:10:2112)

चन्द्रमा	04-05-2111	99.24
मंगल	18-06-2111	99.48
बुध	22-09-2111	99.60
शनि	17-11-2111	99.86
गुरू	03-03-2112	100.02
राहु	10-05-2112	100.31
शुक्र	05-09-2112	100.49
सूर्य	09-10-2112	100.82

मंगल अन्तर

(09:10:2112 To 30:08:2113)

मंगल	02-11-2112	100.91
बुध	24-12-2112	100.98
शनि	23-01-2113	101.12
गुरू	21-03-2113	101.20
राहु	26-04-2113	101.36
शुक्र	28-06-2113	101.45
सूर्य	16-07-2113	101.63
चन्द्रमा	30-08-2113	101.68

बुध अन्तर

(30:08:2113 To 20:07:2115)

बुध	16-12-2113	101.80
शनि	18-02-2114	102.10
गुरू	20-06-2114	102.27
राहु	04-09-2114	102.60
शुक्र	16-01-2115	102.81
सूर्य	24-02-2115	103.18
चन्द्रमा	30-05-2115	103.29
मंगल	20-07-2115	103.55

शनि अन्तर

(20:07:2115 To 30:08:2116)

शनि	27-08-2115	103.69
गुरू	06-11-2115	103.79
राहु	21-12-2115	103.99
शुक्र	09-03-2116	104.11
सूर्य	01-04-2116	104.33
चन्द्रमा	28-05-2116	104.39
मंगल	27-06-2116	104.54
बुध	30-08-2116	104.63

गुरू अन्तर

(30:08:2116 To 10:10:2118)

गुरू	13-01-2117	104.80
राहु	08-04-2117	105.17
शुक्र	05-09-2117	105.41
सूर्य	18-10-2117	105.82
चन्द्रमा	02-02-2118	105.93
मंगल	31-03-2118	106.23
बुध	30-07-2118	106.38
शनि	10-10-2118	106.72

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

योगिनी दशा – 1

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 024:01:22) : उल्का (शनि) : 5 व0 0 मा0 24 दि0

उल्का (शनि) (कृतिका) दशा

11:11:2011 To 05:12:2016	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	024:00:00
उल्का (शनि)	05:12:2010
सिद्धा (शुक्र)	05:12:2011
संकटा (राहु)	04:02:2013
मंगला (चन्द्र)	06:06:2014
पिंगला (सुर्य)	06:08:2014
धन्या (गुरू)	05:12:2014
भ्रमरी (मंगल)	06:06:2015
भद्रिका (बुध)	04:02:2016

सिद्धा (शुक्र) (रोहिणी) दशा

05:12:2016 To 05:12:2023	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	255:43:59
सिद्धा (शुक्र)	05:12:2016
संकटा (राहु)	16:04:2018
मंगला (चन्द्र)	05:11:2019
पिंगला (सुर्य)	15:01:2020
धन्या (गुरू)	05:06:2020
भ्रमरी (मंगल)	05:01:2021
भद्रिका (बुध)	16:10:2021
उल्का (शनि)	06:10:2022

संकटा (राहु) (मृगशिर) दशा

05:12:2023 To 05:12:2031	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	357:38:35
संकटा (राहु)	05:12:2023
मंगला (चन्द्र)	15:09:2025
पिंगला (सुर्य)	05:12:2025
धन्या (गुरू)	17:05:2026
भ्रमरी (मंगल)	15:01:2027
भद्रिका (बुध)	05:12:2027
उल्का (शनि)	15:01:2029
सिद्धा (शुक्र)	17:05:2030

मंगला (चन्द्र) (अरिद्रा) दशा

05:12:2031 To 05:12:2032	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	260:22:50
मंगला (चन्द्र)	05:12:2031
पिंगला (सुर्य)	15:12:2031
धन्या (गुरू)	05:01:2032
भ्रमरी (मंगल)	04:02:2032
भद्रिका (बुध)	16:03:2032
उल्का (शनि)	06:05:2032
सिद्धा (शुक्र)	06:07:2032
संकटा (राहु)	15:09:2032

पिंगला (सुर्य) (पुनर्वसु) दशा

05:12:2032 To 05:12:2034	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	213:57:45
पिंगला (सुर्य)	05:12:2032
धन्या (गुरू)	15:01:2033
भ्रमरी (मंगल)	17:03:2033
भद्रिका (बुध)	06:06:2033
उल्का (शनि)	15:09:2033
सिद्धा (शुक्र)	15:01:2034
संकटा (राहु)	06:06:2034
मंगला (चन्द्र)	15:11:2034

धन्या (गुरू) (पुष्य) दशा

05:12:2034 To 05:12:2037	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	189:03:49
धन्या (गुरू)	05:12:2034
भ्रमरी (मंगल)	07:03:2035
भद्रिका (बुध)	06:07:2035
उल्का (शनि)	05:12:2035
सिद्धा (शुक्र)	05:06:2036
संकटा (राहु)	05:01:2037
मंगला (चन्द्र)	05:09:2037
पिंगला (सुर्य)	06:10:2037

भ्रमरी (मंगल) (अश्लेषा) दशा

05:12:2037 To 05:12:2041	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	352:48:28
भ्रमरी (मंगल)	05:12:2037
भद्रिका (बुध)	17:05:2038
उल्का (शनि)	05:12:2038
सिद्धा (शुक्र)	06:08:2039
संकटा (राहु)	16:05:2040
मंगला (चन्द्र)	06:04:2041
पिंगला (सुर्य)	17:05:2041
धन्या (गुरू)	06:08:2041

भद्रिका (बुध) (मघा) दशा

05:12:2041 To 05:12:2046	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	278:26:40
भद्रिका (बुध)	05:12:2041
उल्का (शनि)	16:08:2042
सिद्धा (शुक्र)	16:06:2043
संकटा (राहु)	05:06:2044
मंगला (चन्द्र)	16:07:2045
पिंगला (सुर्य)	05:09:2045
धन्या (गुरू)	15:12:2045
भ्रमरी (मंगल)	17:05:2046

Note - All the Dates are indiacating Dasha Start Date.

योगिनी दशा – 2

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 024:01:22) : उल्का (शनि) : 5 व0 0 मा0 24 दि0

उल्का (शनि) (पुर्वफाल्गुनी) दशा

05:12:2046 To 05:12:2052	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	046:32:35
उल्का (शनि)	05:12:2046
सिद्धा (शुक्र)	05:12:2047
संकटा (राहु)	04:02:2049
मंगला (चन्द्र)	06:06:2050
पिंगला (सुर्य)	06:08:2050
धन्या (गुरू)	05:12:2050
भ्रमरी (मंगल)	06:06:2051
भद्रिका (बुध)	04:02:2052

सिद्धा (शुक्र) (उत्तरफाल्गुनी) दशा

05:12:2052 To 05:12:2059	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	071:26:31
सिद्धा (शुक्र)	05:12:2052
संकटा (राहु)	16:04:2054
मंगला (चन्द्र)	05:11:2055
पिंगला (सुर्य)	15:01:2056
धन्या (गुरू)	05:06:2056
भ्रमरी (मंगल)	05:01:2057
भद्रिका (बुध)	16:10:2057
उल्का (शनि)	06:10:2058

संकटा (राहु) (हस्ता) दशा

05:12:2059 To 05:12:2067	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	260:22:50
संकटा (राहु)	05:12:2059
मंगला (चन्द्र)	15:09:2061
पिंगला (सुर्य)	05:12:2061
धन्या (गुरू)	17:05:2062
भ्रमरी (मंगल)	15:01:2063
भद्रिका (बुध)	05:12:2063
उल्का (शनि)	15:01:2065
सिद्धा (शुक्र)	17:05:2066

मंगला (चन्द्र) (चित्रा) दशा

05:12:2067 To 05:12:2068	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	154:44:38
मंगला (चन्द्र)	05:12:2067
पिंगला (सुर्य)	15:12:2067
धन्या (गुरू)	05:01:2068
भ्रमरी (मंगल)	04:02:2068
भद्रिका (बुध)	16:03:2068
उल्का (शनि)	06:05:2068
सिद्धा (शुक्र)	06:07:2068
संकटा (राहु)	15:09:2068

पिंगला (सुर्य) (स्वाति) दशा

05:12:2068 To 05:12:2070	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	076:05:22
पिंगला (सुर्य)	05:12:2068
धन्या (गुरू)	15:01:2069
भ्रमरी (मंगल)	17:03:2069
भद्रिका (बुध)	06:06:2069
उल्का (शनि)	15:09:2069
सिद्धा (शुक्र)	15:01:2070
संकटा (राहु)	06:06:2070
मंगला (चन्द्र)	15:11:2070

धन्या (गुरू) (विशाखा) दशा

05:12:2070 To 05:12:2073	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	019:01:35
धन्या (गुरू)	05:12:2070
भ्रमरी (मंगल)	07:03:2071
भद्रिका (बुध)	06:07:2071
उल्का (शनि)	05:12:2071
सिद्धा (शुक्र)	05:06:2072
संकटा (राहु)	05:01:2073
मंगला (चन्द्र)	05:09:2073
पिंगला (सुर्य)	06:10:2073

भ्रमरी (मंगल) (अनुराधा) दशा

05:12:2073 To 05:12:2077	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	305:33:13
भ्रमरी (मंगल)	05:12:2073
भद्रिका (बुध)	17:05:2074
उल्का (शनि)	05:12:2074
सिद्धा (शुक्र)	06:08:2075
संकटा (राहु)	16:05:2076
मंगला (चन्द्र)	06:04:2077
पिंगला (सुर्य)	17:05:2077
धन्या (गुरू)	06:08:2077

भद्रिका (बुध) (ज्येष्ठा) दशा

05:12:2077 To 05:12:2082	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	093:36:33
भद्रिका (बुध)	05:12:2077
उल्का (शनि)	16:08:2078
सिद्धा (शुक्र)	16:06:2079
संकटा (राहु)	05:06:2080
मंगला (चन्द्र)	16:07:2081
पिंगला (सुर्य)	05:09:2081
धन्या (गुरू)	15:12:2081
भ्रमरी (मंगल)	17:05:2082

Note - All the Dates are indiacating Dasha Start Date.

योगिनी दशा – 3

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 024:01:22) : उल्का (शनि) : 5 व0 0 मा0 24 दि0

उल्का (शनि) (मूला) दशा

05:12:2082 To 05:12:2088	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	231:11:26
उल्का (शनि)	05:12:2082
सिद्धा (शुक्र)	05:12:2083
संकटा (राहु)	04:02:2085
मंगला (चन्द्र)	06:06:2086
पिंगला (सुर्य)	06:08:2086
धन्या (गुरू)	05:12:2086
भ्रमरी (मंगल)	06:06:2087
भद्रिका (बुध)	04:02:2088

सिद्धा (शुक्र) (पूर्वाषाढ़) दशा

05:12:2088 To 05:12:2095	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	093:59:05
सिद्धा (शुक्र)	05:12:2088
संकटा (राहु)	16:04:2090
मंगला (चन्द्र)	05:11:2091
पिंगला (सुर्य)	15:01:2092
धन्या (गुरू)	05:06:2092
भ्रमरी (मंगल)	05:01:2093
भद्रिका (बुध)	16:10:2093
उल्का (शनि)	06:10:2094

संकटा (राहु) (उत्तराषाढ़) दशा

05:12:2095 To 05:12:2103	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	076:05:22
संकटा (राहु)	05:12:2095
मंगला (चन्द्र)	15:09:2097
पिंगला (सुर्य)	05:12:2097
धन्या (गुरू)	17:05:2098
भ्रमरी (मंगल)	15:01:2099
भद्रिका (बुध)	05:12:2099
उल्का (शनि)	15:01:2101
सिद्धा (शुक्र)	17:05:2102

मंगला (चन्द्र) (श्रवण) दशा

05:12:2103 To 05:12:2104	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	057:28:53
मंगला (चन्द्र)	05:12:2103
पिंगला (सुर्य)	15:12:2103
धन्या (गुरू)	05:01:2104
भ्रमरी (मंगल)	04:02:2104
भद्रिका (बुध)	16:03:2104
उल्का (शनि)	06:05:2104
सिद्धा (शुक्र)	06:07:2104
संकटा (राहु)	15:09:2104

पिंगला (सुर्य) (धनिष्ठा) दशा

05:12:2104 To 05:12:2106	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	330:27:09
पिंगला (सुर्य)	05:12:2104
धन्या (गुरू)	15:01:2105
भ्रमरी (मंगल)	17:03:2105
भद्रिका (बुध)	06:06:2105
उल्का (शनि)	15:09:2105
सिद्धा (शुक्र)	15:01:2106
संकटा (राहु)	06:06:2106
मंगला (चन्द्र)	15:11:2106

धन्या (गुरू) (शतभिषा) दशा

05:12:2106 To 05:12:2109	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	241:09:11
धन्या (गुरू)	05:12:2106
भ्रमरी (मंगल)	07:03:2107
भद्रिका (बुध)	06:07:2107
उल्का (शनि)	05:12:2107
सिद्धा (शुक्र)	05:06:2108
संकटा (राहु)	05:01:2109
मंगला (चन्द्र)	05:09:2109
पिंगला (सुर्य)	06:10:2109

भ्रमरी (मंगल) (पूर्वाभाद्र) दशा

05:12:2109 To 05:12:2113	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	135:30:58
भ्रमरी (मंगल)	05:12:2109
भद्रिका (बुध)	17:05:2110
उल्का (शनि)	05:12:2110
सिद्धा (शुक्र)	06:08:2111
संकटा (राहु)	16:05:2112
मंगला (चन्द्र)	06:04:2113
पिंगला (सुर्य)	17:05:2113
धन्या (गुरू)	06:08:2113

भद्रिका (बुध) (उत्तरभाद्र) दशा

05:12:2113 To 05:12:2118	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	046:21:19
भद्रिका (बुध)	05:12:2113
उल्का (शनि)	16:08:2114
सिद्धा (शुक्र)	16:06:2115
संकटा (राहु)	05:06:2116
मंगला (चन्द्र)	16:07:2117
पिंगला (सुर्य)	05:09:2117
धन्या (गुरू)	15:12:2117
भ्रमरी (मंगल)	17:05:2118

Note - All the Dates are indiacating Dasha Start Date.

गोचर शनि (शनि साढ़ेसाती)

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

शनि साढ़े साती साढ़े सात साल की अवधि है, जब शनि किसी व्यक्ति के ज्योतिषीय कुण्डली में जन्म के चंद्रमा (जन्म राशि) से 12वें, पहले और दूसरे घर में गोचर करता है। यह अवधि प्रायः जीवन की चुनौतियों, सीखने के अनुभवों और संभावित परिवर्तनों के माध्यम से विकास से संबद्ध होती है, लेकिन यह कठिनाइयाँ और परीक्षण भी ला सकती है जिन्हें व्यक्ति को धैर्य, अनुशासन और लचीलेपन के माध्यम से दूर करना होगा। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि साढ़े साती का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति के लिए अद्वितीय होता है और काफी हद तक उनकी व्यक्तिगत कर्म यात्रा पर निर्भर करता है।

शनि साढेसाती के प्रथम चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व–म–दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	मीन	29:03:2025	03:06:2027	2 y.2 m.5 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	मीन	20:10:2027	23:02:2028	0 y.4 m.4 d.	
द्वितिय ढ़ैय्या	मेष	03:06:2027	20:10:2027	0 y.4 m.17 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	मेष	23:02:2028	08:08:2029	1 y.5 m.14 d.	
तृतिय ढ़ैय्या	वृष	08:08:2029	05:10:2029	0 y.1 m.27 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	वृष	17:04:2030	31:05:2032	2 y.1 m.14 d.	
कंटक शनि	कर्क	13:07:2034	27:08:2036	2 y.1 m.15 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)					
अष्टम शनि	वृश्चिक	12:12:2043	23:06:2044	0 y.6 m.11 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	वृश्चिक	30:08:2044	08:12:2046	2 y.3 m.8 d.	

शनि साढेसाती के द्वितिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व–म–दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	मीन	14:05:2054	02:09:2054	0 y.3 m.19 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	मीन	05:02:2055	07:04:2057	2 y.2 m.0 d.	
द्वितिय ढ़ैय्या	मेष	07:04:2057	28:05:2059	2 y.1 m.20 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)					
तृतिय ढ़ैय्या	वृष	28:05:2059	11:07:2061	2 y.1 m.13 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	वृष	13:02:2062	07:03:2062	0 y.0 m.22 d.	
कंटक शनि	कर्क	24:08:2063	06:02:2064	0 y.5 m.14 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	कर्क	09:05:2064	13:10:2065	1 y.5 m.4 d.	
अष्टम शनि	वृश्चिक	05:02:2073	31:03:2073	0 y.1 m.23 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	वृश्चिक	23:10:2073	16:01:2076	2 y.2 m.24 d.	

शनि साढेसाती के तृतिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व–म–दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	मीन	20:03:2084	21:05:2086	2 y.2 m.0 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	मीन	10:11:2086	08:02:2087	0 y.2 m.29 d.	
द्वितिय ढ़ैय्या	मेष	21:05:2086	10:11:2086	0 y.5 m.21 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	मेष	08:02:2087	18:07:2088	1 y.5 m.8 d.	
तृतिय ढ़ैय्या	वृष	18:07:2088	31:10:2088	0 y.3 m.13 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	वृष	05:04:2089	19:09:2090	1 y.5 m.15 d.	
कंटक शनि	कर्क	02:07:2093	18:08:2095	2 y.1 m.16 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)					
अष्टम शनि	वृश्चिक	03:12:2102	29:11:2105	2 y.11 m.26 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)					

कुण्डली में प्रभावी सर्वाधिक लाभकारी राजयोग

♂	चतुर्थेश मंगल	भाव संख्या – 8
यह ग्रह स्थिति घर, परिवार और भावनात्मक सुरक्षा से संबंधित परिवर्तन और रूपान्तरण का सुझाव देती है, जो बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के गहरे रहस्यों को समझने के माध्यम से विकास की ओर ले जा सकती है।		
☿	नवमेश बुध	भाव संख्या – 11
यह योग इंगित करता है कि जातक धार्मिक साधनों, विदेश यात्रा या उच्च शिक्षा के माध्यम से धन और सफलता प्राप्त कर सकता है।		
♄	लग्नेश शनि	भाव संख्या – 9
यह योग जातक के मजबूत व्यक्तित्व और धार्मिकता के कारण जीवन में सौभाग्य, आध्यात्मिक विकास और समृद्धि का प्रतीक है।		
☿	षष्ठेश बुध	भाव संख्या – 11
यह ग्रह स्थिति बताती है कि जातक नेटवर्किंग और दोस्ती के माध्यम से बाधाओं और दुश्मनों पर काबू पा सकता है और अंततः सफलता प्राप्त कर सकता है।		
♄	द्वितियेश शनि	भाव संख्या – 9
यह ग्रह स्थिति उच्च शिक्षा, विदेश यात्रा या आध्यात्मिक गतिविधियों के माध्यम से धन और वित्तीय स्थिरता में लाभ का संकेत देती है।		
☉	अष्टमेश सूर्य	भाव संख्या – 10
यह ग्रह स्थिति इंगित करती है कि जातक अपने पेशेवर जीवन में परिवर्तन और विकास का अनुभव कर सकता है, संभवतः करियर में बदलाव या चुनौतियों पर काबू पाने के कारण।		

कुण्डली में प्रभावी सर्वाधिक अशुभ योग

	चतुर्थेश मंगल	भाव संख्या – 8
यह ग्रह स्थिति आकस्मिक परिवर्तन, विरासत या संयुक्त संसाधनों के कारण जातक के घर, परिवार या संपत्ति से संबंधित संभावित हानि या कठिनाइयों का संकेत देती है।		
	सप्तमेश चन्द्रमा	**भाव संख्या – 10**
यह योग साझेदारी, विवाह, या व्यावसायिक सहकारिता में चुनौतियों, हानि या कठिनाइयों का संकेत देता है, जो प्रायः जातक के घर, परिवार या संपत्ति से संबंधित होते हैं।		

अशुभ योग जिनका उपाय करना चाहिए 1

सूर्य ग्रहण योग तब बनता है जब जन्म कुंडली में सूर्य की राहु या केतु के साथ युति होती है।			
सूर्य ग्रहण योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		
चंद्र ग्रहण योग तब बनता है जब चंद्रमा (चंद्र) की जन्म कुंडली में राहु या केतु के साथ युति होती है।			
चन्द्र ग्रहण योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		
नज़र योग (कमजोर चंद्र दोष) तब लागू होता है जब जन्म कुंडली में चंद्रमा 6वें, 8वें या 12वें घर में हो।			
नज़र योग (कमजोर चन्द्र)	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		
दुर्योग तब होता है जब 10वें भाव का स्वामी 6वें, 8वें या 12वें भाव में स्थित हो।			
दुर्योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		
दैन्य योग तब होता है जब केंद्र भाव (1, 4, 7, या 10वें) का स्वामी 6, 8, या 12वें भाव में स्थित हो।			
दैन्य योग	**चतुर्थेश (मंगल) पे आठवें भाव में**	1. व्यक्तिगत या व्यावसायिक सफलता प्राप्त करने में देरी या असफलता।, 2. करियर या शिक्षा में बाधाएँ या चुनौतियाँ।, 3. स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं या शारीरिक परेशानी।, 4. व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों तरह से स्थिर रिश्ते बनाए रखने में कठिनाइयाँ।	**मंगल का उपाय करें**

अशुभ योग जिनका उपाय करना चाहिए 2

विष (विष्कुंभ) योग तब बनता है जब किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली में चंद्रमा शनि के साथ युत होता है।

विष (विषकुम्भ) योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

श्रापित योग, तब बनता है जब शनि (शनि) राहु या केतु के साथ युत हो।

श्रापित योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

अंगारक योग तब बनता है जब मंगल शनि, राहु या केतु के साथ युत हो।

अंगारक योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

गुरु चांडाल योग तब बनता है जब जन्म कुंडली में बृहस्पति (गुरु) की राहु के साथ युति होती है।

गुरू चांडाल योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

कमजोर शुक्र योग तब बनता है जब जन्म कुंडली में शुक्र शनि, राहु या केतु के साथ होता है।

कमजोर शुक्र योग	**शुक्र राहु के साथ**	शुक्र और राहु की युति जातक को भावुक, करिश्माई और दूसरों के लिए आकर्षक बना सकती है। हालाँकि, यह रिश्तों में समस्याएं, तीव्र इच्छाओं या जुनून और भौतिकवादी सुखों या अनैतिक गतिविधियें में लिप्त होने की प्रवृत्ति का कारण भी बन सकता है।	**शुक्र और राहु का उपाय करें**

लग्न दर्शन – मकर

मकर राशि, राशि चक्र की दसवीं राशि है और मकर राशि का स्वामी शनि है। मकर राशि में उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के दूसरे, तीसरे तथा चौथे चरण, श्रवण नक्षत्र तथा घनिष्ठा नक्षत्र के पहले तथा दूसरे चरण आते हैं। मकर लग्न में जन्म होने से आप कद में लम्बे, गेहुँऐ रंग के कृशकाय तथा पतले शरीर वाले व्यक्ति होंगे और आपका व्यक्तित्व सुन्दर व आकर्षक होगा।

आपकी सेहत खराब हो सकती है, जिससे आपको वात रोग, हाथ–पैर या जोड़ों में दर्द, गठिया, सायटिका तथा पाचन शक्ति में खराबी आदि कारणों से कष्ट उठाना पड़ सकता है। आपका पारिवारिक जीवन बहुत अचछा नहीं बीतेगा, आप दोनों पति–पत्नी आपस में सामंजस्य रखते हुए भी एक–दूसरे पक्ष पर अपने आदर्श तथा विचार थोपना चाहेंगे, जिससे कभी–कभी मतभेद भी हो सकते हैं, इसके अलावा सन्तान सुख भी आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा। मकर राशि में जन्म होने से आप रहस्यमय व्यक्ति होंगे। आप किसी के भी समक्ष अपने जीवन को खुली किताब की तरह प्रकट नहीं करेंगे और सहानुभूति चाहने वाले व्यक्ति होंगे।

आप में आत्मविश्वास परिपूर्ण रहेगा, अपने कार्यों के प्रति आप सर्वदा जागरुक रहेंगे और कभी लक्ष्य को अपनी आँखों से ओझल नहीं होने देंगे। आप एक ही समय में कई विषयों पर विचार कर बनाई गई योजना को कार्यरूप में परिणित भी करेंगे और निर्णय शक्ति भी प्रखर होने से योजनाओं में सफल भी रहेंगे। आपको आत्मप्रशंसा में रुचि रहेगी तथा दिखावा व आडम्बर अधिक करेंगे, साथ ही ईश्वर में आपको विश्वास रहेगा तथा आप रूढ़ियों को भी मानेंगे, किन्तु कभी–कभी आप हीन भावना से भी ग्रस्त हो सकते हैं, परन्तु आप पूरी तरह व्यावहारिक ज़मीन पर रहने वाले व्यक्ति होंगे।

आपके जीवन में उतार–चढ़ाव अधिक आयेंगे, किन्तु ये उतार–चढ़ाव आपको तोड़ेंगे नहीं बल्कि आपको बल ही प्रदान करेंगे। आप व्यापार के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। भूमि या सम्पदा सम्बन्धी व्यापार, आयात–निर्यात, कोरियर, ट्राँसपोर्ट व्यापार में भी आप सफल रहेंगे। राजनीतिक क्षेत्र में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। अधिक से अधिक धन कमाने की आप में लगन रहेगी, किन्तु ऐसे आकस्मिक खर्चे आ ही जायेंगे, जिससे आपके पास अधिक धन जमा नहीं हो पायेगा, किन्तु धन की कमी के कारण आपका कोई काम नहीं रुकेगा।

आपका जन्म मकर लग्न में 00 अंश 00 कला से 03 अंश 20 कला के बीच में होने से आप लम्बे कद, गेहुँआ रंग तथा कृश शरीर के व्यक्ति होंगे। आपकी सेहत ठीक रहेगी, किन्तु कभी–कभी आपको वात रोग, हाथ, पैर, जोड़ो में दर्द तथा पाचन शक्ति में खराबी, सायटिका, गठिया आदि बीमारियों से कष्ट हो सकता है। आपका पारिवारिक जीवन अधिक सुखमय नहीं बीतेगा, साथ ही सन्तान सुख भी आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा, इसके अलावा आपके मित्र तो बहुत होंगे, परन्तु संकट के समय मदद करने वाले मित्र कम ही होंगे।

आप अपने भाग्य के स्वयं नियामक, आत्मविश्वास से परिपूर्ण तथा परिश्रमी व्यक्ति होंगे। आपके

जीवन में पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध अधिक सुखद रहेगा। क्रोध आपको देर से आयेगा तथा आपको शान्त होने में भी समय लगेगा। आपके स्पष्ट वक्ता होने के कारण कई लोग आप से रुष्ट रहेंगे और बाहर से क्रान्तिकारी नजर आने वाले आप धार्मिक व सामाजिक रूढ़ियों तथा रीति–रिवाजों को मानने वाले व्यक्ति होंगे।

आप समय के पाबन्द रहेंगे, आप प्रत्येक कार्य उचित तथा नियमित ढ़ंग से करना पसन्द करेंगे, किन्तु आपकी अधीरता कभी–कभी बनते कार्य को बिगाड़ भी सकती है। प्रत्येक कार्य में कुछ समय लगेगा, परन्तु आपकी जल्दबाज़ी से आपको परिश्रम का पूरी तरह फल नहीं मिलेगा। सही और तुरन्त फैसला लेने की आपमें कमी हो सकती है। आप में आत्म प्रदर्शन की प्रवृत्ति अधिक रहेगी, जिसके कारण आप से आपके मित्र भी परेशान हो सकते हैं। व्यापार करना अधिक पसन्द करेंगे और आयात–निर्यात, कोरियर, वस्त्र उद्योग, सम्पदा हस्तान्तरण तथा सार्वजनिक क्षेत्रा के उद्योगों में कार्यरत रहेंगे। आप उपार्जित धन नष्ट नहीं करेंगे और संग्रह करने की आपकी प्रवृत्ति रहेगी, आपके पास अर्थ संग्रह तो होगा, परन्तु आकस्मिक खर्चे हो जाने से धन का संकट हो सकता है।

नक्षत्र – पद का विवेचन

आपका जन्म कृतिका नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल है। कृतिका नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने के कारण आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर 'अ' या 'आ' से प्रारम्भ होगा। यथा – अजय, अरुण, अनिल, आदित्य, आकाश आदि।

इस नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न होने के कारण आप कंजूस प्रवृति के व्यक्ति होंगे। आप धन का संग्रह तो करेंगे परन्तु व्यय करने में अत्यन्त ही कृपणता का परिचय देंगे। आपके द्वारा किए गए कार्यों से अन्य लोगों को यदा–कदा कष्ट होगा। आपको नींद अधिक मात्रा में आएगी तथा आपके मन में काम करने की इच्छा का भी अभाव रहेगा।

कृपणः पापकर्माश्च क्षुधालुर्नित्य पीड़ितः।

अकर्म कुरुते नित्यं कृतिका संभवेन्नरः।।

मानसागरी

कृपणः पापकर्माश्च क्षुधालुर्निद्रया युतः।

अकर्मा कृतिकायाश्च जायते नात्र संशयः।।

जातक दीपिका

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न जातक कृपण, पापकर्म कर्ता, भूख तथा निद्रा से पीड़ित तथा अकर्मा होता है।

आप सामान्य भोजन करने वाले होंगे । किसी की भी बात को सहन करने की शक्ति का आपमें अभाव रहेगा। साथ ही आप अपने क्षेत्र के विख्यात व्यक्ति भी होंगे।

बहुभुक् परदारतस्तेजस्वी कृतिकासु विख्यातः।।

बृहज्जातकम्

अर्थात् कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुभोजन कर्ता, परस्त्रीगमन करने वाला, असहनशील तथा विख्यात होता है।

विद्या आप अवश्य प्राप्त करेंगे और यही विद्या आपका धन होगी। आप विद्वान तथा उच्चाधिकारी भी हो सकते हैं। साथ ही आप तेजस्विता से युक्त होंगे।

तेजस्वी बहुलोद्भव प्रभुसमोडमूर्खश्च विद्याधनी।

जातक परिजातः

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न जातक तेजस्वी, उच्चाधिकार प्राप्त, विद्वान तथा विद्या का धनी

होता है।

सत्य का पालन आप अपने जीवन में कम ही करेंगे। व्यर्थ भ्रमण करना भी आपकी दिनचर्या का एक अंग होगा। बोलने में आप कभी–कभी कटु शब्दों का प्रयोग करेंगे जो सुनने वाले को अच्छा नहीं लगेगा। आप अपने कर्तव्यों का पालन भी अल्प मात्रा में ही करेंगे। यदा–कदा धनाभाव से भी आप जीवन में कष्टानुभूति का अनुभव करेंगे।

क्षुधाधिकः सत्यनैर्विहीना वृथाटनोत्पन्नमतिकृतघ्नः।

कठोरवाग्गहितकर्म कृत्स्याचेत्कृतिका जन्मनि यस्य जन्तो।।

जातकाभरणम्

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न मनुष्य भूख से पीड़ित सत्य एवं धन से रहित, व्यर्थ ही घूमने वाला, कृतघ्न कटुवक्ता तथा अकर्तव्य करने वाला होता है।

मेष राशि में जन्म लेने के कारण आप अल्प भोजन करने वाले होंगे। तथा अन्य भाई बहिन होते हुए भी उनमें आप श्रेष्ठ होंगे।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजौ

जातकपरिजातः

अर्थात् मेष राशि में उत्पन्न जातक अल्प भोजी, कामी तथा भाइयों में अकेला श्रेष्ठ होता है।

आपका शरीर गौरवर्ण का होगा तथा आँखें लालिमा से युक्त गोल तथा चंचल होंगी। किसी घाव या चोट के कारण आपके सिर में निशान होगा तथा सिर में बाल भी कम ही होंगे। आपके हाथ तथा पैर कान्ति युक्त होंगे। जल से आप नैसर्गिक रूप से भयभीत रहेंगे। साहस का आपमें अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन में कठिन से कठिन समस्याओं का आप साहसपूर्वक मुकाबला करेंगे। समाज से आपको उचित आदर मिलेगा। बुद्धि आपकी चंचल होगी तथा धन को आप मान–सम्मान से भी अधिक महत्व प्रदान करेंगे जिससे समय–समय पर समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपके पास मित्रों तथा सहयोगियों की बहुलता रहेगी। साथ ही पुत्रों की संख्या भी कन्याओं की अपेक्षा अधिक होगी। स्त्री जाति आपकी विशेष रूप से कमजोरी रहेगी। लेकिन सभी को आप स्नेह की दृष्टि से देखेंगे। परिणामस्वरूप सभी लोग आप पर विश्वास रखेंगे तथा सम्मान प्रदान करेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।

कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः।।

पद्माभैः पाणिपादैर्विततं सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।

सस्नेहतोयभीरू व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।

सारावली

अर्थात् मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक गौरवर्ण, इकलौता, सम्मान से श्रेष्ठ, कामपीड़ित, कमजोर घुटने वाला, दूषित नखधारी, अल्पकेशी, अस्थिर, सम्मान को धन मानने वाला, कमल की कान्ति के समान हाथ पैर वाला, अधिक पुत्र व मनुष्यों से युत, गोल नेत्र वाला, स्नेही, जल से डरने वाला, घाव से विकृत सिर वाला व स्त्री से पराजित होता है।

धन को आवश्यकता से अधिक महत्व देना तथा स्त्रियों के प्रति अधिक आकर्षित रहना आपकी इस प्रवृति से आपके बुजुर्ग तथा श्रेष्ठ सम्बन्धी असन्तुष्ट हो जाएंगे। परिणाम स्वरूप या तो वे आपसे अलग हो जाएंगे या आप स्वयं उनसे अलग हो जाएंगे। साथ ही घर के सारे कार्य आप अपनी पत्नी के कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। अतः वैमनस्य में वृद्धि होती रहेगी। धन तथा पुत्रों से आप आजीवन युक्त रहेंगे तथा अपने वैभव से समाज में अच्छी कीर्ति प्राप्त करेंगे।

वृताताम्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।

कामी दुर्बलजानुरस्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।

कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।

शक्त्यापणितलेडङ्कितोऽति चपलस्तोये च भीरूः क्रिये।।

बृहज्जातकम्

अर्थात् मेष राशि में उत्पन्न जातक गौरवर्ण, लाल एवं गोल नेत्रों से युक्त, अल्प भोजी, शीघ्र प्रसन्न होने वाला, भ्रमण शील, कामी, कमजोरजानुयुत, शौर्य चिन्ह से युक्त, सेवा भाव से युत, स्त्रीवर्ग का प्रिय, दूषित नाखून वाला, सिर पर घाव के निशान से युक्त, भाइयों में अकेला श्रेष्ठ, चंचल प्रवृति तथा जल से भयभीत रहता है।

आपका स्वभाव शीघ्र क्रोधित होकर शीघ्र ही प्रसन्न होने वाला होगा तथा इधर–उधर भ्रमण करना आपको रुचिकर लगेगा। आपकी हथेलियों में शौर्यसूचक चिन्ह यथा चक्र, पताका आदि हो सकते हैं। स्त्री वर्ग में आप विशेष प्रिय तथा सम्माननीय समझे जाएंगे। आपके अर्न्तमन में सेवा का भाव स्वाभाविक रूप से रहेगा। चाहे आप कैसी ही विषम परिस्थितियों में चल रहे हों अन्य लोगों की सहायता करने के लिए आप सदैव तत्पर रहेंगे।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।

अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।

जातकाभरणम्

अर्थात् जन्म समय में यदि मेष राशिस्थ चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्ति वाला, श्रेष्ठ जन रहित, पुत्रवान, स्त्री से पराजित किन्तु अपनी प्रभुता से यश पाने वाला होता है।

भ्रमण में आपकी रुचि ऐसे स्थानों में जाने की होगी जो अगम्य हों अर्थात् जहाँ आसानी से नहीं पहुँचा जा सकता हो। सामाजिक संबंधों की विस्तृता के कारण यदा–कदा आप मांस, मदिरा आदि पदार्थों का भी सेवन कर सकते हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।

वृहत्पाराशर होराशास्त्र

अर्थात् मेष राशि में उत्पन्न बालक अगम्यागमन प्रिय तथा अभक्ष्य का भक्षण करने वाला होता है।

आपके स्वभाव में कभी–कभी उग्रता का समावेश हो जाता है। यह उग्रता जब क्रोध के रूप में उत्पन्न होगी तो उससे आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। प्रवृति में चंचलता के कारण आप कभी–कभी मिथ्या भाषण भी करेंगे।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।

संचारशीलश्चपलोऽनृतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।

फलदीपिका

अर्थात् मेष राशि का मनुष्य गोल नेत्र युक्त, कमजोर जानु, उग्र प्रकृति, जल से भयभीत, भ्रमणशील, व्रणचिन्ह युक्त कामी, अल्पभोजी तथा मिथ्याभाषी भी होता है।

यौगिक क्रियाओं में भी आपकी रुचि रहेगी तथा सिर पर केश अल्प मात्रा में होंगे। गर्म पदार्थों तथा अन्य पित्त बढ़ाने वाली वस्तुओं से परहेज रखें अन्यथा मस्तिष्क में विकार का योग बनता है। आपको अपने शरीर की भी सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए तथा दुर्घटनाओं से बचना चाहिए।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।

न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।

व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।

संभवति पुरुषोऽयं मेष राशौ।।

जातक दीपिका

अर्थात् मेष राशि में उत्पन्न जातक अल्प केशी, योगकर्म कर्ता, समृद्ध, विकारी एवं भूतियुक्त होकर प्रलाप करता है।

आप चंचल नेत्रों से युक्त होंगे। धर्म का आप पूर्ण रूप से पालन करेंगें। साथ ही धार्मिक संस्कारों तथा कार्यकलापों में सक्रिय सहयोग एवं श्रद्धा अर्पण करेंगे। धनार्जन भी आपका पर्याप्त मात्रा में होता रहेगा।

राज्य से आपको पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होगा। पापकर्मों से आप दूर ही रहेंगे। आप स्त्री के हृदयवल्लभ अर्थात् मन को आनन्दित करने वाले होंगे। दान देने की प्रवृति का भाव भी आपके अन्तर्मन में निहित रहेगा। जरूरतमन्द लोगों तथा संस्थाओं को यथोचित दान देंगे जिससे आपके सामाजिक प्रभुत्व में वृद्धि होगी।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।

पृथुजङ्घः कृतध्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।

कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।

चण्डकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।

मानसागरी

अर्थात् मेष राशि में जन्म हो तो मनुष्य चंचल नेत्र नित्य रोगी, धर्म और धन उपार्जन करने वाला, स्थूल जंघाओं वाला, कृतघ्न, पापहीन, राजा से मान्य, स्त्रीबल्लभ, दाता, जल से डरने वाला प्रचण्ड कर्म करके फिर नम्र होने वाला होता है।

क्रोध आपको अधिक आएगा तथा छोटी–छोटी बातों से उत्तेजित होना आपकी प्रवृति होगी। आप अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी भी प्रकार के कार्य को करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप बलवान भी होंगे तथा अन्य जनों से बात–बात पर अनावश्यक तर्क करना आपका स्वभाव होगा जिससे अधिकांश लोगों से आपका विरोध रहेगा। अतः अन्य जनों से आपको संयम पूर्वक वार्तालाप करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।

दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।

जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ालू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

आप उन्माद या प्रमेह रोग से पीड़ित हो सकते हैं। देखने में आपका चेहरा आकारा में बड़ा हो सकता है। कभी–कभी आप ऐसी वाणी का उपयोग करेंगे जो अन्य जनों को अच्छी नहीं लगेगी। अतः यत्नपूर्वक आपको अपने सम्भाषण में मृदु शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदाकलहप्रियः।

पुरूषोदुस्सहबूते प्रमेही राक्षणे गणे।।

मानसागरी

अर्थात् राक्षस गण का जातक उन्मादी, भीषण आकृति वाला, झगड़ालू, कटुभाषी तथा प्रमेह का रोगी होता है।

मेष योनि में उत्पन्न होने के कारण आप अत्याधिक उत्साही प्रवृति के होंगे। आप एक बहुत बड़े योद्धा हो सकते हैं। धन और ऐश्वर्य पूर्ण रूप से आपके पास रहेगा तथा इसका अभाव नहीं होगा।

आपके मन में दूसरों की भलाई करने की उत्कृष्ट अभिलाषा होगी तथा प्रयत्न पूर्वक आप अन्य जनों की भलाई करते रहेंगे।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।

नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।।

मानसागरी

अर्थात् मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

कार्तिक मास, प्रतिपदा, एकादशी तथा षष्ठी तिथियाँ शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की, मघा नक्षत्र, बव करण, रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा आपके लिए अशुभ फलदायी है। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1, 6, 11 तिथियों, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग तथा बव करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण, लेन–देन आदि शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इसके अतिरिक्त रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्य में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शरीर का भी ध्यान रखें।

यदि आपको समय अनुकूल प्रतीत न हो रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट श्री हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए साथ ही सोना, तांबा, गेहूँ, घी, लालवस्त्र आदि पदार्थों का दान करना चाहिए। साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के 7 हजार जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त मंगलवार के उपवास भी रखने चाहिए।

मंत्र – ऊँ हुँ श्रीं भौमाय नमः।

विंशोत्तरी दशाफल

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

चन्द्रमा दशा (05:12:2016 – 05:12:2026)

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में चौथे भाव में स्थित है। आपको सभी यौन सुख मिलेंगे। आपको भिक्षा देने में रूचि होगी। मित्र आपको प्रसन्न रखेंगे। आपको वाहन का सुख प्राप्त होगा। आप माता से अलग हो सकते हैं या चंद्रमा के भयानक रूप से पीड़ित होने से आपकी माता की मृत्यु हो सकती है। आपका उनसे किसी भी रूप में अलगाव हो सकता है। यदि माता कहीं कार्यरत हैं, तो वह अधिकतर समय आपसे दूर रही सकती हैं या आप अपनी पढ़ाई के समय छात्रावास में रह सकते हैं और नौकरी मिलने पर किसी अलग स्थान पर आप जा सकते हैं। यह एक छुपा वरदान होगा, जिसमें आपकी माता की मृत्यु नहीं हो सकती है। कहने का तात्पर्य यह है कि आपको माता का सुख और साथ नहीं मिल सकता है। आप एक नए घर का निर्माण कर सकते हैं या आप अपने पुराने घर को नया रूप दे सकते हैं। आपका यश बढ़ेगा। आप कविता और दूसरे लेखनों में रूचि लेंगे।

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में मेष राशि में स्थित है। चंद्रमा की अपनी दशा के दौरान, आपके जीवनसाथी और मवेशियों को भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। हालाँकि, आपको अपने जीवनसाथी एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आप विदेशी भूमि पर काम करने में रूचि लेंगे। आपका व्यय अधिक होगा। आपका व्यवहार निर्दयी हो सकता है। आपको सिर की बीमारियों और भाइयों व शत्रुओं से परेशानियां हो सकती हैं। आप अनियंत्रित परिस्थितियों, बहुधा रोगों के कारण अपने लोगों से अलग हो सकते हैं।

दशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी

तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या धन–संपत्ति, रोग आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– चाँदी की अंगूठी में मोती धारण करें।
2– चाँदी का कमल दान करें।
3– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (05:12:2016 से 05:10:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। यदि यह अन्तर्दशा विवाह की अवस्था के दौरान चलती है, और आप अविवाहित हैं, तो आपके विवाह की संभावना है। यदि पहले से विवाहित हैं, तो एक पुत्री का जन्म हो सकता है। आप किसी प्रियजन के विवाह समारोह में शामिल हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में आपके भाई–बहनों का विवाह हो सकता है– यदि वे विवाह योग्य हैं। आपको नये परिधान प्राप्त होंगे। आपको बहुत ज्ञानी और संस्कारित लोगों के सम्पर्क में आने के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। आपको जीवनसाथी और संतानों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आप अपनी माता की अभिलाषाओं को पूरा करेंगे तथा साथ ही उनका पूर्ण प्रेम, स्नेह और ध्यान आपको मिलेगा। आपको संबंधियों और मित्रों से अवसरीय मदद मिलेगी। आपको चहुंमुखी संपन्नता तथा उत्तम नींद प्राप्त होगी।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, धन–सम्पत्ति, माता, भाई–बन्धु, जीवनसाथी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– चंद्रमा के बीज मंत्र का पाठ करें।
2– सफेद गाय या चाँदी की गाय का दान करें।
3– महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (05:12:2016 से 31:12:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। यदि आपकी आर्थिक स्थिति पहले से उत्तम है, तो आपको भूमि और सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप एक आरामदायक और खुशहाल जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपको सरकार का समर्थन प्राप्त होगा और स्वादिष्ट भोजन मिलेगा। यदि आप साधारण परिवार में जन्में हैं, तो भी आप बिना किसी अधिक प्रयास के अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (31:12:2016 से 17:01:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने आस–पास के लोगों से उत्तम सम्मान मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति

संतोषजनक होगी। सामान्यतः यह एक साधारण दशा होगी। जीवन में बहुत अशांति नहीं होगी। हालाँकि आपको अपने शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (17:01:2017 से 04:03:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक मिली–जुली दशा होगी। आपको सुख और दुख का समान रूप से अनुभव होगा और प्रायः उसमें बदलाव होता रहेगा। घर पर वैवाहिक समारोह आयोजित होंगे। आप तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। कई सारे लोग आपसे मिलने आयेंगे और आपका साथ देंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (04:03:2017 से 14:04:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको नौकरी में पदोन्नति प्राप्त होगी। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको बहुत उत्तम लाभ प्राप्त होंगे। घर पर वैवाहिक समारोह आयोजित होंगे। सामान्यतः आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपके जीवनसाथी और संतान की आपको अति सुखद संगति मिलेगी। विशिष्टों से आपको सहयोग मिलेगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (14:04:2017 से 01:06:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर होगी, फिर भी अप्रत्याशित रूप से आपके व्यय बढ़ सकते हैं। आपका अपने जीवनसाथी के साथ झगड़ा हो सकता है और वह बीमार हो सकती है। संतान भी आपके लिए परेशानियां पैदा कर सकते हैं। आपको बुखार, पेचिश और सिर दर्द की शिकायत हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (01:06:2017 से 14:07:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका रूझान नयी चीजों को सीखने की तरफ होगा। इस दशा के दौरान आप अपने काल्पनिक विचारों को व्यावहारिक रूप में प्रयोग कर सकते हैं। आपको लेखन के क्षेत्र में नाम और यश प्राप्त होगा। रोजगार में बदलाव के लिए यह एक उत्तम समय है। शैक्षिणिक क्षेत्रों में आपकी संतानों की सफलता आपको खुशी प्रदान करेगी। जीवनसाथी का भी आपको सुन्दर सहयोग मिलेगा। हालाँकि, आपके गुप्त शत्रु आपके खिलाफ साजिश कर सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (14:07:2017 से 01:08:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी माता के लिए यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अपने परिवार से दूर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। एक समय पर दो प्रतिष्ठान होंगे। आपको निरन्तर धन की प्राप्ति होगी, लेकिन आय से अधिक व्यय भी हो सकता है। आपको धन उधार लेने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है और आप उसे वापस करने में असमर्थ हो सकते हैं। आपको अपनी कुछ वस्तुओं को बेचना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:08:2017 से 20:09:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपका या आपकी बहन का विवाह हो

सकता है। ससुराल से आपको विरासत में कोई सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है। शुक्र की वस्तुओं से आपको लाभ होगा। अज्ञात महिलाओं के साथ आप शारीरिक सुख प्राप्त करेंगे, जिससे आपको बदनामी का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (20:09:2017 से 05:10:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। उनके साथ आपके संबंध भी आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपके पुत्र का स्वास्थ्य भी उत्तम नहीं हो सकता है। आपको बहुत गंभीर स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।

मंगल अन्तर्दशा (05:10:2017 से 06:05:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। आपको पैतृक सम्पत्ति और धन की हानि हो सकती है। रक्त की अशुद्धता, व्यग्रता, कफ, आग, विद्युत और अन्य गर्म चीजों के कारण होने वाले विकारों से आप ग्रस्त हो सकते हैं। आप चोरों और शत्रुओं के कारण अपना धन गवाँ सकते हैं। आपमें धैर्य की कमी हो सकती है और आप हर स्तर पर चिड़चिड़े हो सकते हैं। एक समय पर आप सबसे संतुष्ट व्यक्ति होंगे, जिसे सांसारिक सुखों की आवश्यकता नहीं होगी, लेकिन अचानक आपका दिमाग पलट सकता है और आप अपने कार्य क्षेत्र में असफल हो सकते हैं। आपक स्थानान्तराण हो सकता है या दंड अथवा गबन के आरोप के कारण आप पूर्व प्राप्त पद से हाथ धो सकते हैं।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में मंगल की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन हानि, मकान, मुकदमा आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– मंगल के बीज मंत्र का दस हजार जप करें।

2– ब्रह्मचर्य बनकर हनुमान बाहुक का पाठ करें।

3– मूंगा धारण करें।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (05:10:2017 से 18:10:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप कफ या तपेदिक से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको आग से भय हो सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। जनता से आपको अनादर मिल सकता है। शत्रु आपको भयभीत करने की कोशिश कर सकते हैं। भाइयों से आपका विवाद हो सकता है। आपका एक नजदीकी संबंधी आपके जीवन को कष्टकारी बना सकता है। महिलाओं से आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (18:10:2017 से 19:11:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा के दौरान पैदा हुए रोगों का प्रभाव और बढ़ सकता है। आप अस्पताल में भर्ती हो सकते हैं। उपचार में आपका भारी धन व्यय हो सकता है। अधीनस्थ और विशिष्ट लोग आपके

लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं। बेतुकी बातों पर आपका अपने जीवनसाथी से झगड़ा हो सकता है और आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (19:11:2017 से 17:12:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप एक राजा की तरह आनन्द प्राप्त करेंगे। आप हर प्रकार के रोगों से मुक्त रहेंगे। आपको अप्रत्याशित क्षेत्रों से धन प्राप्त होगा। बहने आपकी प्रसन्नता का कारण होंगी। यदि अब तक कोई संपत्ति विवाद अनसुलझा है, तो उसका निर्णय आपके पक्ष में हो जायेगा। आप तनावरहित जीवन व्यतीत करेंगे, समय पर भोजन और अपनी मूलभूत जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (17:12:2017 से 20:01:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। धन को छोड़कर पिछली दशा में आपको प्राप्त अन्य सभी सुख गायब हो सकते हैं। आपका व्यय आय से अधिक हो सकता है। चूंकि, आपने पिछली दशा में पर्याप्त धन संग्रह कर लिया था, अतः इस दशा में आपको उसकी कमी महसूस नहीं होगी। आपको अपने विरोधियों से सावधान रहना चाहिए। बिना किसी कारण के विवाद हो सकते हैं। ऐसा 7 दिनों तक हो सकता है। उसके बाद स्थिति सामान्य हो जायेगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (20:01:2018 से 19:02:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके घुटने में चोट लगने या आप्रेशन होने की संभावना है। आप गठिया रोग से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको सट्टों और विशिष्ट व्यक्तियों से लाभ मिलेगा। आपका मिजाज प्रायः अन्तरालों पर बदलता रहेगा। आपमें एकाग्रता का अभाव हो सकता है। आपके किसी एक संतान का स्वास्थ्य आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है। इस दशा के दौरान वास्तव में आपके जीवनसाथी को परेशानी होगी– जैसाकि उसे आप और आपके संतान की देखभाल करनी पड़ेगी।

केतु प्रत्यंतर्दशा (19:02:2018 से 04:03:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा नहीं होगी। परिवार में विवाह या धार्मिक कार्यों जैसे समारोहों में भारी व्यय होगा। आपका एक नजदीकी मित्र आपको धोखा सकता है और आपका धन तथा आभूषण लेकर भाग सकता है। आपके भाइयों के लिए यह एक खराब दशा हो सकती है। आपके किसी नजदीकी संबंधी से आपका अप्रत्याशित रूप से वियोग हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (04:03:2018 से 08:04:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सम्पत्ति और सट्टों में निवेश करने के लिए यह शुभ समय है। आपके किसी नजदीकी की मृत्यु के कारण आपको अप्रत्याशित रूप से कोई विरासतीय उपहार मिल सकता है। आपको महिलाओं से आनन्द और लाभ मिलेगा। आप किसी महिला के धन दौलत की देखभाल कर सकते हैं और साथ ही उससे लाभ प्राप्त कर सकते हैं। महिलाओं के कारण झगड़े और लड़ाईयां हो सकती हैं। मित्र आपके शत्रु बन सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (08:04:2018 से 19:04:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने सगे भाई बहनों से लाभ प्राप्त करेंगे। आपको नेत्र रोग, बुखार और जोड़ों में दर्द की शिकायत हो सकती है। आप ऋण ले सकते हैं और उसे वापस करने में असक्षम हो सकते हैं। आप कहीं छिप सकते हैं और कुछ मानसिक शांति पाने के लिए नशे का सहारा ले सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (19:04:2018 से 06:05:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आपको सरकार का समर्थन मिलेगा। आपको जलीय उत्पादों और दवाओं के व्यापर में लाभ होगा। आपको अति उत्तम शैक्षिणिक परिणाम प्राप्त होंगे। यदि आपका कोई प्रेम प्रसंग चल रहा है, तो वह शादी में परिणित हो सकता है। आप किसी दूर स्थान की यात्रा कर सकते हैं और एक नया घरेलू उपयोग का सामान खरीद सकते हैं।

राहु अर्न्तदशा (06:05:2018 से 05:11:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। आप अनजाने में कई बुरे और गलत काम कर सकते हैं तथा बाद में उसके लिये पछतावा होगा। लेकिन तब तक बहुत देर हो सकती है और सबको अपना शत्रु बना सकते हैं। हालांकि, चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा जो आगे आने वाली है, के दौरान विभिन्न चीजों के लिए आपके रवैये और व्यवहार में वास्तविक बदलाव आयेगा। आपके संबंधियों को समस्यायें हो सकती हैं और आपको उन पर धन खर्च करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपको जलीय पदार्थों से विषाक्तता होने की संभावना हो सकती है। आप बुखार, अपच या गठिया रोग से ग्रसित हो सकते हैं। आपको आंधी, तूफान और तड़ित से खतरा हो सकता है। आपको मदिरा से सर्वथा दूर रहना चाहिए– जैसाकि यह एक जलीय पदार्थ है। चूंकि आपकी आय से व्यय अधिक हो सकता है, अतः आपको धन व्यय करते समय सावधानी बरतनी चाहिए।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में राहु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, संतान, कर्ज, धन हानि आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– मंगल का व्रत रखें एवं हनुमान जी के चरणों में सिंदूर अर्पित करें।
2– दुर्गासुक्त का पाठ करें।
3– चाँदी का हाथी दान करें।

राहु प्रत्यंतर्दशा (06:05:2018 से 28:07:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा बहुत खराब हो सकती है। आप चर्म रोगों, सिर में चोट का सामना कर सकते हैं। आपको धन की हानि हो सकती है। आपके व्यापार में अपने भागीदार या अपने किसी एक अधीनस्थ से धोखा मिल सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (28:07:2018 से 09:10:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप धार्मिक क्षेत्र में थका देने वाली गतिविधियों में शामिल रहेंगे। समय पर आप भोजन नहीं कर पायेंगे। आपके पुत्र पढ़ाई में विशेष योग्यता प्राप्त करेंगे। घरेलू वातावरण खुशहाल होगा। आध्यात्मिक क्षेत्र में आपके ज्ञान मे बृद्धि होगी। संबंधियों का आपको साथ मिलेगा और आप उनसे लाभ प्राप्त करेंगे। परिवार की महिलाओं का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (09:10:2018 से 03:01:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सभी संभव विपदाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी को तत्काल चिकित्सकीय उपचार की आवश्यकता हो सकती है। आपकी या आपके जीवनसाथी की शल्य चिकित्सा हो सकती है। आप लकवे का शिकार हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको लॉटरी और सट्टों से दूर रहना चाहिए।

बुध प्रत्यंतर्दशा (03:01:2019 से 22:03:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने क्षेत्र में विशेष ज्ञान प्राप्त होगा। आपका एक चचेरा भाई आपके परिवार के लिए समस्यायें पैदा कर सकता है। आपकी बहन का विवाह हो सकता है। प्रायः परेशानियां हो सकती हैं, किसी बड़े व्यक्ति को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है– संभवतः दादा या दादी को, जिससे आपका अपने सहोदरों से अलगाव हो सकता है। आपको जीवनसाथी से लाभ मिल सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (22:03:2019 से 23:04:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा निराशापूर्ण हो सकती है। परिवार से अलगाव के कारण आप अकेला महसूस कर सकते हैं और आपमें असुरक्षा की भावना आ सकती है। यदि आप परिवार से अलग नहीं होते हैं, तो भी संयुक्त परिवार मे रहते हुए आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। आपकी बौद्धिक क्षमता का ह्रास हो सकता है और आपको धन हानि हो सकती है। नये शत्रुओं से आपको खतरा हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:04:2019 से 23:07:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। घरेलू घटनाओं के कारण आप निराश हो सकते हैं। आपके जीवनसाथी आपके मित्रों का साथ दे सकती है। बुरी आत्माओं से आपको खतरा हो सकता है। आपका वाहन खो सकता है या दुर्घटना हो सकती है। आपको रति जन्य रोग हो सकते हैं। आपके गुप्तांगों और गुदा में खुजली हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (23:07:2019 से 19:08:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको ससुराल से सम्पत्ति मिलेगी, लेकिन मानसिक शांति का अभाव हो सकता है। आपके जीवनसाथी और संतान के लिए यह दशा बहुत खराब हो सकती है। आप उनकी आवश्यक देखभाल नहीं कर पायेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (19:08:2019 से 04:10:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। कोई भी बुरा परिणाम देने में राहु अप्रभावी रहेगा। आप ईश्वर की आराधना में पूरी

तरह से रत रहेंगे। आपको गंभीर सर्दी और खांसी हो सकती है। सम्मान की हानि हो सकती है। नजदीकी और प्रियजनों से झगड़ा हो सकता है। आप अपने से बड़ी महिलाओं के साथ मौज–मस्ती करेंगे और उन पर धन बर्बाद करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (04:10:2019 से 05:11:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। यदि एक या तीनों ग्रह भी उत्तम स्थिति में हैं, तो भी आपको बहुत कष्ट हो सकते हैं। एक समस्या हल होगी, तो दूसरी समस्या खड़ी हो जायेगी। आपको धन और सम्पत्ति की हानि हो सकती है। आपके गुदा में फोड़े या बवासीर हो सकता है। रक्त में खराबी के कारण रोग हो सकते हैं। यदि राहु और मंगल अशुभ भाव या राशि में स्थित हैं, तो आपको रक्त चढ़वाना पड़ सकता है।

गुरू अन्तर्दशा (05:11:2019 से 07:03:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा शुभ और उत्कृष्ट होगी। यदि बृहस्पति आपकी कुण्डली में शुभ नहीं भी है, तो भी आपको विषम परिणाम नहीं प्राप्त होंगे। आपमें राहु की अन्तर्दशा– जो पहले आयेगी– के दौरान सहिष्णुता की भावना का विकास होगा और आपको प्राप्त सीख बृहस्पति की अन्तर्दशा के दौरान पूरी तरह से आपको एक नया इंसान बनायेगी। आप धार्मिक सिद्धान्तों का पालन करेंगे और भिक्षा देंगे। आपकी सोच में परिपक्वता होगी और गलत–सही की पहचान करने की क्षमता होगी।

आपको उत्तम कपड़ों और आभूषड़ों को पहनने में अधिक रूचि होगी। आप उत्तम मित्रों की संगति का आनन्द प्राप्त करेंगे। अधिकतर लोग आपको पसन्द करेंगे। आपको सरकार से समर्थन मिलेगा। विभिन्न स्रोतों से आप आय प्राप्त करेंगे और संतानों के मामले में आप बहुत सुखी होंगे। आपकी संतानें भी आपको खुशियां प्रदान करेंगी। आपमें वाहन प्राप्त करने की चाह होगी, जो इस अन्तर्दशा के अन्त तक पूरी होगी।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।

2– काली गाय या भैंस का दान करें।

3– शनिस्तोत्र का पाठ करें।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (05:11:2019 से 09:01:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपको सभी कामों में सफलता मिलेगी। आप प्रायः तीर्थस्थानों की यात्रा करेंगे। धन अर्जित करने में आप बहुत व्यस्त रहेंगे। अतः आप उत्तम और समयबद्ध भोजन प्राप्त नहीं कर सकेंगे। आपका विवाह हो सकता है और आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आप एक ऊँचे पद को प्राप्त करेंगे। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (09:01:2020 से 26:03:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप भूमि और सम्पत्ति खरीदेंगे। आपको वाहन का लाभ होगा। सभी से आपको स्नेह मिलेगा। इस दशा के दौरान आप कई लोगों को भोजन करायेंगे। महिलाओं से आपको अपमान मिल सकता है। नौकरानी और अन्य निचले स्तर के लोगों के साथ आप मौज–मस्ती प्राप्त कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (26:03:2020 से 03:06:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आप वाहन और आभूषण खरीदेंगे। आप शास्त्रों और वेदों को सीखने में रूचि लेंगे। निवेश के लिए यह एक अति उत्तम दशा होगी। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। आपका विवाह हो सकता है। अपने जीवनसाथी और संतान के साथ आप आनन्दभ्रमण पर जायेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (03:06:2020 से 02:07:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक असहज दशा हो सकती है। परिवार के किसी बड़े व्यक्ति को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। शत्रु परिवार में कलह उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आपकी बहन के विवाह में परेशानियां आ सकती हैं। आपके आभूषण खो सकते हैं। सरकारी और विशिष्ट अधिकारियों से आपको परेशानियां हो सकती हैं। आपको पीलिया या जिगर की अन्य समस्यायें हो सकती हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (02:07:2020 से 21:09:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कष्ट रहित दशा होगी। आपको वस्त्र, रत्न और आभूषण प्राप्त होंगे। आप अपने जीवनसाथी सहित महिलाओं को खुश करने में व्यस्त रहेंगे। आपको एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है। आप कई प्रकार की चीजें सीखेंगे। आप समारोहों और अन्य मौज–मस्ती के कामों में पूरी तरह से रत रहेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (21:09:2020 से 15:10:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सरकार से लाभ होगा। आप रोजगार में बदलाव कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। आप धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो चुनाव लड़ने के लिए यह एक उत्तम समय है। आपको पैतृक सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (15:10:2020 से 25:11:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपनी अधिकतर कामनाओं को पूरा करने में सक्षम होंगे। निवेश के लिए यह उपयुक्त समय है। आपका विवाह हो सकता है। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। विभिन्न स्रोतों से आपको धन का लाभ होगा। आपके घर पर कई शुभ समारोह आयोजित हो सकते हैं। हालाँकि, इस दशा के अन्तिम दो दिन आपके पूरे परिवार के लिए बहुत खराब हो सकते हैं। किसी दूर स्थान से कोई अशुभ समाचार मिल सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (25:11:2020 से 24:12:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके पेट में अल्सर, तीव्र जलन, अपचन, बवासीर या गुदा में दर्द की शिकायत हो सकती है। आपको हथियारों से खतरा हो सकता है। अपने जीवनसाथी और संतान से आपका अलगाव हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (24:12:2020 से 07:03:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। परिणाम लगभग पिछली दशा के समान ही होंगे। आपको अचानक धन का लाभ हो सकता है। अब तक अनसुलझे सम्पत्ति विवाद सुलझ जायेंगे। आपके सहोदरों को कष्ट हो सकता है।

शनि अन्तर्दशा (07:03:2021 से 05:10:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अकथित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आप संबंधियों के कारण दुख और खतरों का सामना कर सकते हैं। आप, आपका जीवनसाथी, संतानें, माता–पिता एक साथ कई रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपका चिकित्सकीय खर्चा बढ़ सकता है। आप उपचार के विभिन्न तरीके अपना सकते हैं और धन बर्बाद कर सकते हैं। हालांकि, अन्तर्दशा के अन्त में आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिल सकता है जो कुछ उपचार के तरीके बतायेगा और आप उनका प्रयोग आखिरी उपाय के रूप में करके परिणाम प्राप्त करेंगे।

बिना उपायों के प्रयोग के अगली बुध की अन्तर्दशा में सुधार होना तय है– जो कि सबसे उत्तम दशा होगी। परिस्थितियों के कारण आपको खुशियां प्राप्त होने में कठिनाई आ सकती है। आपको अपनी माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए– जैसाकि यह अन्तर्दशा माता के लिए संकटकरी हो सकती है। आपको अपने परिवार के बड़ों या पारिवारिक देवता का शाप लग सकता है। आपका शरीर कमजोर हो सकता है और आपको अपने स्वास्थ्य में सुधार करने में बहुत परेशानी हो सकती है। डॉक्टर रोग का पता लगाने में असफल हो सकते हैं। अन्ततः आपको पता चल सकता है कि कोई अदृश्य ताकत आपके शरीर के अन्दर है। आपको सरकारी अधिकारी के क्रोध का सामना करना पड़ सकता है।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में शनि की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या शत्रु, माता, संबंधी, भाई–बन्धु, कर्ज आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– रोज शनि स्तोत्र का पाठ करें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
3– सोने की गाय या भैंस का दान करें।

शनि प्रत्यंतर्दशा (07:03:2021 से 06:06:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप दूसरों की सलाह मानकर अदृश्य जाल में फंस सकते हैं। शत्रु आपको केवल हताश करने के लिए गलत सलाह दे सकते हैं। आपके सगे भाई बहन आपके द्वारा दिये गये गलत उपचार के कारण परेशान हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (06:06:2021 से 27:08:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में जीवन के अति कटु अनुभवों का अहसास इस दशा में धीरे–धीरे बदल जायेगा। आपमें एक ऐसा अहसास विकसित होगा, कि आपके आस–पास की हर चीज वास्तविक रूप से आपके अनुकूल हो रही है। हालाँकि आपको पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष के दौरान बहुत सावधान रहना चाहिए। आपको इन दिनों में लम्बी यात्रायें नहीं करना चाहिए– जैसाकि कुछ दुर्घटनायें हो सकती हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (27:08:2021 से 30:09:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान अनिश्चितता की स्थिति बनी रहेगी। एक के बाद एक समस्यायें पैदा हो सकती हैं। परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। परिवार में वैवाहिक संबंध टूट सकते हैं। सम्पत्ति के बंटवारे में विवाद हो सकता है, आप तीर्थयात्रा पर जायेंगे और बाहरी लोगों से आपका झगड़ा हो सकता है। जीवनसाथी और संतान आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (30:09:2021 से 04:01:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके प्रेमपूर्ण जीवन में उतार–चढ़ाव आ सकते हैं। आप और आपके जीवनसाथी के बीच परस्पर प्रेम एक समय पर शिखर पर होगा और थोड़े ही समय में वह धरातल पर आ सकता है। आप दोनों को अतिरिक्त वैवाहिक संबंध बनाने के अवसर मिलेंगे, जिससे आप दोनों के बीच प्रायः कटुता आ सकती है। इस दशा के दौरान संतानों को कष्ट हो सकता है। रक्त संबंधी रोग हो सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (04:01:2022 से 02:02:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य गंभीर हो सकता है। आपके अपने पिता के इलाज में भारी धन व्यय करना पड़ सकता है। साथ ही आपकी माता को लकवा हो सकता है। आपको अपने रोजगार या व्यापार से दूर होने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (02:02:2022 से 22:03:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक सामान्य दशा होगी। बहुत अधिक गतिविधियां नहीं होंगी। हालाँकि, आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। आपकी आय भी कुछ हद तक बेहतर होगी। आप समय–समय पर मौज मस्ती करेंगे और तीर्थयात्रा पर जायेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (22:03:2022 से 25:04:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको अपने शरीर के सुरक्षा की अधिक देखभाल करनी चाहिए। प्रायः आपको छोटी दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। ये दुर्घटनायें सिर्फ वाहन से ही

नहीं, बल्कि स्नानागार में फिसलने, सब्जी आदि काटते समय चाकू से कटने से भी हो सकती है। आपका अपने जीवनसाथी से प्रायः विवाद हो सकता है। आप मंगल से संबंधित वस्तुओं से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (25:04:2022 से 20:07:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली दशा में कामों की शुरूआत कर दी थी, लेकिन आपका उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता है और आपने जो कुछ निवेश किया था, उसका आपको नुकसान हो सकता है। अतः आपके लिए यह बेहतर होगा, कि आप अपनी पूंजी तैयार रखें, जिसकी किसी भी समय आवयकता पड़ सकती है। आपके जीवनसाथी से आपके प्रायः झगड़े हो सकते हैं। आप समय पर भोजन नहीं कर पायेंगे। यदि मंगल बली है, तो आप मंगल से संबंधित वस्तुओं से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (20:07:2022 से 05:10:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली कुछ दशाओं में जो खोया है, वह इस दशा में वापस मिल जायेगा। आपकी प्रगति धीरे–धीरे शुरू हो जायेगी। इस प्रत्यंतर्दशा के मध्य में आपको सारभूत आय होगी। आपके अपनी संतान और जीवनसाथी से आत्मीय संबंध होंगे।

बुध अन्तर्दशा (05:10:2022 से 06:03:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः धन प्राप्त करने के लिए यह सबसे उत्तम दशा है। आपको निरन्तर धन प्राप्त होगा। हालांकि, मात्रा आपके परिवार की पृष्ठभूमि और आपको प्राप्त पद के स्तर के अनुसार होगी। आपको सुन्दर परिधान, आभूषण तथा नये मवेशी प्राप्त होंगे। आप अपने सभी उपक्रमों में सफलता और विभिन्न तरीकों से लाभ की आशा कर सकते हैं। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी तथा आपको समाज में उचित स्थान प्राप्त होगा। नये प्राप्त ज्ञान और शिक्षा से आप संपन्नता प्राप्त करेंगे। यदि आपकी कुण्डली में बुध कमजोर भी है, तो भी इस अन्तर्दशा के दौरान आपको बहुत परेशानी नहीं होगी।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में बुध की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, व्यापार, प्रतिष्ठा, धन–संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– दुर्गा की पूजा करें एवं छोटी कन्याओं की सेवा करें।
2– विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें।
3– बकरी का दान करें।

बुध प्रत्यंतर्दशा (05:10:2022 से 18:12:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आप अपनी अधिकतर चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे। धन का सहज

आगमन होगा। आप भूमि, सम्पत्ति और आभूषण खरीदेंगे। आपको जीवनसाथी और संतान को सुख प्राप्त होगा। व्यापार में सम्पन्नता आएगी। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी। यदि अब तक कोई सम्पत्ति विवाद अनसुलझा है, तो इस दशा के दौरान उसका निर्णय आपके पक्ष में हो जायेगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (18:12:2022 से 17:01:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आप बुखार, पीलिया और चर्म रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी संतानें शैक्षिणिक और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में अपनी दक्षता प्रदर्शित करेंगी। आपको पदोन्नति मिल सकती है। हालाँकि, शत्रु आपसे ईर्ष्या करेंगे और आपके लिए परेशानियां पैदा करने की कोशिश करेंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (17:01:2023 से 13:04:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपना अधिकतर समय धार्मिक कार्यों में लगायेंगे। आप सरकारी अधिकारियों की मदद से अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करेंगे। आपको कृषि उत्पादों से लाभ हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (13:04:2023 से 09:05:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप सरकार की मदद से धन अर्जित करेंगे। यदि सूर्य पर मंगल की दृष्टि है, तो आपको भूमि, भोजन और वस्त्र प्राप्त होंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (09:05:2023 से 21:06:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि चंद्रमा केन्द्र या त्रिकोण या अपने भाव या उच्चस्थ भाव में स्थित है, तो आप एक राजा की तरह अति उत्तम परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे। यदि चंद्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि है, तो आपका विवाह हो सकता है, आपको एक पुत्र और नये वस्त्रों तथा आभूषणों की प्राप्ति हो सकती है। आप अपने घर का निर्माण कर सकते हैं। आप शास्त्रों का अध्ययन करेंगे और अपने देश के दक्षिणी स्थानों की यात्रा करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (21:06:2023 से 21:07:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको मवेशियों और कृषि योग्य भूमि की प्राप्ति होगी। आपको अपनी खोई हुई स्थिति पुनः प्राप्त होगी। संबंधी आपसे स्नेह करेंगे और आपको धन का लाभ होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (21:07:2023 से 07:10:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको धन का लाभ होगा। आप धार्मिक स्थानों की यात्रा और धार्मिक कार्यों का निर्वहन करेंगे, आपको सरकार से समर्थन प्राप्त होगा। आपको इस दशा के आरम्भ में कुछ समस्यायें हो सकती हैं, जो बाद में समाप्त हो जायेंगी और आपको लाभ प्राप्त होंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (07:10:2023 से 15:12:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आप धन संग्रह करेंगे, भूमि खरीदेंगे और घर पर शुभ समारोहों का आयोजन करेंगे। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। अपने वर्तमान व्यापार का विस्तार करने के लिए यह एक अति उत्तम दशा है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (15:12:2023 से 06:03:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में प्राप्त लाभों से आप इस दशा के दौरान और फायदा उठायेंगे। आपकी सारी गतिविधियों का आगे और विस्तार होगा और आपके धन कोष में बढ़ोत्तरी होगी। इस समय आप अपनी आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ बना सकते हैं। आय में वृद्धि को देखकर आपमें अधिक से अधिक आनन्द प्राप्त करने की प्रवृत्ति आयेगी। लेकिन आपने जो इस और पिछली दशा के दौरान अर्जित किया है, उसे आपको बचाकर रखना चाहिए– जैसाकि आगे आपको अति अशुभ दशा का सामना करना पड़ सकता है।

केतु अर्न्तदशा (06:03:2024 से 05:10:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। आप मानसिक तनाव से गुजर सकते हैं। आपके प्रियजनों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। प्रतिकूल परिस्थितियों और वातावरण के साथ आपमें दूसरों को धोखा देने की प्रवृत्ति हो सकती है। पानी और जलीय चीजों से आपको खतरा हो सकता है। अतः आपको पानी से संबंधित गतिविधियों जैसे तैराकी, नदी, सागर या तालाब में स्नान आदि से दूर रहना चाहिए। द्रव रसायनों से संबंधित किसी व्यापार में आपको संलग्न नहीं होना चाहिए। हालांकि, आपको इसमें लाभ हो सकता है, लेकिन विस्फोट होने या जहर फैलने का इसमें खतरा हो सकता है।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में केतु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पिता, रोग, कार्य (नौकरी या व्यवसाय) आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– केतु के बीज मंत्र का 21 दिनों में सतरह हजार जप करें।

2– सर्वसम्पत्प्रदायक मृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।

3– गणपति के 108 नामों का जप करें।

केतु प्रत्यंतर्दशा (06:03:2024 से 18:03:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको जीवनसाथी और संतान से खुशियां प्राप्त होगी। आप भूमि खरीदेंगे। आपकी कुण्डली में केतु नीचस्थ है या लग्न से आठवें या बारहवें भाव में है। आपको हृदय रोग, बदनामी, धन हानि और जीवनसाथी एवं संतान के कारण निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपकी वस्तुएं चोरी हो सकती हैं या सरकार द्वारा अधिग्रहीत की जा सकती हैं। आप अपना समय धार्मिक कार्यों में लगायेंगे।

आपकी मंत्र जाप और भगवान शिव की आराधना में रूचि होगी। आप अपने निवास स्थान से दक्षिण की दिशा में यात्रा करेंगे। आपके नाना को खतरा हो सकता है। आप बुखार, नेत्र विकार, लिवर की शिकायतों, खांसी, सर्दी और आंतों में दर्द से पीड़ित हो सकते हैं। आपका विवाह हो सकता है। आपको दवाओं और ज्योतिषशास्त्र से आय प्राप्त होगी।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (18:03:2024 से 23:04:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका भाग्य उत्तम होगा। आपको खोई हुई सम्पत्ति प्राप्त होगी। आपको वाहन सुख प्राप्त होगा और आप पवित्र स्थानों की यात्रा करेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (23:04:2024 से 03:05:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपमें भगवान शिव के प्रति आस्था विकसित होगी। राजनीति में आपको सफलता मिलेगी। सरकार से आपको समर्थन प्राप्त होगा। आप तीर्थयात्रा पर जायेंगे। पिता के साथ आपका झगड़ा हो सकता है। आपको जलीय उत्पादों से आय प्राप्त होगी। आप उदर और आंत के रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपकी माता को लकवा हो सकता है। आप ईर्ष्यालु लोगों की संगति कर सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (03:05:2024 से 21:05:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप बेहतर पारिवारिक जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप जलीय उत्पादों से आय प्राप्त करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (21:05:2024 से 03:06:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप परिवहन से आय प्राप्त करेंगे। आपकी माता और जीवनसाथी को विभिन्न रोग हो सकते हैं। आपकी रूचि रोजगार या व्यापार में परिवर्तन करने में हो सकती है। आपको मानसिक हताशा हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (03:06:2024 से 05:07:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। भवन निर्माण, सीमेंट, संगमरमर और अन्य पत्थर की चीजों के व्यापार के लिए यह अति उत्तम दशा है। यदि आप पहले से इस क्षेत्र में व्यापार कर रहे हैं, तो आपको भारी लाभ होगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (05:07:2024 से 02:08:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने गुरु को अप्रसन्न कर सकते हैं, जिससे आपको उनके शाप का भाजन बनना पड़ सकता है। अध्यापन के द्वारा आप अतिरिक्त आय प्राप्त करेंगे। आपको सर्दी, खांसी, दमा, हार्निया की शिकायत हो सकती है। आपके दार्शनिक और धार्मिक ज्ञान में बढ़ोत्तरी होगी। यद्यपि आपकी संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, लेकिन उनके शैक्षिणिक कामों में विशिष्टता आपको खुशी प्रदान करेगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (02:08:2024 से 05:09:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक विरोधपूर्ण दशा होगी। नौकर आपके लिए एक समस्या बन सकते हैं। आपके घर में चोरी हो सकती है। संबंधी समस्यायें पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। मित्र शत्रु बन सकते हैं। आपको व्यवसाय से अवसरीय लाभ मिलेंगे। आप सिरदर्द, जोड़ों में दर्द, पेचिश और भारी हताशा का सामना कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (05:09:2024 से 05:10:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पूर्ण रूप से संशयग्रस्त और विभ्रमित दिमाग के कारण आप अशांत हो सकते हैं। आपको एक दास की तरह जीवन यापन करना पड़ सकता है। आप मिर्गी और पागलपन का शिकार हो सकते हैं। आप जुए में रत रह सकते हैं और धन गवाँ सकते हैं। आपको अपनी भूमि और अन्य सम्पत्ति बेचने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपके प्रायः सभी से विवाद और बहस हो सकती है। आपको ग्रहों के क्रोध को शांत करने के लिए भगवान शिव और देवी पार्वती की आराधना करनी चाहिए।

शुक्र अन्तर्दशा (05:10:2024 से 06:06:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। आप नावों या जहाजों से यात्रायें करेंगे और सोना, पानी, रत्नों, महिलाओं और कृषि से संबंधित सामानों के व्यापार में संलग्न रहेंगे। आप महिलाओं के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने में गहरी रूचि लेंगे। संतान, मित्र और मवेशी प्राप्त करने के लिए यह अनुकूल दशा है। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र बहुत बली नहीं है, तो भी विषम परिणाम नहीं मिलेंगे।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, सरकारी कार्य, मित्र, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– शुक्रवार को एक गड्ढा खोदकर दो सौ ग्राम दही रखकर सफेद कपड़ा से ढक कर राख डालें।
2– दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3– चाँदी की दुर्गा–मूर्ति दान करें।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (05:10:2024 से 15:01:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको प्रचुर धन प्राप्त होगा, लेकिन वह खर्च हो जायेगा और आप कर्जदार हो सकते हैं। आपके विवाहेत्तर संबंध हो सकते हैं और उसमें आप धन बर्बाद कर सकते हैं। आपमें ईश्वर के प्रति तीव्र आस्था होगी। आपको पीलिया और नाखूनों में समस्यायें हो सकती है। आपको किसी जानवर के काटने का भय है। यदि आप दवा के व्यापारी या एक कलाकार हैं, तो आपको लाभ प्राप्त होंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (15:01:2025 से 14:02:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के पहले अर्धभाग में आपको अति उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आपको धन, भूमि और सम्पत्ति का अप्रत्याशित लाभ प्राप्त होगा। दशा के दूसरे अर्धभाग में आप उदर विकार, गले, नाक, आँख के रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। धोखा धड़ी के द्वारा आपको धन हानि हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (14:02:2025 से 06:04:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपकी आय व्यय से अधिक होगी। आपको महिलाओं से मदद मिलेगी। आपका विवाह तय हो जायेगा। वैवाहिक समारोहों में कुछ समस्यायें आ सकती हैं। अतः आपको विवाह स्थगित कर देना चाहिए। यदि आप विवाहित हैं, तो आपको एक पुत्री प्राप्त हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (06:04:2025 से 11:05:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप दवाओं, सोने, तांबे और आभूषणों का व्यापार करेंगे। हालाँकि, बेहतर परिणाम के लिए आपको अगली प्रत्यंतर्दशा तक प्रतीक्षा करनी होगी। आपको भूमि प्राप्त हो सकती है या आप उसको बेच कर उत्तम मात्रा में लाभ कमा सकते हैं। जिन स्त्रियों के साथ आपको अतिरिक्त लगाव होगा, उनके साथ आपको कुछ गलतफहमी हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (11:05:2025 से 11:08:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपनी खोई हुई सम्पत्ति वापस पाने का अवसर मिलेगा। आपकी संतानों की पढ़ाई में सफलता आपको प्रसन्नता प्रदान करेगी। अब तक अनसुलझे सम्पत्ति विवाद इस दशा के दौरान सुलझ जायेंगे। आपके शरीर में चोट लग सकती है, आग से आपको भय हो सकता है। चोर भी आपको नुकसान पहुंचा सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:08:2025 से 31:10:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपका विवाह हो सकता है या आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको भूमि और संपत्ति की प्राप्ति होगी। आप अन्य भौतिक सम्पत्तियों में निवेश करेंगे। सरकार से आपको सम्मान मिलेगा। आप विभिन्न प्रकार के धार्मिक कार्य करेंगे। आप तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं और सन्तों का आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (31:10:2025 से 04:02:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में रहेंगे। उनकी मदद से आप बहुत अधिक धन कमाने में सक्षम होंगे। हालाँकि, आप धन की प्राप्ति के लिए सभी दूसरे दर्जे के तरीके अपनायेंगे, जैसे घूस देना आदि। दशा के मध्य में आप अपने सभी कामों में सफल होंगे। दशा के अन्त में आपको भारी नुकसान और विभिन्न रोग हो सके हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (04:02:2026 से 01:05:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आप सौन्दर्य प्रसाधनों, पेड़ों, फलों, जानवरों और परिवहन से आय प्राप्त कर सकते हैं। आपके शत्रु परास्त होंगे। भूमि के विक्रय से आपको धन प्राप्त होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (01:05:2026 से 06:06:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक सामान्य दशा होगी। आपकी दैनिक गतिविधियों में प्रायः बदलाव होंगे। सुबह में आपको लगेगा कि समय आपके अनुकूल हो रहा है, और आप कई योजनायें बनायेंगे, लेकिन शाम होने तक आपके सारे सपने और योजनायें ध्वस्त हो सकती हैं। रोग आपसे आँख मिचौली खेल सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (06:06:2026 से 05:12:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आप सरकारी अधिकारियों से समर्थन प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आप अत्यधिक साहस और वीरता का प्रदर्शन करेंगे। समाज में आपको सम्मान मिलेगा। रोगों से मुक्ति मिलेगी। हालांकि, कभी–कभी आपको पित्त रस और वायु विकार हो सकते हैं। आपको दुर्घटना के कारण चोट लग सकती है। एक तरफ आपको उत्तम मात्रा में धन मिलेगा, लेकिन आप चोरी आदि के कारण उसको खो भी सकते हैं।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, पिता, जन्मस्थान, आँख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– जल में चीनी एवं लाल फूल डालकर सूर्य को अर्घ्य दें।

2– भगवान शिव की पूजा करें।

3– आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (06:06:2026 से 15:06:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अधिकार और शक्ति प्राप्त लोगों से लाभ मिलेगा। हालाँकि, आपको भूमि की हानि हो सकती है और आपके खर्चे बहुत बढ़ सकते हैं। आपका सहोदरों के साथ सम्पत्ति मामलों में विवाद हो सकते हैं। आप निराशा के कारण घर छोड़ सकते हैं। आप बुखार से पीड़ित हो सकते हैं। दशा के अन्त में आपको कुछ हद तक उत्तम परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (15:06:2026 से 30:06:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका विवाह हो सकता है। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी, आप भूमि और भवन खरीदेंगे, ससुराल से आपको विरासत में भूमि मिल सकती है और आपकी पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो सकती है। आप नेत्र या जलीय रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपके सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। यदि आप नौकरी में हैं,

तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि व्यापार कर रहे हैं, तो आपको उसमें भारी लाभ होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (30:06:2026 से 11:07:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। धन और संपत्ति के मामले में यह एक उत्तम दशा होगी। आपके सगे भाई–बहन आपका सहयोग करेंगे। आपको अपने जीवनसाथी और संतान से आराम एवं खुशियां प्राप्त होंगी। आपके पिता के साथ आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आप तीर्थयात्राओं पर जायेंगे।

राहु प्रत्यंतर्दशा (11:07:2026 से 07:08:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशाओं में आपको जो लाभ प्राप्त हुए थे, वे इस दशा में लुप्त हो सकते हैं। आप अनैतिक कार्यों से धन कमा सकते हैं। आपका सरकारी अधिकारियों से विवाद हो सकता है। आपके कई शत्रु पैदा हो सकते हैं, जो आपको किसी भी समय फंसा सकते हैं। आपका विवाह हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (07:08:2026 से 31:08:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी, संतान की प्राप्ति होगी, सरकार और संतानों से आपको धन मिलेगा। आपको कान और फेफड़ों के रोग हो सकते हैं। आप अपने पद को खो सकते हैं। आप ईश्वर की आराधना और धार्मिक कार्य करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (31:08:2026 से 29:09:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आप विभिन्न सौदों में भारी लाभ की आशा कर सकते हैं। आप भूमि और संपत्ति खरीद सकते हैं और विभिन्न तरीकों से आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। आप बाहर घूमने जा सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (29:09:2026 से 25:10:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा अति शुभ और अति अशुभ परिणामों का मिश्रण होगी। यदि प्रथम अर्द्धावस्था बहुत शुभ है, तो बाद की दूसरी अवस्था अशुभ हो सकती है या इसका उलटा हो सकता है। यदि अन्य अनुकूल युतियां भी विद्यमान हैं, तो आप एक राजा या उसके समान बन सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (25:10:2026 से 05:11:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा नहीं हो सकती है। विभिन्न कारणों से आपको भारी दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने पद और धन की हानि हो सकती है। आपमें आत्महत्या करने की प्रवृत्ति आ सकती है। आप विदेश यात्रा पर जा सकते हैं, जहाँ आपको दुखों का सामना करना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (05:11:2026 से 05:12:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। दशा के प्रथम 10 दिनों के दौरान आप वाहन खरीद सकते हैं या वाहनों की मुफ्त में सवारी करेंगे। अगले 10 दिनों के दौरान आप अपने परिवार के साथ आनन्द प्राप्त करेंगे, आपके पास अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन होगा। आखिरी 10 दिनों के दौरान आपको दुर्भाग्य का सामना करना पड़ सकता है। आप परिश्रम से अर्जित किया हुआ धन, नाम और सम्मान गवाँ सकते हैं। आपको गले के रोग, लकवा और शरीर में दर्द की शिकायत हो सकती है।

गोचर शनि (शनि साढेसाती) का फल और उपाय

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।

सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

(सामान्यतः यह माना जाता है, कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवं आर्थिक संकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिन्तित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना सा डर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय– साढ़े सात साल– ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहन का क्रय, कर्ज से मुक्ति, उंचे तबके के लोगों से संपर्क और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी आदि भी प्राप्त होते हैं।)

शनि साढेसाती के प्रथम चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –मीन

Start -29:03:2025

End -03:06:2027

Duration -2 y.2 m.5 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -20:10:2027

End -23:02:2028

Duration -0 y.4 m.4 d.

शनि की साढ़ेसाती के पहले चरण में आपके धन, रोग एवं भाग्य भाव पर शनि की दृष्टि होगी। इस दौरान आपको मिला–जुला फल प्राप्त होगा, जिसमें शुभ फल अधिक एवं अशुभ फल कम होंगे। आपको अपने रोजगार या व्यवसाय से आय में कमी होगी एवं बेकार या फालतू के खर्चों में वृद्धि होगी। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आर्थिक कमी के कारण व्यापार में रूकावट के साथ–साथ हानि भी हो सकती है। आप काफी चिन्तित रह सकते हैं और बुरी आदतों या व्यसनों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको इस

समय हर तरह के व्यसनों से दूर रहना चाहिए, अन्यथा इनकी तरफ एक बार कदम आगे बढ़ाने के बाद आप इनके शिकार हो सकते हैं और आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, खासकर आपके पैरों में। इसके साथ ही आपको अजीर्ण, गैस, अपच, मानसिक कष्ट एवं दस्त आदि जैसे रोग भी हो सकते हैं। आपको नींद ना आने की बीमारी, रक्तविकार, फेफड़े के रोग एवं चर्मरोग भी हो सकते हैं।

आपके स्वभाव में आलस एवं जिद्दीपन हो सकता है। अपने व्यवसाय में हानि के कारण आपमें क्रोध, अविश्वास, झुंझलाहट एवं कटुता में वृद्धि होगी। आप अपने व्यवसाय से संबंधित लम्बी यात्राएं कर सकते हैं। यात्राओं के दौरान कष्ट एवं हानि की भी संभावना है। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं, तो अपने वरिष्ठ अधिकारियों के विरोध का सामना कर सकते हैं तथा उनका कोपभाजन बन सकते हैं। आपकी पदोन्नति में रूकावट आ सकती है। अतः अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उत्तम संबंध बनाकर रखें। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य करते हैं, तो अपने साझेदारों पर नजर रखें एवं आंख बंद कर किसी पर विश्वास ना करें। सुखद पहलू यह है, कि इन सबके बावजूद आपको कहीं अचानक आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

इस चरण के दौरान आपके परिवार के अन्य सदस्यों– माता–पिता, नाना–नानी एवं मामा पक्ष को भी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अनजाने में आपसे कुछ ऐसा कार्य हो सकता है, जिससे आपको हर समय पुलिस का भय सता सकता है। बेरोजगारी की स्थिति में आप आजीविका के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं एवं वहां उत्पन्न नए समस्याओं के कारण वह स्थान भी जल्द छोड़ने का निश्चय कर सकते हैं। इस दौरान आप कुछ ऐसे लोगों के सम्पर्क में आ सकते हैं, जो गैरकानूनी कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको उनसे दूर रहना चाहिए, अन्यथा आप गहरी समस्या में फँस सकते हैं।

इस चरण की समाप्ति से कुछ समय पहले आपको सम्मान प्राप्त हो सकता है। धीरे–धीरे आपको लाभ प्राप्त होगा एवं अधिकारी वर्ग भी आपके पक्ष में हो जाएंगे। आप व्यवसाय में हों या नौकरी में आपको लाभ प्राप्त होगा। लेकिन ऐसा बहुत कम समय के लिए होगा। आप पुनः आर्थिक एवं शारीरिक समस्याओं में घिर सकते हैं। आप घर की अपेक्षा बारह रहना अधिक पसंद कर सकते हैं। आप निम्न तबके के लोगों के सम्पर्क में आ सकते हैं।

यदि आपकी कुण्डली में शुक्र शनि के प्रभाव में है, तो आपको इस चरण के दौरान पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपको कई स्रोतों से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आप शांतचित्त एवं एकांतप्रेमी हो सकते हैं। आपका मन भौतिक कार्यों के प्रति अधिक रहेगा। लेकिन यदि आपकी कुण्डली में शनि पापी ग्रहों के प्रभाव में है, तो आप गलत कार्यों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको अपने कार्यों से ही अधिक नुकसान होगा। आप पर कोई आपराधिक मामला भी चल सकता है और उसकी वजह से आप अक्सर कोर्ट या थाने का चक्कर लगा सकते हैं। शुभ ग्रह की दशा के दौरान स्थिति कुछ ठीक रहेगी, लेकिन पापी ग्रह की दशा के दौरान आप अपना संतुलन खो सकते हैं। यदि आप अकेले कोई कार्य आरम्भ करें, तो आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आप गुप्त रूप से कुछ धनार्जन भी कर सकते हैं।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -03:06:2027

End -20:10:2027

Duration -0 y.4 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -23:02:2028

End -08:08:2029

Duration -1 y.5 m.14 d.

शनि साढ़े साती के दूसरे चरण के दौरान शनि का अपनी नीच राशि में होने के कारण आपको अपने पराक्रम, दाम्पत्य एवं कर्म क्षेत्रों से संबंधित घातक या अशुभ प्रभाव प्राप्त हो सकता है। आपका पराक्रम क्षीण हो सकता है और आपके गुप्त शत्रु सक्रिय हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचा सकते हैं। जो लोग कभी आपसे भय खाते थे, वे भी आपको क्षति पहुंचा सकते हैं। आप अपनी ही कुछ गलतियों से काफी हानि उठा सकते हैं। हानि होने के बाद आपको अपने किये का पछतावा भी होगा एवं भविष्य में ऐसी गलती ना करने की शपथ भी लेंगे, लेकिन आप पुनः वही गलती दोहराते रहेंगे एवं लोगों के हंसी के पात्र बनेंगे।

आपका स्वभाव धीरे–धीरे बदल सकता है और आप अपने कार्यों को पूरा करने के लिए झूठ का सहारा ले सकते हैं। आपके इस प्रयास में अच्छे कार्य तो खराब होंगे ही साथ में कुछ ऐसे गलत कार्य हो सकते हैं, जो भविष्य में आपको अधिक हानि पहुंचा सकते हैं। आप शारीरिक रूप से निर्बल, हाथों में कष्ट, फेफड़ों में संक्रमण, खांसी, जुकाम, उदर–विकार एवं यौन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपके दाम्पत्य जीवन में कटुता आ सकती है और अपने जीवनसाथी पर अविश्वास कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से समस्या हो सकती है। आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी छूट सकती है। आप पर विभिन्न प्रकार के दोषारोपण हो सकते हैं।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपको अचानक आर्थिक हानि हो सकती है। आपको अपने सभी प्रयत्नों में विफलता प्राप्त हो सकती है। आपके मन में अपने व्यवसाय के प्रति निराशा हो सकती है। आप इतने निराश हो सकते हैं कि अपना व्यवसाय बंद करने का भी निश्चय कर सकते हैं। व्यापार जगत में आपकी साख खराब हो सकती है और आपके कर्ज में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आर्थिक संकट के इस दौर में आपके मित्रगण भी आपका साथ छोड़ सकते हैं एवं आपके साथ गैरों सा बर्ताव कर सकते हैं। आपके परिवार के लोग भी आप पर विश्वास नहीं करेंगे एवं आपमें ही कमी निकालेंगे। ऐसे में नौकरी या व्यवसाय में आपका मन नहीं लग सकता है। अक्सर कोई शारीरिक कष्ट उभर कर सामने आ सकता है।

आप इतना निराश हो सकते हैं, कि जीवन बोझ लगने लगेगा। आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर हो सकते हैं। आपमें जीवन के प्रति उत्साह में कमी हो सकती है। आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक परेशानियों से जूझते–जूझते आप व्यसन की ओर अग्रसित हो सकते हैं। इस वजह से आप समाज एवं परिवार में अपमानित हो सकते हैं एवं अपना मान–सम्मान खो सकते हैं।

इस चरण के अंतिम समय में स्थिति में कुछ सुधार हो सकते हैं। कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा होने पर अधिक अशुभ नहीं होगा। यदि आपकी आयु 34 से 42 वर्ष के बीच है तथा किसी पापी ग्रह की दशा चल रही है, तो आपको काफी कष्ट हो सकते हैं। आपको भाइयों का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप धर्मादि कार्यों से भी दूर रह सकते हैं। आपकी संगति बुरे लोगों से हो सकती है और आप गलत कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको कारावास का भी भय हो सकता है। चरण के अंतिम चार माह में आपको आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको सम्मान भी मिलेगा और जो लोग आपको गलत समझते थे, उनकी सोच में बदलाव होगा।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –वृष

Start -08:08:2029

End -05:10:2029

Duration -0 y.1 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -17:04:2030

End -31:05:2032

Duration -2 y.1 m.14 d.

साढ़े साती के इस चरण में शनि आपके सुख, आयु तथा आय को प्रभावित करेगा। इस दौरान आपको मिला–जुला फल प्राप्त होगा, जिसमें शुभ फल की अधिकता होगी। आपकी आय में बढ़ोत्तरी होगी, लेकिन आप भौतिक वस्तुओं में अधिक खर्च कर सकते हैं। आपको अपने कर्मक्षेत्र में काफी सम्मान मिलेगा। जो लोग आपसे घृणा करते थे, वे भी आपका सम्मान करेंगे। शत्रु आपसे दया की भीख मांग सकते हैं। लेकिन आप अपने शत्रुओं को परास्त करने का निश्चय कर सकते हैं और आप इसमें सफल भी होंगे। धन वृद्धि का आपका हर प्रयास सफल होगा। आप जिस कार्य में भी हाथ डालेंगे, वह सफल होगा। आपका स्वास्थ्य पहले की तुलना में बेहतर होगा, लेकिन धन कमाने के चक्कर में आप मानसिक रूप से अशांत एवं अस्थिर रह सकते हैं। आपको कोई भी वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतनी चाहिए अन्यथा आप गंभीर दुर्घटनाओं का शिकार हो सकते हैं।

इस दौरान आप जो भी कार्य करेंगे उसमें आपको सफलता प्राप्त होगी। आपके मार्ग में आने वाली हर बाधा दूर होती जाएगी। आपका मन अपने व्यवसाय या नौकरी में रमा रहेगा। आपको अपनी मेहनत का पूर्ण फल प्राप्त होगा। इस समय आप कोई वाहन या घर खरीदने का भी निश्चय कर सकते हैं और यदि कोई अशुभ प्रभाव मौजूद नहीं है, तो आप इसमें सफल भी होंगे। आप अपने परिवार वालों के लिए कंजूस हो सकते हैं। आप खुद पर, भौतिक वस्तुओं पर एवं घुमने–फिरने पर काफी खर्च कर सकते हैं, लेकिन परिवार के किसी सदस्य के द्वारा कुछ मांगे जाने पर खफा हो सकते हैं। आपको अपनी आर्थिक स्थिति उत्तम बनाए रखने के लिए अपने खर्चों पर नियंत्रण करना चाहिए।

आपको अपने खान–पान पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आपका स्वास्थ्य पुनः खराब हो सकता है। आपको अपने पैर जमीन पर टिकाकर रखना चाहिए, अन्यथा आपको धोखा मिल सकता है। कुछ समय के लिए आपका बुरा समय पुनः शुरू हो सकता है। आपको आग का भय हो सकता है। किसी नुकीली चीज से या उंचाई से गिरने के कारण आपको चोट भी लग सकती है। आप अपने जीवनसाथी से मानसिक रूप से दूर हो सकते हैं एवं नीचे के तबके के लोगों से संबंध बना सकते हैं। आपका अर्जित धन कोई आपसे ठग सकता है। लेकिन जब आपको अपने मित्रों से हानि मिलेगी एवं समाज में अपमान मिलेगा, तो आप संभल जाएंगे। इस चरण के अंतिम काल में आप काफी उन्नति कर सकते हैं। आप अपने परिवार वालों का भी ध्यान रखेंगे एवं आपको दोस्तों की भी पहचान हो जाएगी।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –कर्क

Start -13:07:2034

End -27:08:2036

Duration -2 y.1 m.15 d.

यदि कंटक शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –वृश्चिक

Start -12:12:2043

End -23:06:2044

Duration -0 y.6 m.11 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -30:08:2044

End -08:12:2046

Duration -2 y.3 m.8 d.

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

शनि साढेसाती के द्वितिय चक्र का विवरण

प्रथम द्वैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –मीन

Start -14:05:2054

End -02:09:2054

Duration -0 y.3 m.19 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -05:02:2055

End -07:04:2057

Duration -2 y.2 m.0 d.

शनि की साढ़ेसाती के पहले चरण में आपके धन, रोग एवं भाग्य भाव पर शनि की दृष्टि होगी। इस दौरान आपको मिला–जुला फल प्राप्त होगा, जिसमें शुभ फल अधिक एवं अशुभ फल कम होंगे। आपको अपने रोजगार या व्यवसाय से आय में कमी होगी एवं बेकार या फालतू के खर्चों में वृद्धि होगी। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आर्थिक कमी के कारण व्यापार में रूकावट के साथ–साथ हानि भी हो सकती है। आप काफी चिन्तित रह सकते हैं और बुरी आदतों या व्यसनों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको इस समय हर तरह के व्यसनों से दूर रहना चाहिए, अन्यथा इनकी तरफ एक बार कदम आगे बढ़ाने के बाद आप इनके शिकार हो सकते हैं और आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, खासकर आपके पैरों में। इसके साथ ही आपको अजीर्ण, गैस, अपच, मानसिक कष्ट एवं दस्त आदि जैसे रोग भी हो सकते हैं। आपको नींद ना आने की बीमारी, रक्तविकार, फेफड़े के रोग एवं चर्मरोग भी हो सकते हैं।

आपके स्वभाव में आलस एवं जिद्दीपन हो सकता है। अपने व्यवसाय में हानि के कारण आपमें क्रोध, अविश्वास, झुंझलाहट एवं कटुता में वृद्धि होगी। आप अपने व्यवसाय से संबंधित लम्बी यात्राएं कर सकते हैं। यात्राओं के दौरान कष्ट एवं हानि की भी संभावना है। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं, तो अपने वरिष्ठ अधिकारियों के विरोध का सामना कर सकते हैं तथा उनका कोपभाजन बन सकते हैं। आपकी पदोन्नति में रूकावट आ सकती है। अतः अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उत्तम संबंध बनाकर रखें। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य करते हैं, तो अपने साझेदारों पर नजर रखें एवं आंख बंद कर किसी पर विश्वास ना करें। सुखद पहलू यह है, कि इन सबके बावजूद आपको कहीं अचानक आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

इस चरण के दौरान आपके परिवार के अन्य सदस्यों– माता–पिता, नाना–नानी एवं मामा पक्ष को भी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अनजाने में आपसे कुछ ऐसा कार्य हो सकता है, जिससे आपको हर समय पुलिस का भय सता सकता है। बेरोजगारी की स्थिति में आप आजीविका के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं एवं वहां उत्पन्न नए समस्याओं के कारण वह स्थान भी जल्द छोड़ने का निश्चय कर सकते हैं। इस दौरान आप कुछ ऐसे लोगों के सम्पर्क में आ सकते हैं, जो गैरकानूनी कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको उनसे दूर रहना चाहिए, अन्यथा आप गहरी समस्या में फँस सकते हैं।

इस चरण की समाप्ति से कुछ समय पहले आपको सम्मान प्राप्त हो सकता है। धीरे–धीरे आपको लाभ प्राप्त होगा एवं अधिकारी वर्ग भी आपके पक्ष में हो जाएंगे। आप व्यवसाय में हों या नौकरी में आपको लाभ प्राप्त होगा। लेकिन ऐसा बहुत कम समय के लिए होगा। आप पुनः आर्थिक एवं शारीरिक समस्याओं में घिर सकते हैं। आप घर की अपेक्षा बारह रहना अधिक पसंद कर सकते हैं। आप निम्न तबके के लोगों के सम्पर्क में आ सकते हैं।

यदि आपकी कुण्डली में शुक्र शनि के प्रभाव में है, तो आपको इस चरण के दौरान पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपको कई स्रोतों से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आप शांतचित्त एवं एकांतप्रेमी हो सकते हैं। आपका मन भौतिक कार्यों के प्रति अधिक रहेगा। लेकिन यदि आपकी कुण्डली में शनि पापी ग्रहों के प्रभाव में है, तो आप गलत कार्यों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको अपने कार्यों से ही अधिक नुकसान होगा। आप पर कोई आपराधिक मामला भी चल सकता है और उसकी वजह से आप अक्सर कोर्ट या थाने का चकक्र लगा सकते हैं। शुभ ग्रह की दशा के दौरान स्थिति कुछ ठीक रहेगी, लेकिन पापी ग्रह की दशा के दौरान आप अपना संतुलन खो सकते हैं। यदि आप अकेले कोई कार्य आरम्भ करें, तो आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आप गुप्त रूप से कुछ धनार्जन भी कर सकते हैं।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -07:04:2057

End -28:05:2059

Duration -2 y.1 m.20 d.

शनि साढ़े साती के दूसरे चरण के दौरान शनि का अपनी नीच राशि में होने के कारण आपको अपने पराक्रम, दाम्पत्य एवं कर्म क्षेत्रों से संबंधित घातक या अशुभ प्रभाव प्राप्त हो सकता है। आपका पराक्रम क्षीण हो सकता है और आपके गुप्त शत्रु सक्रिय हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचा सकते हैं। जो लोग कभी आपसे भय खाते थे, वे भी आपको क्षति पहुंचा सकते हैं। आप अपनी ही कुछ गलतियों से काफी हानि उठा सकते हैं। हानि होने के बाद आपको अपने किये का पछतावा भी होगा एवं भविष्य में ऐसी गलती ना करने की शपथ भी लेंगे, लेकिन आप पुनः वही गलती दोहराते रहेंगे एवं लोगों के हंसी के पात्र बनेंगे।

आपका स्वभाव धीरे–धीरे बदल सकता है और आप अपने कार्यों को पूरा करने के लिए झूठ का सहारा ले

सकते हैं। आपके इस प्रयास में अच्छे कार्य तो खराब होंगे ही साथ में कुछ ऐसे गलत कार्य हो सकते हैं, जो भविष्य में आपको अधिक हानि पहुंचा सकते हैं। आप शारीरिक रूप से निर्बल, हाथों में कष्ट, फेफड़ों में संक्रमण, खांसी, जुकाम, उदर–विकार एवं यौन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपके दाम्पत्य जीवन में कटुता आ सकती है और अपने जीवनसाथी पर अविश्वास कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से समस्या हो सकती है। आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी छूट सकती है। आप पर विभिन्न प्रकार के दोषारोपण हो सकते हैं।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपको अचानक आर्थिक हानि हो सकती है। आपको अपने सभी प्रयत्नों में विफलता प्राप्त हो सकती है। आपके मन में अपने व्यवसाय के प्रति निराशा हो सकती है। आप इतने निराश हो सकते हैं कि अपना व्यवसाय बंद करने का भी निश्चय कर सकते हैं। व्यापार जगत में आपकी साख खराब हो सकती है और आपके कर्ज में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आर्थिक संकट के इस दौर में आपके मित्रगण भी आपका साथ छोड़ सकते हैं एवं आपके साथ गैरों सा बर्ताव कर सकते हैं। आपके परिवार के लोग भी आप पर विश्वास नहीं करेंगे एवं आपमें ही कमी निकालेंगे। ऐसे में नौकरी या व्यवसाय में आपका मन नहीं लग सकता है। अक्सर कोई शारीरिक कष्ट उभर कर सामने आ सकता है।

आप इतना निराश हो सकते हैं, कि जीवन बोझ लगने लगेगा। आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर हो सकते हैं। आपमें जीवन के प्रति उत्साह में कमी हो सकती है। आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक परेशानियों से जूझते–जूझते आप व्यसन की ओर अग्रसित हो सकते हैं। इस वजह से आप समाज एवं परिवार में अपमानित हो सकते हैं एवं अपना मान–सम्मान खो सकते हैं।

इस चरण के अंतिम समय में स्थिति में कुछ सुधार हो सकते हैं। कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा होने पर अधिक अशुभ नहीं होगा। यदि आपकी आयु 34 से 42 वर्ष के बीच है तथा किसी पापी ग्रह की दशा चल रही है, तो आपको काफी कष्ट हो सकते हैं। आपको भाइयों का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप धर्मादि कार्यों से भी दूर रह सकते हैं। आपकी संगति बुरे लोगों से हो सकती है और आप गलत कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको कारावास का भी भय हो सकता है। चरण के अंतिम चार माह में आपको आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको सम्मान भी मिलेगा और जो लोग आपको गलत समझते थे, उनकी सोच में बदलाव होगा।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –वृष

Start -28:05:2059

End -11:07:2061

Duration -2 y.1 m.13 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -13:02:2062

End -07:03:2062

Duration -0 y.0 m.22 d.

साढ़े साती के इस चरण में शनि आपके सुख, आयु तथा आय को प्रभावित करेगा। इस दौरान आपको मिला–जुला फल प्राप्त होगा, जिसमें शुभ फल की अधिकता होगी। आपकी आय में बढ़ोत्तरी होगी, लेकिन आप भौतिक वस्तुओं में अधिक खर्च कर सकते हैं। आपको अपने कर्मक्षेत्र में काफी सम्मान मिलेगा। जो

लोग आपसे घृणा करते थे, वे भी आपका सम्मान करेंगे। शत्रु आपसे दया की भीख मांग सकते हैं। लेकिन आप अपने शत्रुओं को परास्त करने का निश्चय कर सकते हैं और आप इसमें सफल भी होंगे। धन वृद्धि का आपका हर प्रयास सफल होगा। आप जिस कार्य में भी हाथ डालेंगे, वह सफल होगा। आपका स्वास्थ्य पहले की तुलना में बेहतर होगा, लेकिन धन कमाने के चक्कर में आप मानसिक रूप से अशांत एवं अस्थिर रह सकते हैं। आपको कोई भी वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतनी चाहिए अन्यथा आप गंभीर दुर्घटनाओं का शिकार हो सकते हैं।

इस दौरान आप जो भी कार्य करेंगे उसमें आपको सफलता प्राप्त होगी। आपके मार्ग में आने वाली हर बाधा दूर होती जाएगी। आपका मन अपने व्यवसाय या नौकरी में रमा रहेगा। आपको अपनी मेहनत का पूर्ण फल प्राप्त होगा। इस समय आप कोई वाहन या घर खरीदने का भी निश्चय कर सकते हैं और यदि कोई अशुभ प्रभाव मौजूद नहीं है, तो आप इसमें सफल भी होंगे। आप अपने परिवार वालों के लिए कंजूस हो सकते हैं। आप खुद पर, भौतिक वस्तुओं पर एवं घुमने–फिरने पर काफी खर्च कर सकते हैं, लेकिन परिवार के किसी सदस्य के द्वारा कुछ मांगे जाने पर खफा हो सकते हैं। आपको अपनी आर्थिक स्थिति उत्तम बनाए रखने के लिए अपने खर्चों पर नियंत्रण करना चाहिए।

आपको अपने खान–पान पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आपका स्वास्थ्य पुनः खराब हो सकता है। आपको अपने पैर जमीन पर टिकाकर रखना चाहिए, अन्यथा आपको धोखा मिल सकता है। कुछ समय के लिए आपका बुरा समय पुनः शुरू हो सकता है। आपको आग का भय हो सकता है। किसी नुकीली चीज से या उंचाई से गिरने के कारण आपको चोट भी लग सकती है। आप अपने जीवनसाथी से मानसिक रूप से दूर हो सकते हैं एवं नीचे के तबके के लोगों से संबंध बना सकते हैं। आपका अर्जित धन कोई आपसे ठग सकता है। लेकिन जब आपको अपने मित्रों से हानि मिलेगी एवं समाज में अपमान मिलेगा, तो आप संभल जाएंगे। इस चरण के अंतिम काल में आप काफी उन्नति कर सकते हैं। आप अपने परिवार वालों का भी ध्यान रखेंगे एवं आपको दोस्तों की भी पहचान हो जाएगी।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –कर्क

Start -24:08:2063

End -06:02:2064

Duration -0 y.5 m.14 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -09:05:2064

End -13:10:2065

Duration -1 y.5 m.4 d.

यदि कंटक शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –वृश्चिक

Start -05:02:2073

End -31:03:2073

Duration -0 y.1 m.23 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -23:10:2073

End -16:01:2076

Duration -2 y.2 m.24 d.

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

शनि साढेसाती के तृतिय चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –मीन

Start -20:03:2084

End -21:05:2086

Duration -2 y.2 m.0 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -10:11:2086

End -08:02:2087

Duration -0 y.2 m.29 d.

शनि की साढ़ेसाती के पहले चरण में आपके धन, रोग एवं भाग्य भाव पर शनि की दृष्टि होगी। इस दौरान आपको मिला–जुला फल प्राप्त होगा, जिसमें शुभ फल अधिक एवं अशुभ फल कम होंगे। आपको अपने रोजगार या व्यवसाय से आय में कमी होगी एवं बेकार या फालतू के खर्चों में वृद्धि होगी। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आर्थिक कमी के कारण व्यापार में रूकावट के साथ–साथ हानि भी हो सकती है। आप काफी चिन्तित रह सकते हैं और बुरी आदतों या व्यसनों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको इस समय हर तरह के व्यसनों से दूर रहना चाहिए, अन्यथा इनकी तरफ एक बार कदम आगे बढ़ाने के बाद आप इनके शिकार हो सकते हैं और आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, खासकर आपके पैरों में। इसके साथ ही आपको अजीर्ण, गैस, अपच, मानसिक कष्ट एवं दस्त आदि जैसे रोग भी हो सकते हैं। आपको नींद ना आने की बीमारी, रक्तविकार, फेफड़े के रोग एवं चर्मरोग भी हो सकते हैं।

आपके स्वभाव में आलस एवं जिद्दीपन हो सकता है। अपने व्यवसाय में हानि के कारण आपमें क्रोध, अविश्वास, झुंझलाहट एवं कटुता में वृद्धि होगी। आप अपने व्यवसाय से संबंधित लम्बी यात्राएं कर सकते हैं। यात्राओं के दौरान कष्ट एवं हानि की भी संभावना है। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं, तो अपने वरिष्ठ

अधिकारियों के विरोध का सामना कर सकते हैं तथा उनका कोपभाजन बन सकते हैं। आपकी पदोन्नति में रूकावट आ सकती है। अतः अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उत्तम संबंध बनाकर रखें। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य करते हैं, तो अपने साझेदारों पर नजर रखें एवं आंख बंद कर किसी पर विश्वास ना करें। सुखद पहलू यह है, कि इन सबके बावजूद आपको कहीं अचानक आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

इस चरण के दौरान आपके परिवार के अन्य सदस्यों– माता–पिता, नाना–नानी एवं मामा पक्ष को भी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अनजाने में आपसे कुछ ऐसा कार्य हो सकता है, जिससे आपको हर समय पुलिस का भय सता सकता है। बेरोजगारी की स्थिति में आप आजीविका के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं एवं वहां उत्पन्न नए समस्याओं के कारण वह स्थान भी जल्द छोड़ने का निश्चय कर सकते हैं। इस दौरान आप कुछ ऐसे लोगों के सम्पर्क में आ सकते हैं, जो गैरकानूनी कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको उनसे दूर रहना चाहिए, अन्यथा आप गहरी समस्या में फँस सकते हैं।

इस चरण की समाप्ति से कुछ समय पहले आपको सम्मान प्राप्त हो सकता है। धीरे–धीरे आपको लाभ प्राप्त होगा एवं अधिकारी वर्ग भी आपके पक्ष में हो जाएंगे। आप व्यवसाय में हों या नौकरी में आपको लाभ प्राप्त होगा। लेकिन ऐसा बहुत कम समय के लिए होगा। आप पुनः आर्थिक एवं शारीरिक समस्याओं में घिर सकते हैं। आप घर की अपेक्षा बारह रहना अधिक पसंद कर सकते हैं। आप निम्न तबके के लोगों के सम्पर्क में आ सकते हैं।

यदि आपकी कुण्डली में शुक्र शनि के प्रभाव में है, तो आपको इस चरण के दौरान पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपको कई स्रोतों से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आप शांतचित्त एवं एकांतप्रेमी हो सकते हैं। आपका मन भौतिक कार्यों के प्रति अधिक रहेगा। लेकिन यदि आपकी कुण्डली में शनि पापी ग्रहों के प्रभाव में है, तो आप गलत कार्यों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको अपने कार्यों से ही अधिक नुकसान होगा। आप पर कोई आपराधिक मामला भी चल सकता है और उसकी वजह से आप अक्सर कोर्ट या थाने का चक्कर लगा सकते हैं। शुभ ग्रह की दशा के दौरान स्थिति कुछ ठीक रहेगी, लेकिन पापी ग्रह की दशा के दौरान आप अपना संतुलन खो सकते हैं। यदि आप अकेले कोई कार्य आरम्भ करें, तो आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आप गुप्त रूप से कुछ धनार्जन भी कर सकते हैं।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -21:05:2086

End -10:11:2086

Duration -0 y.5 m.21 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -08:02:2087

End -18:07:2088

Duration -1 y.5 m.8 d.

शनि साढ़े साती के दूसरे चरण के दौरान शनि का अपनी नीच राशि में होने के कारण आपको अपने पराक्रम, दाम्पत्य एवं कर्म क्षेत्रों से संबंधित घातक या अशुभ प्रभाव प्राप्त हो सकता है। आपका पराक्रम क्षीण हो सकता है और आपके गुप्त शत्रु सक्रिय हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचा सकते हैं। जो लोग कभी आपसे भय खाते थे, वे भी आपको क्षति पहुंचा सकते हैं। आप अपनी ही कुछ गलतियों से काफी हानि उठा

सकते हैं। हानि होने के बाद आपको अपने किये का पछतावा भी होगा एवं भविष्य में ऐसी गलती ना करने की शपथ भी लेंगे, लेकिन आप पुनः वही गलती दोहराते रहेंगे एवं लोगों के हंसी के पात्र बनेंगे।

आपका स्वभाव धीरे–धीरे बदल सकता है और आप अपने कार्यों को पूरा करने के लिए झूठ का सहारा ले सकते हैं। आपके इस प्रयास में अच्छे कार्य तो खराब होंगे ही साथ में कुछ ऐसे गलत कार्य हो सकते हैं, जो भविष्य में आपको अधिक हानि पहुंचा सकते हैं। आप शारीरिक रूप से निर्बल, हाथों में कष्ट, फेफड़ों में संक्रमण, खांसी, जुकाम, उदर–विकार एवं यौन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपके दाम्पत्य जीवन में कटुता आ सकती है और अपने जीवनसाथी पर अविश्वास कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से समस्या हो सकती है। आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी छूट सकती है। आप पर विभिन्न प्रकार के दोषारोपण हो सकते हैं।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपको अचानक आर्थिक हानि हो सकती है। आपको अपने सभी प्रयत्नों में विफलता प्राप्त हो सकती है। आपके मन में अपने व्यवसाय के प्रति निराशा हो सकती है। आप इतने निराश हो सकते हैं कि अपना व्यवसाय बंद करने का भी निश्चय कर सकते हैं। व्यापार जगत में आपकी साख खराब हो सकती है और आपके कर्ज में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आर्थिक संकट के इस दौर में आपके मित्रगण भी आपका साथ छोड़ सकते हैं एवं आपके साथ गैरों सा बर्ताव कर सकते हैं। आपके परिवार के लोग भी आप पर विश्वास नहीं करेंगे एवं आपमें ही कमी निकालेंगे। ऐसे में नौकरी या व्यवसाय में आपका मन नहीं लग सकता है। अक्सर कोई शारीरिक कष्ट उभर कर सामने आ सकता है।

आप इतना निराश हो सकते हैं, कि जीवन बोझ लगने लगेगा। आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर हो सकते हैं। आपमें जीवन के प्रति उत्साह में कमी हो सकती है। आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक परेशानियों से जूझते–जूझते आप व्यसन की ओर अग्रसित हो सकते हैं। इस वजह से आप समाज एवं परिवार में अपमानित हो सकते हैं एवं अपना मान–सम्मान खो सकते हैं।

इस चरण के अंतिम समय में स्थिति में कुछ सुधार हो सकते हैं। कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा होने पर अधिक अशुभ नहीं होगा। यदि आपकी आयु 34 से 42 वर्ष के बीच है तथा किसी पापी ग्रह की दशा चल रही है, तो आपको काफी कष्ट हो सकते हैं। आपको भाइयों का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप धर्मादि कार्यों से भी दूर रह सकते हैं। आपकी संगति बुरे लोगों से हो सकती है और आप गलत कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको कारावास का भी भय हो सकता है। चरण के अंतिम चार माह में आपको आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको सम्मान भी मिलेगा और जो लोग आपको गलत समझते थे, उनकी सोच में बदलाव होगा।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –वृष

Start -18:07:2088

End -31:10:2088

Duration -0 y.3 m.13 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -05:04:2089

End -19:09:2090

Duration -1 y.5 m.15 d.

साढ़े साती के इस चरण में शनि आपके सुख, आयु तथा आय को प्रभावित करेगा। इस दौरान आपको मिला–जुला फल प्राप्त होगा, जिसमें शुभ फल की अधिकता होगी। आपकी आय में बढ़ोत्तरी होगी, लेकिन आप भौतिक वस्तुओं में अधिक खर्च कर सकते हैं। आपको अपने कर्मक्षेत्र में काफी सम्मान मिलेगा। जो लोग आपसे घृणा करते थे, वे भी आपका सम्मान करेंगे। शत्रु आपसे दया की भीख मांग सकते हैं। लेकिन आप अपने शत्रुओं को परास्त करने का निश्चय कर सकते हैं और आप इसमें सफल भी होंगे। धन वृद्धि का आपका हर प्रयास सफल होगा। आप जिस कार्य में भी हाथ डालेंगे, वह सफल होगा। आपका स्वास्थ्य पहले की तुलना में बेहतर होगा, लेकिन धन कमाने के चक्कर में आप मानसिक रूप से अशांत एवं अस्थिर रह सकते हैं। आपको कोई भी वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतनी चाहिए अन्यथा आप गंभीर दुर्घटनाओं का शिकार हो सकते हैं।

इस दौरान आप जो भी कार्य करेंगे उसमें आपको सफलता प्राप्त होगी। आपके मार्ग में आने वाली हर बाधा दूर होती जाएगी। आपका मन अपने व्यवसाय या नौकरी में रमा रहेगा। आपको अपनी मेहनत का पूर्ण फल प्राप्त होगा। इस समय आप कोई वाहन या घर खरीदने का भी निश्चय कर सकते हैं और यदि कोई अशुभ प्रभाव मौजूद नहीं है, तो आप इसमें सफल भी होंगे। आप अपने परिवार वालों के लिए कंजूस हो सकते हैं। आप खुद पर, भौतिक वस्तुओं पर एवं घुमने–फिरने पर काफी खर्च कर सकते हैं, लेकिन परिवार के किसी सदस्य के द्वारा कुछ मांगे जाने पर खफा हो सकते हैं। आपको अपनी आर्थिक स्थिति उत्तम बनाए रखने के लिए अपने खर्चों पर नियंत्रण करना चाहिए।

आपको अपने खान–पान पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आपका स्वास्थ्य पुनः खराब हो सकता है। आपको अपने पैर जमीन पर टिकाकर रखना चाहिए, अन्यथा आपको धोखा मिल सकता है। कुछ समय के लिए आपका बुरा समय पुनः शुरू हो सकता है। आपको आग का भय हो सकता है। किसी नुकीली चीज से या उंचाई से गिरने के कारण आपको चोट भी लग सकती है। आप अपने जीवनसाथी से मानसिक रूप से दूर हो सकते हैं एवं नीचे के तबके के लोगों से संबंध बना सकते हैं। आपका अर्जित धन कोई आपसे ठग सकता है। लेकिन जब आपको अपने मित्रों से हानि मिलेगी एवं समाज में अपमान मिलेगा, तो आप संभल जाएंगे। इस चरण के अंतिम काल में आप काफी उन्नति कर सकते हैं। आप अपने परिवार वालों का भी ध्यान रखेंगे एवं आपको दोस्तों की भी पहचान हो जाएगी।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –कर्क

Start -02:07:2093

End -18:08:2095

Duration -2 y.1 m.16 d.

यदि कंटक शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –वृश्चिक

Start -03:12:2102

End -29:11:2105

Duration -2 y.11 m.26 d.

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो आपको शनि साढ़ेसाती के उपाय करना लाभदायक होगा।

शनि साढेसाती एवं ढ़ैय्या के उपाय

शनि की साढ़ेसाती या ढैया के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए नीचे लिखे उपायों को करें–

1– महामृंत्युंजय मंत्र का सवा लाख जाप (रोज 10 माल, 125 दिन) करें। –

ऊँ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

2– शनि के निम्नदत्त मंत्र का 21 दिन में 23 हजार जाप करें–

ऊँ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः। ऊँ शं शनैश्चराय नमः।।

3– पौराणिक शनि मंत्र–

ऊँ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

स्तोत्र –

नीचे लिखे शनि स्तोत्र का 11 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।
तानि शनि–नामामि जपेदश्वत्थसन्निधौ।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचिद् भविष्यति।।

साढ़ेसाती पीड़ानाशक स्तोत्र– पिप्पलाद के अनुसार–

नमस्ते कोणसंस्थय पिंड्गलाय नमोस्तुते।
नमस्ते बभ्रु रूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव के तली की कील का छल्ला बनाकर मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

शनि वार का व्रत रखना चाहिए एवं शनि देव की पूजा करनी चाहिए। शनिवार व्रतकथा पढ़ने से भी लाभ प्राप्त होता है। व्रत के दौरान दिन में फलाहार करें, एवं सायंकाल हनुमान जी या भौरव जी का दर्शन करना चाहिए। रात्रि में काले उड़द की खिचड़ी (काला नमक मिला सकते हैं) या उड़द की दाल का मीठा हलवा ग्रहण कर सकते हैं।

शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए उड़द, तेल, नीलम, तिल, भैंस, लोहा एवं काला कपड़ा दान करना चाहिए।

औषधि –

हर शनिवार को सुरमा, काले तिल, सौंफ और नागरमोथा मिले हुए जल से स्नान करना चाहिए।

मेष राशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती एवं ढैया के सामान्य उपाय–

1– साढ़े साती के आरम्भ में ही काले घोड़े की नाल का छल्ला धारण करें।

2– प्रातः उठते ही सबसे पहले द्वादश ज्योर्तिलिंग (मल्लिकार्जुन, नागेश्वर, काशी विश्वनाथ, महाकालेश्वर, त्रयम्बकेश्वर, घुश्मेश्वर, ओंकारेश्वर, ममलेश्वर, भीमाशंकर, केदारनाथ, बैद्यनाथेश्वर, सोमनाथेश्वर) का पाठ करें। तत्पश्चात शनि देव के दस नाम (शनि, सौरि, पंगु, यम, कृष्णयम, असित, अर्किमन्द, छायसुनु, रविज, छायात्मज) का पाठ करें।

3– नियमित रूप से हनुमान जी की उपासना के साथ शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ करें एवं एक माला ‘‘ओम् हं हनुमंते रूद्रात्मकाये हूं फट्’’ का जाप करें।

4– शनिदेव का व्रत रखें। शाम को काली उड़द की खिचड़ी से व्रत खोलें तथा शनिदेव के नाम पर छायादान करें।

5– प्रथम चरण में केले के वृक्ष में गुरूवार को सामान्य जल एवं शुद्ध घी का दीपक अर्पित करें। गाय को भोग में दो आटे के पेड़े, गुड़ एवं गीली चने की दाल दें।

6– रात्रि में सूरमा लगायें। भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग करें।

7– साढ़े साती के नेष्टफल की शांति के लिए शनि के बीज मंत्र या वैदिक मंत्र का 23,000 बार विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरांत दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करें। इसके अलावा, शुभ बेला में नीलम रत्न एवं शनि यंत्र धारण करना भी फायदेमंद होगा। लेकिन, रत्न धारण करने से पहले किसी दैवज्ञ या आचार्य या किसी व्यवसायिक ज्योतिषी से सलाह अवश्य लें।

शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या के विशेष उपाय

यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ है, तो भैरोंजी एवं शनिदेव की पूजा-अर्चना कर शनि को और बल देकर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि शनि अशुभ या दूषित है, तो शनि के उपाय कर अशुभ फल को खत्म एवं लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि आपकी कुण्डली में साढ़ेसाती चल रही है या आप शनिकृत कष्ट भोग रहें हैं, तो नीचे लिखे उपायों को करने से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

1- शनि का छाया दान करें एवं नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।

2- शनिवार को काली गाय की सेवा करें। तिलक-बिन्दी कर उसके सींग पर कलावा बांध कर बूंदी के आठ लड्डू खिलायें एवं चरण स्पर्श करें।

3- काले कुत्ते को नियमित रूप से मीठी रोटी खिलायें।

4-यदि आपकी कुण्डली में शनि लग्न में बैठा है, तो जमीन में सुरमा गाड़ें।

5- शनिवार का व्रत रखें तथा पीपल की सेवा करें एवं मीठा जल अर्पित करें।

6- मद्यपान ना करें।

7- शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के वृक्ष पर हनुमान जी का स्मरण कर तिल के तेल के दीपक में सिंदूर डालकर लाल पुष्प अर्पित करें।

8- भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग अवश्य करें।

9- शनिवार को काले घोड़े के पैर की मिट्टी काले कपड़े में बांधकर ताबीज के रूप में धारण करें।

10- शनिवार को आप एक माप की आठ बोतलें लें, और हर बोतल में एक ही माप का सरसों तेल भरें। प्रत्येक में आठ साबुत उड़द के दाने एवं एक कील डालें। फिर आठों बोतलों को अपने उपर से आठ बार उसार कर बहते जल में प्रवाहित करें। यह क्रिया लगातार आठ शनिवार करें।

11- नियमित रूप से शनि चालीसा एवं उनके 108 नामों का उच्चारण करें।

12- प्रातः उठते ही बासी मुख से शनिदेव के दस नामों का उच्चारण तथा द्वाद्वशज्योतिर्लिंग के नामों का उच्चारण करें।

13- प्रत्येक शनिवार को काले कुत्ते को रोटी पर सरसों का तेल चुपड़ कर गुड़ रख कर खिलायें एवं बंन्दरों को चने खिलायें।

14– शुक्रवार को लोहे के बर्तन में आठ किलो चने भिगों दें। शनिवार को काले कपड़े में सारे चने रखें। साथ में 800 ग्राम काली उड़द और इतने ही काले तिल के साथ इतने ही जौ एवं एक लोहे की पत्ती रखें। इसकी पोटली बनाकर ऐसे स्थान पर डालें जहां मछलियां हों। यह क्रिया लगातार आठ माह करें। शुरू में आठ माह करें, इसके बाद वर्ष में सिर्फ एक बार पर्याप्त होगा।

15– अंधेरा होने के बाद आटा मिश्रित उड़द का दीपक बनाकर उसमें दो बत्ती जो जलने पर एक ही लौ दे, सरसों के तेल में जलायें। एक दीपक पीपल एवं एक दीपक वट वृक्ष पर अर्पित करें। साथ ही गुग्गुल की धूप एवं चंदन की अगरबत्ती भी अर्पित करें। यह उपाय पहले शनिवार से शुरू करें।

16– प्रथम शनिवार को आठ मीटर काले कपड़े में 800 ग्राम की मात्रा में काली उड़द, चावल, गुड़, काली सरसों, काले तिल, जौ, आठ बड़ी कीलें तथा एक–एक सुरमा एवं इत्र की शीशी को कपड़े में बांधकर पोटली का रूप दे दें। अलग से 10 छिलके वाले बादाम लेकर किसी भी हनुमान मंदिर में जायें और पोटली एवं बादाम मंदिर में हीं कहीं रख दें। फिर स्टील की कटोरी में सिंदूर को चमेली के तेल से गीला कर प्रसाद एवं पीले फूलों के साथ प्रभु को अर्पित करें। बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें, और सात बार परिक्रमा करें। तत्पश्चात पोटली मंदिर में ही छोड़ दें। दस बादाम में से आधे बादाम भी मंदिर में ही छोड़ दें और बाकी के बादाम लाकर किसी नये लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें। कष्टमुक्ति के साथ लाभ प्राप्त होगा।

17– आठ शनिवार लगातार किसी ब्राह्मण को उड़द की दाल की खिचड़ी खिलायें। दान में काले कपड़े में उड़द की दाल की ही खिचड़ी बांधकर आठ सिक्के के रूप में दक्षिणा दें।

18– पहले शनिवार को अपने से 19गुना अधिक काला धागा लेकर उसे एक माला का रूप दें, जो गले में पहनी जा सके। किसी भी शनि मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप दिखायें। फिर उस माला को गले में धारण करें। तुरंत लाभ मिलेगा।

19– शनिवार को घर में पूजास्थल में बैठकर यह क्रिया करें। इस क्रिया में आठ उड़द मिश्रित दीपक बनाकर उसमें सरसों का तेल भरें। दीपक में दो बत्तियां बनाकर उन्हें एक साथ जलायें, ताकि जलने पर एक ही लौ दे। दीपक में थोड़ा सा सिन्दूर के साथ काले घोड़े की नाल का छल्ला एवं एक कील डालें। काले हकीक की माला से किसी भी शनि मंत्र का 11 माला जाप करें और प्रणाम कर उठ जायें। अगले दिन छल्ला निकालकर दायें हाथ की मध्यमा में धारण करें और दीपक किसी पीपल पर अर्पित कर दें।

20– प्रत्येक शनिवार को आप चोकर सहित तीन मोटी रोटियां अपने ही हाथ से बनायें। एक रोटी के एक ओर सरसों एवं दूसरी ओर शुद्ध घी लगायें। अन्य दो रोटियों में से एक पर घी और एक पर सरसों का तेल चुपड़कर उस पर गुड़ रखें। दोनों ओर चुपड़ी रोटी काली गाय को, सरसों के तेल वाली रोटी कुत्ते को एवं घी चुपड़ी रोटी किसी गरीब मजदूर को दे दें।

21– शमी वृक्ष या बिछुआ की जड़ को शनिपुष्य या शनिवार के श्रवण नक्षत्र में लाकर काले कपड़े में बांध कर अपनी दायीं भुजा पर बांधें। तुरन्त लाभ होगा।

22– किसी भी पहले शनिवार को आप आठ मीटर काला कपड़ा, एक जटा नारियल, काले तिल, काली उड़द, गुड़, जौ, काली सरसों, काला नमक प्रत्येक सामग्री 800 ग्राम, हवन सामग्री, आठ बड़ी टोपीदार कील, इतने ही सिक्के तथा बोतल में 800 ग्राम सरसों एवं चमेली का तेल, दो शीशी काजल तथा दो शीशी काले सुरमे लेकर कपड़े की पोटली बना दें। अपने सिर से सात बार उसार कर किसी डाकौत को दान कर दें। यह उपाय लगातार आठ माह करें। फिर वर्ष में दो बार कर सकते हैं।

23– मांस–मदिरा से दूर रहें।

24– किसी के सामने अपनी समस्याओं या कष्टों के बारे में बात ना करें।

25– घर के मुख्य द्वार की देहरी पर चाँदी का पत्तर दबायें।

26– काले वस्त्र धारण करें।

27– घर के किसी अंधेरे भाग में किसी लोहे के पात्र में सरसों का तेल भरकर उसमें ताँबे के सिक्के डालकर रखें।

28– शनिदेव की कोई भी वस्तु बिना पैसे दिये किसी से भी ना लें।

29– काले घोड़े की नाल लाकर घर के मुख्य द्वार के नीचे दबायें।

30– शनिवार को काले घोड़े की पूंछ के आठ बाल लेकर उन्हें किसी लकड़ी की डिब्बी में रखकर 43 दिन तक अपने शयनकक्ष में रखें। अंतिम दिन बाल को जलाकर उसकी राख को सरसों के तेल में मिलाकर बहते जल में प्रवाहित कर दें।

31– शुक्रवार को 800 ग्राम काले तिल पानी में भिगों दें। अगले दिन उन्हें पीस कर गुड़ के साथ मिलाकर लड्डू बनायें और काले घोड़े को खिलायें। यह उपाय आठ शनिवार करें।

32– साढ़ेसाती के दौरान अपनी पैतृक संपत्ति ना बेचें। अधिक कष्ट में पड़ सकते हैं।

33– रात्रि के समय सिर्फ शनि का दान करें, किसी को शनि की वस्तु ना दें।

34– नियमित रूप से महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें, कष्टों में कमी आयेगी।

35– शनिवार को श्री भैरों मंदिर में शराब अर्पित करें, कष्टों में कमी आयेगी।

36– किसी शनिवार को वीराने स्थान में आठ शीशी सुरमें दबायें।

37– शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करें।

38– प्रत्येक शनिवार को किसी सिद्ध हनुमान मंदिर में नारियल अर्पित करें।

39– अपने शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की कील ठुकवायें।

40– अपने घर के दक्षिण एवं पश्चिम में कोई पत्थर की शिला रखें।

ज्योतिषीय उपचार

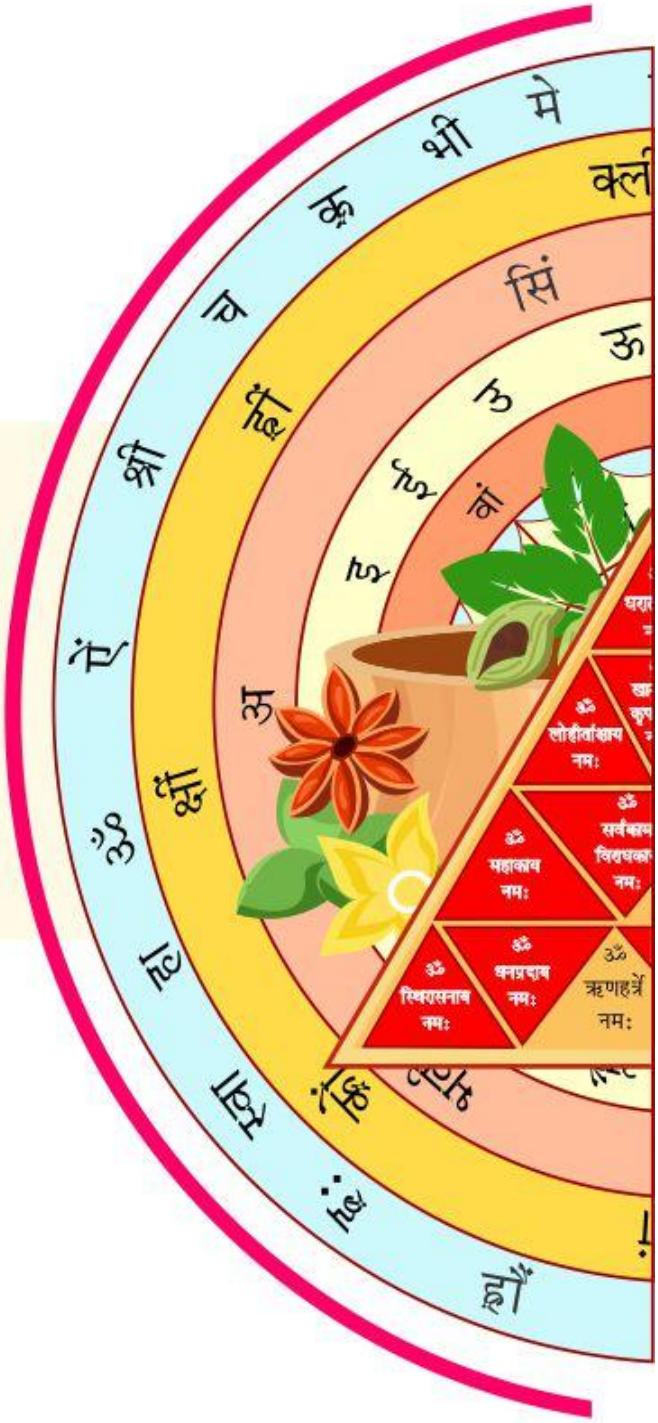

Name - sample

Date - 11/11/2011 Time - 11:11:00

POB - khatu (rajasthan) INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

Acko Astro

www.ackoastro.com, ackoastro@gmail.com

Contact = +91 8657171000

© Mindsutra's StarLight Premium 11

क्या है कालसर्प योग ?

जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव–

1– किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।
2– मानसिक तनाव।
3– आत्मविश्वास में कमी।
4– स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां।
5– गरीबी और धन की कमी।
6– व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी।
7– उत्तेजना और बेकार की चिंताएं।
8– मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव।
9– मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात।
10– मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।

मांगलिक दोष (कुज दोष)

मांगलिक दोष (कुज दोष) निर्धारण के नियम

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
मन्गलिक दोषवान्नारी पुंसां स्त्रीविनाशिनी।।

यदि कुण्डली में मंगल लग्न से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल चंद्रमा से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल शुक्र से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष (कुज दोष)

आपकी कुण्डली में, मंगल लग्न से आठवीं राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल सिंह राशि में स्थित है, जहां मंगल कोई दोष उत्पन्न नहीं करता है। यह एक अपवाद है, जहां पर कुज दोष को जांचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। आप मांगलिक दोष से मुक्त हैं– आप मंगली नहीं हैं।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का प्रभाव

मंगल दोष के प्रभाव से विवाह में देरी हो सकती है या विवाह होने में कई बाधाओं का सामना

करना पड़ सकता है। विवाह होने के बाद वर या वधू या दोनों को शारीरिक, मानसिक या आर्थिक रूप से कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके प्रभाव से आपसी मतभेद/विवाद हो सकते हैं, एक–दूसरे पर दोषारोपण कर सकती हैं तथा तलाक की भी नौबत आ सकती है। दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति में से किसी की या दोनों की सेहत अक्सर खराब रह सकती है या अकाल मृत्यु के भी शिकार हो सकते हैं।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का उपाय

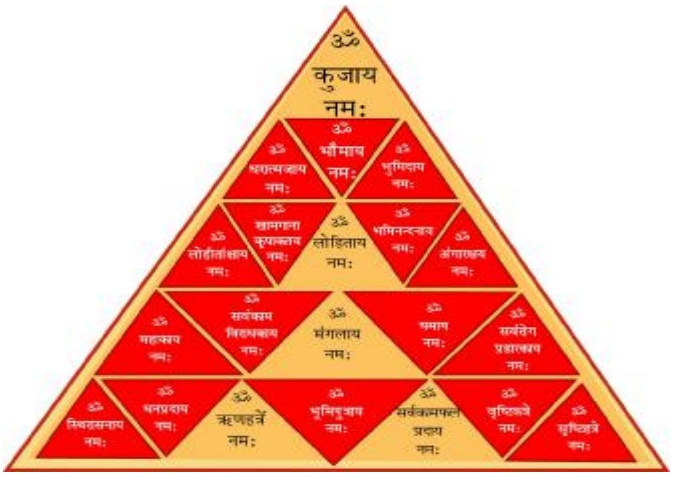

मंगल दोष को दूर करने के लिए वैदिक ज्योतिष से निम्न उपाय करें :–

मंगलवार (सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक) को उपवास करें। दिन के दौरान नमक का सेवन ना करें और यदि संभव हो, तो केवल तरल पदार्थों जैसे, चाय, कॉफी, दूध फलों का रस एवं दही आदि का ही सेवन करें। शाम के समय रोली से किसी थाली में एक त्रिकोण बनायें एवं पंचोपचार (लाल चंदन, लाल फल, धूप, दीपक एवं भोज्य पदार्थ) से पूजा करें। उसके बाद सूर्यास्त से पहले गेहूं के आटे की रोटी, घी एवं गुड़ का सेवन करें।

मंगल दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में लगातार 108 दिनों तक रोज 21 बार मंगल चंडिका स्त्रोत का पाठ करें। सुबह में पूर्वाभिमुख बैठकर पंचमुखी दीपक जलायें एवं अपने इष्ट देव तथा मंगल की पंचोपचार से पूजा करें और निम्नलिखित मंत्र का जाप करें।

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके । हारिके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके ।।
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके । शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके ।।
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले । सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये ।।

केमुद्रुम योग

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)

दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवमि्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्।।

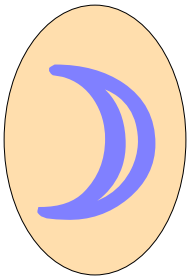

क्या है केमुद्रुम योग ?

आपकी कुण्डली में केमुद्रम योग प्रभावी नहीं है। आपको इस योग से संबंधित कोई उपाय की आवश्यकता नहीं है।

उपाय क्या करें ?

(1) रुद्राष्टक का निरन्तर जप करें।

(2) सुबह केसर और दूध का सेवन करें।

(3) पंचामृत से भगवान शिव का अभिषेक करें।

(4) चांद की रौशनी में सफेद वस्त्र पहन कर गायत्री मंत्र का जाप करें।

(5) रात को सोते समय सफेद चंदन का लेप करें।

(6) अपनी मां से और सभी मां जैसी व्यक्ति से आर्शीवाद लेते रहे।

(7) विधवा औरतो की यथासंभव सहायता करते रहे।

(8) गरीब लोगों को दूध का दान करें।

सूर्य ग्रह का उपाय

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य ग्रह को ग्रहों का राजा माना जाता है। जीवन में मान–सम्मान, नौकरी और समृद्धिशाली जीवन जीने के लिए सूर्य देव की कृपा जरूरी होती है और उनका आशीर्वाद पाने के लिए सूर्य ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ सूर्याय नमः

Every morning, one should offer water to the Sun and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

Om hraam hreem hroum sah suryaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ घृणिः सूर्याय नमः

Om Ghrinih Suryaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ भास्कराय विद्‌महे महातेजाय धीमहि ।
तन्नोः सूर्यः प्रचोदयात ।।

Om Bhaskaraya Vidmahe Mahatejaya Dhimahi,
Tanno Suryah Prachodayat.

व्रत और उपवास

सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सूर्य के गोचर, महादशा या अंतर्दशा के दौरान रविवार का व्रत (उपवास) रखना चाहिए। व्रत (उपवास) की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले रविवार से करना चाहिए। यह व्रत (उपवास) कम से कम 12 और अधिकतम 30 रविवार को रखना चाहिए। व्रत (उपवास) के दौरान खाने में गेहूँ के आटे की चपाती, गुड़, हलवा, घी का उपयोग करना चाहिए। नमक का प्रयोग बिल्कुल ना करें। खाना सूर्यास्त से पहले खाना चाहिए। यदि आप लाल कपड़ा पहन कर एवं अपने ललाट पर लाल चंदन का लेप लगाकर सूर्य के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 5 माला (540) जप करें तो व्रत (उपवास) का फल अधिक लाभदायक होगा। अंत में हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, धन एवं भोजन का दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

सूर्य के लिए बेल की जड़ या बेंत की जड़ गुलाबी रंग के कपड़े में सिलकर रविवार या कृतिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सूर्योदय के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

आप रविवार के दिन सुबह में गेहूँ, साबुत मसूर, गुड़, तांबे की कोई वस्तु एवं लाल फूल का दान करें। आप अपने स्नान के जल में केसर या इलायची पीसकर या इसका इत्र डालें।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– खस, मधु, नागरमोथा, अमलतास, छोटी इलायची।
जड़ी– बेल मूल एवं कमल बेंत की जड़।

चन्द्रमा ग्रह का उपाय

कुंडली में चंद्र दोष होने से कलह, मानसिक विकार, माता-पिता की बीमारी, दुर्बलता, धन की कमी जैसी समस्याएं सामने आती हैं। चंद्रमा मन का कारक ग्रह होता है। कुंडली में चंद्र को मजबूत बनाने के लिए चंद्र ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ सोमाय नमः

This mantra should be chanted every Monday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः

Om shraam shreem shraum sah chandramase namah.

बीज मंत्र 2

ॐ सों सोमाय नमः

Om Som Somaya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ क्षीरपुत्राय विद्‌महे मृतात्वाय धीमहि ।
तन्नोः चंद्रः प्रचोदयात ।।

Om Ksheeraputraya Vidmahe Mritatvaya Dhimahi,
Tannam Chandrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सोमवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 10 और अधिकतम 54 सोमवार को रखनी चाहिए। व्रत तोड़ने से पहले आपको सफेद कपड़े पहनना चाहिए एवं अपने ललाट पर सफेद चंदन का लेप लगाना चाहिए। चंद्रमा को सफेद फूल अर्पित करें और चंद्राम के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करें। अपने खाने में नमक, दही, चावल, घी एवं गुड़ का प्रयोग ना करें। अंतिम सोमवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीबों के बीच खाना वितरित करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

चंद्रमा के लिए खिरनी की जड़ को सफेद रंग के कपड़े में सिलकर सोमवार या रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में पूर्णिमा की रात में गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

चंद्रमा के लिए शुद्ध देशी घी से भरकर नया बर्तन, सफेद वस्त्र, गन्ना, दूध, चावल, चांदी, शंख, कपूर, छोटी इलायची, चीनी, चंदन, कांसे का बर्तन इत्यादि का दान करना चाहिए। नहाते समय नहाने के पानी में थोड़ा सा दूध या दही डालकर नहाने से चंद्रमा प्रसन्न होते हैं।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- लाल चंदन, कपूर, अगर, तगर, केसर, गोरोचन।
जड़ी - खिरनी की जड़।

मंगल ग्रह का उपाय

मंगल साहस और पराक्रम का कारक ग्रह है। कुंडली में मंगल के कमजोर होने पर उसके साहस और ऊर्जा में निरंतर कमी रहती है। मंगल को मजबूत करने के लिए मंगल ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ भौमाय नमः

This mantra is chanted for the planet Mars. It should be chanted on Tuesdays.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

Om kraam kreem kraum sah bhaumaaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ अंगारकाय नमः

Om Om Angarakaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ अंगारकाय विद्‌महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः भौम प्रचोदयात ।।

Om Angarakaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Bhaumah Prachodayat.

व्रत और उपवास

मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 मंगलवार रखनी चाहिए। अगर संभव हो तो आप पूरी जीन्दगी भी इस व्रत को रख सकते हैं। व्रत के दिन केवल गुड़ का हलवा खाना बेहतर होगा। आप अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों के बीच भी हलवा वितरित कर सकते हैं। व्रत तोड़ने से पहले आपको लाल कपड़ा पहनना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का अपने उपलब्ध समयानुसार 1, 5 या 7 माला का जप करना चाहिए। सांड़ को गुड़ खिलाना चाहिए। इस व्रत को रखने से आप ऋणमुक्त होंगे, संतान की प्राप्ति होगी एवं अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। अंतिम मंगलवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं लाल कपड़ा, तांबा, गुड़ एवं नारियल गरीबों के बीच दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

मंगल के लिए अनन्त मूल या नागफनी (गो जिव्हा संगमुसी नाग जिव्हा) की जड़ को लाल रंग के कपड़े में सिलकर मंगलवार या मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र में सूर्योदय के समय गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

लाल फूल, लाल चंदन, घी, गेहूँ, मसूर, या ताम्बे के बर्तन में सुपारी भरकर दान करने से मंगल प्रसन्न होते हैं। मंगल की प्रसन्नता क लिए स्नान करते समय जल में बेलपत्र या लाल चंदन डालकर स्नान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सोंठ, चमेली का तेल, कुमकुम।
जड़ी– सौंफ की जड़, नाग जिव्हा, अनन्त मूल।

बुध ग्रह का उपाय

जीवन में तरक्की और प्रसिद्धि पाने के लिए कुंडली में बुध का मजबूत होना आवश्यक है। बौद्धिक नजरिए से सबसे प्रबल ग्रह होता है। कुंडली में बुध ग्रह को मजबूत करने के लिए बुध ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ बुधाय नमः

This mantra should be chanted every Wednesday. You can chant it in Lord Ganesha's temple.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

Om braam breem braum sah budhaaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ बुं बुधाय नमः

Om Bum Budhaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ सौम्यरुपाय विद्‌महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः बुधः प्रचोदयात ।।

Om Saumyarupaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Budhah Prachodayat.

व्रत और उपवास

बुध के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए बुधवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 बुधवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बुध के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 17 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद मूंग दाल के आटे का हलवा या लड्डू या गुड़ से बनी कोई चीज गरीबों में बांटें और खुद भी खायें। व्रत के अंतिम बुधवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इस व्रत से आप शैक्षणिक क्षेत्र या व्यावसायिक मामलों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन व्रत रखने से बुध ग्रह अनुकूल हो जाता है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बुध के लिए विधारा की जड़ या भारंगी की जड़ (बिदायरे जड़ या वर धारा जड़) को हरे वस्त्र में सिलकर बुधवार या आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में सुबह के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

आपको स्नान के जल में साबुत चावल या सोने का कोई आभूषण डालकर स्नान करना चाहिए। बुध की प्रसन्नता के लिए चांदी या हाथी दांत से बनी कोई वस्तु, नीला कपड़ा, घी या मूंग दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– विधारा मूल, देवदार की जड़, सफेद सरसों।
जड़ी– भारंगी की जड़।

गुरू ग्रह का उपाय

वैवाहिक जीवन से जुड़ी समस्याओं के लिए इस मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में बृहस्पति के शुभ प्रभाव से धन लाभ, सुख-सुविधा, सौभाग्य, लंबी आयु आदि मिलता है। कुंडली में देवगुरु बृहस्पति की मजबूती के लिए जातकों को गुरु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ बृहस्पतये नमः

This mantra should be chanted while sitting in front of a Shivalinga. It should be chanted every Thursday.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः

Om graam greem graum sah gurave namah.

बीज मंत्र 2

ॐ ब्रं बृहस्पतये नमः

Om Bram Brihaspataye

गायत्री मंत्र

ॐ गुरुदेवाय विद्महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः गुरुः प्रचोदयात ।।

Om Gurudevaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Guru Prachodayat.

व्रत और उपवास

बृहस्पति के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए गुरुवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 3 साल तक प्रत्येक गुरुवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बृहस्पति के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करना चाहिए। बृहस्पति को पीले फूल अर्पित करना चाहिए। इस दिन केवल बेसन के लड्डू (गुड़ से बना) या केसरिया या पीला रंग लिए मीठा चावल गरीबों के बीच बांटना चाहिए एवं खुद भी खाना चाहिए। व्रत के अंतिम गुरुवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीब ब्राह्मणों के बीच भोजन (पीला रंग लिए खाना) बांटें। इस व्रत को करने से आप बुद्धिमान, विद्वान एवं धनवान होंगे। अगर कोई अविवाहित कन्या इस व्रत को करे तो जल्द शादी की संभावना होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बृहस्पति के लिए हल्दी की गांठ या केले की जड़ को पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या पुनर्वसु, विशाखा या पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में शाम के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में बड़ी इलायची, पीली सरसों के दाने डालकर स्नान करने से बृहस्पति जनित दोषों का निवारण होता है। बृहस्पति की प्रसन्नता के लिए हल्दी, पीला कपड़ा, पीला अन्न, नमक, मेंहदी या नींबू का दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– हल्दी, सूखा गुलाब।
जड़ी– केले की जड़।

शुक्र ग्रह का उपाय

कुंडली में शुक्र ग्रह के मजबूत होने पर सभी तरह के ऐशो–आराम की सुविधा मिलती है और इसे मजबूत करने के लिए जातकों को शुक्र बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ शुक्राय नमः

This mantra should be chanted every Friday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ द्रां द्रीं द्रौम सः शुक्राय नमः

Om draam dreem draum sah shukraaya namah.

बीज मंत्र 2

ॐ शुं शुक्राय नमः

Om Shum Shukraya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ भृगुसुताय विद्‌महे दिव्यदेहाय धीमहि ।
तन्नोः शुक्रः प्रचोदयात ।।

Om Bhargusutaya Vidmahe Divyadehaya Dhimahi,
Tanno Shukrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

शु क्र के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शुक्रवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शुक्रवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 31 शुक्रवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको सफेद रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शुक्र के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 21 माला का जप करना चाहिए। व्रत के दिन मीठा चावल या दूध से बना पदार्थ खुद खाना चाहिए एवं एक आंख वाले आदमी या सफेद गाय को खिलाना चाहिए। व्रत के अंतिम शुक्रवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इसके बाद चांदी, सफेद कपड़े, खीर आदि गरीबों के बीच दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से शुक्र अनुकूल होगा और आपको आर्थिक लाभ हो सकता है तथा आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल होगा।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए अनार, सरपोंखा या अरण्ड मूल की जड़ को सफेद कपड़े में सिलकर शुक्रवार या भरणी, पूर्व फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में छोटी इलायची, नींबू का रस अथवा इत्र मिलाकर स्नान करने से शुक्र प्रसन्न होते हैं। शुक्र के लिए बासमती चावल, घी, चांदी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, कपूर, धूप और अगरबत्ती, इत्र और रेशमी वस्त्र का यथाशक्ति दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सरपोखों, अनार की जड़, सूखे आंवले।
जड़ी– अरंडे की जड़।

शनि ग्रह का उपाय

ज्योतिष में शनि देव को कर्म फलदाता के नाम से जाना जाता है। यदि कुंडली में शनि ग्रह भारी होता है तो जिंदगी में परेशानियां बनी रहती हैं। इन परेशानियों को दूर करने के लिए शनि बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ शनैश्चराय नमः

Every Saturday, sit in front of Lord Shani and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ प्रां प्रीं प्रोम सः शनै नमः

Om praam preem praum sah shanaishcharaaya

बीज मंत्र 2

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

Om Sham Shanaischaraya

गायत्री मंत्र

ऊँ शिरोरुपाय विद्‌महे मृत्युरुपाय धीमहि ।
तन्नोः सौरिः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Mrityurupaya Dhimahi,
Tanno Saurih Prachodayat.

व्रत और उपवास

शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 19 माला का जप करना चाहिए। उसके बाद साफ पानी, काले तिल का बीज, काला या नीला फूल, लौंग, गंगाजल, चीनी एवं दूध एक बर्तन में लेकर पूर्वाभिमुख होकर पीपल की जड़ में डालें। इस दिन केवल उड़द दाल एव तेल से बनी कोई भोज्य सामग्री खानी चाहिए एवं दान करनी चाहिए। व्रत के अंतिम दिन हवन के साथ पूर्णाहूति करें और तेल से बनी कोई चीज, काला कपड़ा, चमड़े का जूता आदि दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से आपको झगड़े एवं वाद–विवाद में सफलता प्राप्त होगी। फैक्ट्री मालिक एवं लोहे या स्टील का कारोबार करने वालों को काफी सफलता प्राप्त होगी।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शनि के लिए बिछुआ की जड़ नीले कपड़े में सिलकर शनिवार या पुष्य, अनुराधा या उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में धान का छिलका, जड़ सहित दूब अथवा काला तिल डालकर स्नान करने से शनि जनित दोषों का नाश होता है। शनि की प्रसन्नता के लिए बड़ी ईलायची, जायफल, लौंग, काला या नीला कपड़ा, मोटे अनाज, काली तिल, लोहे का सामान, गूगल और साबूत उड़द का अपनी शक्ति अनुसार दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– काला तिल, काला उड़द, बिछुआ की जड़।
जड़ी– धतुरे की जड़।

राहु ग्रह का उपाय

राहु एक छाया ग्रह है। तनाव को कम करने के लिए राहु मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में यदि राहु अशुभ स्थिति में है, तो व्यक्ति को आसानी से सफलता नहीं मिलती है। राहु को मजबूत करने के लिए राहु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ राहवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

Om bhraam bhreem bhraum sah rahave namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ रां राहुवे नमः

Om Ram Rahuve Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ शिरोरुपाय विद्‌महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः राहुः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Rahu Prachodayat.

व्रत और उपवास

राहु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

राहु के लिए मलय चंदन की जड़ की माला बुधवार या शनिवार या आर्द्रा, स्वाति या शतभिषा नक्षत्र में शाम 4 बजे के आस–पास अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा आदि डालकर स्नान करने से राहु जनित दोषों का निवारण होता है। राहु की प्रसन्नता के लिए ऊन का कपड़ा, जटादार पानी वाला नारियल, कम्बल एवं पेठा बांस की टोकरी में धातु का बना सर्प रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– चंदन की लकड़ी।
जड़ी– अष्टगन्ध मूल।

केतु ग्रह का उपाय

केतु एक छाया ग्रह ग्रह है, जिसका अपना कोई वास्तविक रूप नहीं है। यदि कुंडली में केतु की स्थिति कमजोर होती है तो यह जिंदगी को बदतर बना देता है। जीवन में कलह बना रहता है। ऐसे में कलह से बचने के लिए इस केतु बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ केतवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

Om sraam sreem sraum sah ketave namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ के केतवे नमः

Om Ke Ketave Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ गदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः केतुः प्रचोदयात ।।

Om Gadahastaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Ketu Prachodayat.

व्रत और उपवास

केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

केतु के लिए असगन्ध की जड़ को काले या पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा एवं खुशबुदार इत्र आदि डालकर स्नान करें। केतु की प्रसन्नता के लिए रंग–बिरंगे कम्बल, कस्तूरी, बिस्तर, मुँह देखने का शीशा, साबुत उड़द, लाल अनार आदि को बांस की टोकरी में रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सात अनाज (उड़द, मूंग, गेहूँ चना, जौ, चावल, कंगनी)।
जड़ी– वट वृक्ष की जड़।

आपको किस देवता की पूजा करना

लग्न देवता	इष्ट देवता
लग्नेश पर आधारित	पंचमेश पर आधारित
शनि देव	**लक्ष्मी जी**
ऊँ शं शनैश्चराय नमः	**ऊँ लक्ष्मी नमः**

यदि आप लग्न देवता और इष्ट देवता के बीज मंत्रों का जाप करते हैं और उनके संबंधित दिन पर व्रत रखते हैं, तो आपके जीवन की हर समस्या का समाधान स्वतः ही आपके समक्ष आ जाएगा और जीवन में सफलता के द्वार खुलते जाएंगे।

आपको किस ग्रह के मंत्र का जाप करना चाहिए?

लग्नाधिपति	पंचमेश	दशाधिपति	भुक्ति अधिपति
शनि	शुक्र	चन्द्रमा	बुध
ऊँ शं शनैश्चराय नमः	**ऊँ शुं शुक्राय नमः**	**ऊँ सों सोमाय नमः**	**ऊँ बुं बुधाय नमः**

यदि आप लग्नेश के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका स्वास्थ्य सदैव उत्तम रहेगा क्योंकि लग्नेश को स्वास्थ्य का कारक माना जाता है। 5वें घर के अधिपति को इष्ट ग्रह कहा जाता है, यदि आप इष्ट ग्रह के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका बुद्धि और बल बढ़ेगा, अपने बुद्धि और बल के माध्यम से आप अपने सारे कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। जिस ग्रह की महादशा चल रही है, उसके मंत्र से सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। जिस ग्रह की अंतर्दशा चल रही है, उसके मंत्र से वर्तमान समय की घटनाएं सकारात्मक होंगी।

आपको किस ग्रह का दान करना चाहिए?

ग्रह का दान	
	मंगल

लग्नेश शनि से शत्रुता और एकादश भाव का स्वामी होने के कारण मंगल एक शक्तिशाली अशुभ ग्रह बन जाता है।

सप्ताह के उस दिन उस ग्रह से संबंधित दान करें, जैसे मंगलवार को मंगल, शनिवार को शनि और गुरुवार को बृहस्पति। दान की सूची से, आप प्रति सप्ताह 50 रुपये तक कोई भी एक वस्तु दान कर सकते हैं। किसी गरीब या जरूरतमंद व्यक्ति को दान दें।

अशुभ ग्रहों से संबंधित दान करने से हमारे ऊपर पड़ने वाले उनके नकारात्मक प्रभाव समाप्त हो जाते हैं। परिणामस्वरूप अशुभ ग्रह अपनी दशा या अन्तर्दशा में हमें बुरा फल नहीं देते, और यदि हम दान करने के साथ-साथ उन ग्रहों के बीज मंत्रों का जाप भी कर रहे हैं तो उस अशुभ ग्रह के परिणाम भी सकारात्मक ही आएंगे।

यदि आप किसी दिन बीज मंत्र का जाप करना भूल जाते हैं तो आप अगले दिन उसकी पूर्ति कर सकते हैं, उदाहरण के लिए अगले दिन 2 माला जाप करें। यदि अंतर अधिक हो तो एक माला अतिरिक्त जप कर बीज मंत्रों को पूरा करें।

आप किसी भी मंत्र में महारत हासिल कर सकते हैं। इसके बाद आपको सप्ताह के उस दिन संबंधित ग्रह के बीज मंत्र का जाप करना चाहिए, उदाहरण के लिए, यदि आपने बुध के बीज मंत्र में महारत हासिल कर ली है, तो आपको इसमें महारत हासिल करने के बाद हर बुधवार को मंत्र की एक माला का जाप करना चाहिए। इससे इसकी ऊर्जा बनी रहेगी।

Disclaimer

(1) Please note that an astrological prediction is just an opinion of the astrologer on the basis of the Horoscope and has no scientific authenticity. These predictions are based upon the characteristics, placements, aspects, associations, strengths, weaknesses of the planets and the ability, command over the astrology subject and experience and competence of the astrologer in the Indian Vedic Astrology.

(2) Recommendation for astrological remedies such as gemstones, mantras, yantras etc are often prescribed after diligent study of the client's birth chart and with due exercise of his prudence and judgment. It must be clearly understood that every such prescription is accompanied by a prescribed method and procedure, which is expected to be followed by our clients with diligence MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) is not responsible for any claims for negative functioning of any prescription of astrological remedy provided. The remedies you receive shoul not be used as a substitute for advice, programs, or treatment that you would normally receive from a licensed professional, such as lawyer, doctor, psychiatrist, or financial advisor.

(3) The spiritual and material benefits stated with respect to various astrological forecasts, mantras, yantras, pujas, stones or any other spiritual items as well as other products and services are as per the ancient Indian Scriptures and literature. However, as the socio-economic and religious circumstances have changed a lot since then, neither MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) can be held responsible for non functioning or non fructification of the stated result

(4) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) makes no guarantees or representations vis-a-vis the accuracy or consequence of any aspect of the astrological remedy and predictive advice imparted and cannot be held accountable for any interpretation, action, or use that may be made because of information given.

(5) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) ensures complete confidentiality of customer's identity, birth details and the prediction details. MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) further ensures that no use will be made of the information that may come to the knowledge of the management of the site or revealed in th horoscope of the customer. Such information will only be used to communicate to the customer or will be retained in the databank for referencing purpose if you may need to consult in future.

(6) Any type of Legal Claim shall be limited to any amounts you may have paid to MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) shall have no other Liability except to the extent permitted by applicable law. In no event will MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) be liable for any indirect, consequential, incidental, special, multiple, punitive, or similar damages.

(7) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) reserves the right to change, modify, add or delete portions of the Terms of Use at any time. Your continued use following any changes in the terms indicates your acceptance to the changes.